अलवर राज्य का इतिहास

(1775—1857)

लेखक
डॉ० एस० एल० नागोरी
एम० ए० (स्वर्ण पदक विजेता) पी-एच० डी०,
व्याख्याता इतिहास विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
सिरोही (राज०)
निर्देशक
डॉ० बी० एस० मायुर
प्रोफेसर, इतिहास विभाग
उदयपुर विश्वविद्यालय उदयपुर (राज०)

चिन्मय प्रकाशन

समर्पण

तरुण शोध कर्ता विद्वानो के प्रेरणा—स्रोत श्री बी० हूजा [आई० ए० एस०] जिन्होंने लेखक के जीवन निर्माण म बहुमूल्य योगदान दिया। इसलिए वह उनका आजन्म ऋणी रहेगा। उनको सादर समर्पित।

शब्द—संकेत

1 रा० रा० अभि० बीकानेर राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर
2 रा० अभि० नई दिल्ली राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली

प्राक्कथन

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् विश्वविद्यालयो मे भारतीय दृष्टिकोण से इतिहास मे शोध खोज का कार्य निरन्तर किया जा रहा है। स्वतन्त्र रियासतो मे अलवर राज्य के इतिहास का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इस राज्य का 1775 मे 1857 ई० तक का काल देश की तात्कालिक राजनीति मे ऐतिहासिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

मुझे यह लिखते हुए अत्यन्त प्रसन्नता है कि डा० एम० एल० नागोरी ने अलवर राज्य का इतिहास [1775—1857 ई०] नामक शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया है। प्रतिभा सम्पन्न लेखक ने विषय का प्रतिपादन विद्वतापूर्ण ढग से भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली और राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर से प्राप्त अभिलेखागारीय प्रलेखो तथा समकालीन सामग्री के आधार पर किया है। साथ ही मराठी एव पर्शियन सामग्री का भी यथा स्थान प्रयोग कर घटनाओ को आलोचनात्मक बनाने का प्रयास किया है।

आज जबकि हिन्दी भाषा अधिकाधिक क्षेत्रो मे शिक्षा के माध्यम के रूप मे स्वीकार की जा रही है लेकिन स्नातकोत्तर कक्षाओ के लिए हिन्दी भाषा मे बहुत कम पुस्तकें लिखी गई हैं। मेरा यह विश्वास है कि यह पुस्तक स्नातकोत्तर इतिहास के विद्यार्थियो के लिए एव उन जिज्ञासु पाठको के लिए भी लाभदायक सिद्ध होगी जिनकी इतिहास के प्रति गहन रुची है। आशा है कि इस पुस्तक का पाठको एव विद्यार्थियो द्वारा समुचित स्वागत होगा।

राजेश जोशी
(डॉ० आर० पी० जोशी)
अध्यक्ष
इतिहास विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर (राज०)

भूमिका

18 वी शताब्दी के अन्त मे उत्तरी भारत मे राजस्थान में अलवर नामक नवीन राज्य का उदय हुआ। इस राज्य के आलोच्यकाल (1775 1857 ई०) का देश की राजनीति मे महत्वपूर्ण स्थान रहा। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात विश्व विद्यालयो मे भारतीय दृष्टिकोण स इतिहास म शोध खोज का कार्य निरन्तर किया जा रहा है। उसमे तत्कालीन स्वतन्त्र रियासतो के इतिहास का महत्त्वपूर्ण स्थान है। एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात जब मेरे मन मे शोध कार्य करने की लालसा उत्पन्न हुई तब मुझे उदयपुर विश्वविद्यालय मे इतिहास के प्राचार्य डॉ० बी० एस० माथुर ने अलवर राज्य का राजनैतिक इतिहास लिखने की सदप्रेरणा दी। इस विषय पर अब तक कोई प्रामाणिक इतिहास उपलब्ध नही हैं। मैंने प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे राजस्थान राज्य अभिलखागार बीकानेर, एव राष्ट्रीय अभिलेखागार मे नवीनतम उपलब्ध सामग्री का उपयोग कर इसे पूर्णत प्रमाणिक बनाने का भरसक प्रयास किया है। साथ ही मराठी एव परशियन सामग्री का भी यथा स्थान प्रयोग कर घटनाओं को आलोचनात्मक बनाने का प्रयास किया है। इस शोध ग्रन्थ मे मैंने अलवर राज्य के इतिहास के राजनैतिक पक्ष का ही अध्ययन किया है। अन्य पक्ष मेरे अध्ययन की सीमा से बाहर है।

शोध प्रबन्ध के प्रथम अध्याय मे मैंने अलवर राज्य की भौगोलिक स्थिति का सक्षिप्त वर्णन करते हुए प्रारम्भिक इतिहास पर प्रकाश डाला है।

द्वितीय अध्याय म राज्य के सस्थापक राव राजा प्रतापसिह का जन्म, उनकी आरम्भिक उपलब्धियाँ जयपुर की राजनीति मे उनकी स्थित, जयपुर एव भरतपुर के सघर्ष म उनकी भूमिका को दर्शाया गया है।

तृतीय अध्याय मे रावराजा प्रतापसिह का राजनैतिक उदय उनका मुगलो, जयपुर और भरतपुर राजाओ स सम्बन्ध 1774 ई० म मुगल बादशाह शाहआलम द्वारा उन्हे रावराजा की उपाधि प्रदान करना, 25 दिसम्बर 1775 ई० को अलवर राज्य की स्थापना करना तत्पश्चात उनकी आन्तरिक एव बाह्य नीति का उल्लेख किया है।

चतुर्थ अध्याय म प्रतापसिह की अन्तर्राज्यीय राजनीति, उनका मुगल सनापति नजफ खाँ एव जयपुर महाराजा म सघर्ष तथा जयपुर व सीमान्त प्रान्तो पर अधिकार करना, रावराजा का मराठा स सम्बन्ध लालसोट का युद्ध (1787 ई०) एव पाटन युद्ध 1790 ई० मे उनकी भूमिका उनके जीवन काल की अन्तिम वर्षों की प्रमुख

विषय-सूची

1

अलवर राज्य की भौगोलिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

(अ) भौगोलिक स्थिति—

अठारहवीं सदी मे राजस्थान में पश्चिमोतरीय भाग मे सूर्यवंशी कछवाहा क्षत्रियों की नरुका शाखा का अलवर एक राज्य था जो पूर्वोत्तरी हिस्से मे 27 5 अश 5 कला से 28 अश 15 कला उत्तर अक्षाश और 76 10 (अश कला) पश्चिमी देशान्तर से 77 अश 15 कला पूर्वी देशान्तर तक विस्तृत था।[1]

इस राज्य के उत्तर मे पजाब प्रान्त का गुड़गाँव जिला, नाभा, राज्य की बावल और जयपुर राज्य का कोटकासिम परगना था। इस राज्य के पूर्व मे भरतपुर राज्य गुडगाव और दक्षिण मे जयपुर राज्य, पश्चिम में जयपुर राज्य की कोटपुतली रियासत, नाभा व पटियाला से घिरा हुआ था। सम्पूर्ण राज्य की स्थापना के बाद इस राज्य की लम्बाई उत्तर से दक्षिण 80 मील तथा चोडाई पूर्व से पश्चिम 65 मील और इसका क्षेत्रफल 3185 वर्गमील था।[2] जिसमे से 2627 वर्गमील समतल भूमि एव शेष 1/5 भाग पहाडियाँ थीं।

---

1. (अ) राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, क्रमाक 329 बस्ता 46 बण्डल 23 पृष्ठ। 6
   (ब) स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् अलवर राज्य का विलय राजस्थान मे कर दिया गया है।
2. (अ) श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 2 पृष्ठ। 355 मे इसका क्षेत्रफल 3024 वर्गमील बताया है।
   (ब) वैब, राजपूताना के सिक्के के अनुवादक डॉ० मागीलाल व्यास मयक ने पृ० 141 पर अलवर राज्य का क्षेत्रफल 3051 वर्गमील बताया है।
   (स) गहलोत जगदीशसिंह ने जयपुर व अलवर राज्यों का इतिहास पृ० 217 पर अलवर राज्य का क्षेत्रफल 3217 वर्गमील बताया है।
   (द) राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, क्रमाक 132 बस्ता 18 बण्डल 9. पृ० 2 जो कि मूल नक्शे पर आधारित है उसके अनुसार 3185 वर्गमील क्षेत्रफल है जो सही प्रतीत होता है।

भू-भाग :

भौगोलिक दृष्टि से समस्त अलवर राज्य निम्नांकित 7 भागो मे विभक्त था।[1]

(1) नरुका खण्ड (नरवा)—इसी शाखा मे अलवर राजवंश था। नरुका क्षत्रियो के बसने के कारण इस भूमि का नाम नरु खण्ड पडा।[2]

इसका क्षेत्रफल लगभग 755 वर्गमील था।[3]

(2) राजावाटी—अलवर राज्य का दक्षिण पश्चिम भाग राजावाटी कहलाता था। कछवाहा वंश की राजावत शाखा के क्षत्रियों की निवास भूमि होने के कारण यह क्षेत्र राजावाटी कहलाया। इसका क्षेत्रफल लगभग 365 वर्गमील था।[4]

(3) बाला (छोटा पहड़ी क्षेत्र)—यह राज्य की पश्चिमी सीमा से साबी नदी तक के भू-भाग को जो शेखावाटी क्षत्रियो की निवास भूमि था उसको बाला कहते थे। इसका क्षेत्रफल लगभग 226 वर्गमील था।[5]

(4) राठ—चौहान क्षत्रियो से बसी हुई भूमि अर्थात् राज्य का मध्य पहाड़ियो के पूरे पूर्वोत्तर वाली भूमि को राठ प्रदेश कहते थे। इसका क्षेत्रफल लगभग 563 वर्गमील था।[6]

(5) मेवात—इसमे मुख्यतः मेव लोग रहते थे। अलवर नगर इसी क्षेत्र मे स्थित था। मेवात में अलवर राज्य का लगभग 1/3 भाग रुपारेल नदी से लेकर पूर्व मे भरतपुर राज्य की डीग निजामत और उत्तर मे गुड़गाँव जिले के रेवाड़ी परगने की सीमा तक अलवर राज्य मे था।

इसका क्षेत्रफल 1160 वर्गमील था।[7] इस क्षेत्र में कई पहाडी शृंखलाएं हैं।

(6) काठेड़—कठूम्बर परगने का पूर्वी भाग-काठेड़ कहलाता था।[8]

(7) नेहड़ा—थानागाजी के पार्श्व भाग को नेहड़ा कहते थे।[9]

---

1. राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर क्रमांक 329, 180 बस्ता 46, 26 बण्डल 3,1 पृ० 18—19,2।
2. वही, क्रमांक 132 बस्ता 18 बण्डल 9 पृ० 9।
3. गहलोत जगदीशसिंह, जयपुर व अलवर राज्यो का इतिहास पृ 217।
4. राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, क्रमांक 132 बस्ता 18 बण्डल 9 पृष्ठ 9।
5. वही, पृ० 10।
6. वही, पृ० 10।
7. रा० रा० अभि० बीकानेर 0 क्रमाक 132 बस्ता 18 बण्डल 9 पृ० 11।
8. (अ) वही, पृ० 11।
   (ब) काठेड यह कस्बा अलवर से 38 मील दक्षिण पूर्व मे स्थित है।
9. (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 132 बस्ता 18 बण्डल 9 पृ० 12।
   (ब) थानागाजी अलवर से 28 मील दूरी पर अलवर जयपुर रोड पर स्थित है।

प्राकृतिक विभाजन

प्राकृतिक विभाजन की दृष्टि से अलवर राज्य को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है।

(1) पर्वतीय भाग—समस्त राज्य मे उत्तर से दक्षिण तक कई पर्वत श्रेणियाँ हैं। तथा अलवर राज्य के पहाडी स्थान समुद्र तल से 1,00 फीट से लेकर 2550 फीट तक ऊँचे हैं।[1]

(2) पठारी भाग—अलवर राज्य के दक्षिण मे पठारी भाग है जिसका ढाल पूर्व की ओर है। पानी का बहाव पूर्व की ओर होने के कारण वहाँ की भूमि बहुत उपजाऊ है।[2]

(3) रेतीला भाग—अलवर राज्य के पश्चिम मे रेतीला भाग है। रेतीला प्रदश बहरोड बान्सूर तथा मन्डावर के क्षेत्र मे अधिक मात्रा मे पाया जाता है।[3]

नदियाँ तथा नाले—

यहाँ की प्रमुख नदियाँ साबी, रूपारेल और चूहड सिन्ध हैं तथा अजबगढ, प्रतापगढ़, लिडवा आदि छोटे नाले बहते हैं।

बाँध या झीलें—

अलवर राज्य में सीलीसेढ व देवती की झील प्रमुख हैं। सिलीसेढ़ झील अलवर से दक्षिण पश्चिम की ओर 9 मील दूरी पर किशनपुरा के पास स्थित है।[4] इसको सन् 1844 में महाराव राजा बन्नेसिंह ने 8 लाख रुपया खर्च करके बनवाया था। इस झील को किशनपुरा के पास दो पहाडो के बीच 1000 फीट लम्बा और 40 फीट ऊँचा एक सुदृढ बाँध बनवा कर रूपारल नदी की एक सहायक नदी को रोक दिया था। जिससे पानी भरने पर इसकी लम्बाई एक मील और चौडाई 400 गज हो जाती है।[5]

देवती झील अर्थात् रामसागर अलवर की राजगढ तहसील मे राजपुर से 14 मील दूर पश्चिम की ओर पहाडी के बीच स्थित है।[6] यह सीलीसेढ झील के

1. वही, क्रमाक 180 बस्ता 26 बण्डल 1 पृ० 12।
2. वही, क्रमाक 132 बस्ता 18 बण्डल 9 पृ० 14।
3. राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर क्रमाक 132 बस्ता 18 बण्डल 9 पृष्ठ 36।
4. वही, पृ० 36।
5. (अ) वही, क्रमांक 180,132 बस्ता 26,18 बण्डल 1,9 पृ० 16-36।
   (ब) श्यामलदास, वीर विनोद, पृ० 1357।
6. (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 180, बस्ता 26 बण्डल 1, पृ० 17।
   (ब) श्यामलदास, वीर विनोद, पृ० 1357।

कुछ छोटी है। इसलिए बहुधा गर्मी में सूख जाती है। इस झील की पाल देवती के बड़गूजर राजा ईश्वरीसिंह की रानी के पिता बलदेव ने बनवायी थी।[1]

पत्थर व धातु—

अलवर राज्य मे सगमरमर, तांबा, सीसा आदि पदार्थ बहुतायत मात्रा मे पाए जाते हैं।

(1) सगमरमर—राज्य की समस्त पहाडियों में सफेद पत्थर और अभ्रक आदि की घाटियाँ थी। अलवर के पश्चिम मे थानागाजी तहसील में झिरी में सफेद और चिकना सगमरमर का पत्थर निकलता था जो मकराने के पत्थर से कडा और उत्तम होता था।[2]

(2) तांबा—अलवर राज्य की थानागाजी तहसील के दरीबा के पहाड़ी क्षेत्र मे तांबा प्रचुर मात्रा मे पाया जाता था।[3]

(3) सीसा—थानागाजी, तहसील के जोधावास गांव के समीप सीसे की खान थी।

भाषा—

राज्य में पाँच बड़े भू-भाग थे। उनमें प्राय मेवात मे मेवाती, राठ में राठी, गाल और राजावाटी में राजावाटी तथा इसी के अन्तर्गत नहडी भाषा बोली जाती थी। *नरखण्ड मे राजावाटी और मेवाती मिश्रित भाषा बोलते थे। इसके अन्तर्गत* कठेड मे ब्रजभाषा बोली जाती थी। राज्य मे पढे लिखे लागो की भाषा हिन्दी और उर्दू थी।[4]

जनसंख्या—

तत्कालीन जनसख्या के बारे मे कोई प्रामाणिक साधन प्राप्त नही होते। 1961 की जनगणना के अनुसार यहाँ की जनसख्या 10,90,026 थी जिसमे से 513,192 स्त्रियाँ व 5,76,234 पुरुष थे।[5] अलवर राज्य की प्रथम जनगणना

---

1 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 132, बस्ता 18 बण्डल 9, पृ० 38।

2 वही, पृ० 21-22।

3. (अ) वही, पृ० 22।
   (ब) श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 3 पृ० 1358।

4. (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 182,1479 बस्ता 26,187 बण्डल 3,1 पृ० 44-45, 34।
   (ब) मायाराम, राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर अलवर पृ० 22-23।

5. स्टेटिस्टिकल एब्स्ट्रेक्ट, राजस्थान स्पेशल नम्बर 1963 डाइरेक्टरेट ऑफ इकॉनामिक्स एण्ड स्टेटिस्टिकल, राजस्थान जयपुर पृ० 6।

10 अप्रैल 1872 में की गई थी। तब यहाँ की जनसंख्या 77,85,96 थी एवं 260 व्यक्ति प्रति वर्गमील का औसत था।[1]

अलवर राज्य का व्यवसाय—

यहाँ के व्यक्तियों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। यहाँ के 2 प्रतिशत व्यक्ति व्यापार और 10 प्रतिशत व्यक्ति कारीगरी का कार्य करते थे। कृषि के आलावा यहाँ के व्यक्ति व्यापार और वाणिज्य का कार्य भी करते थे।[2]

(ब) सामाजिक व्यवसाय—

इस समय यहाँ हिन्दू, मुसलमान एवं मेव लोगों की संख्या अधिक थी। इनमे खानजादा, मीणा, जाट, माली, अहीर, गुजर, एवं चमार आदि उपजातियाँ भी थीं।[3]

मेव—मेव जाति के लोग अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध थे। अलवर के उत्तरी पूर्वी भाग में ये अधिकाश संख्या मे रहते थे। मेव शुरू से ही बहुत उद्दण्ड थे इसलिए अलवर के महाराव राजा बख्तावरसिंह और बन्नेसिंह आदि ने मेवों का दमन किया। मेव अपने को राजपूत कहते थे।[4] लेकिन यह कथन पूर्णतया सत्य प्रतीत नहीं होता है। क्योंकि मेवो मे कई जातियाँ ऐसी थी जो कि मीणों से मेल खाती थी। ऐसा प्रतीत होता है कि मेवों मे मीणो तथा राजपूतों का मिश्रण था।[5] यद्यपि मेव मुसलमान जाति के जाने जाते थे लेकिन त्यौहार हिन्दू रीति से ही मनाते थे। इनका पहनावा, रहन-सहन एवं विवाह भी हिन्दू पद्धति से ही होते थे।[6]

मुसलमान होने हुए भी नमाज पढ़ने में इनका बहुत कम विश्वास था। मेव लोग पहिले हिन्दू थे लेकिन महमूद गजनवी ने जब भारतवर्ष पर आक्रमण किया तब उसके साथ एक मुसलमान सन्त हजरत सैयद सालार भारतवर्ष मे आये और उन्होंने इन

---

1. (अ) मायाराम, राजस्थान डिस्टिक्ट गजेटियर अलवर पृ० 110।
   (ब) पाउलेट, पी० डब्लूय, गजेटियर आफ अलवर पृ० 37।
2. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 71 बस्ता 9 बण्डल 6 पृ० 4।
3. वही, क्रमांक 132, 467 एवं 1479 बस्ता 1867,187 बण्डल 1,9 पृ० 6, 1–5- 34।
4. (अ) मायाराम, राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर अलवर पृ० 128–1।
   (ब) पाउलेट . गजेटियर ऑफ अलवर पृ० 37।
   (स) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 350 बस्ता 51 बण्डल 8 पृ० 1।
5. (अ) पाउलेट, अलवर गजेटियर पृ० 38।
   (ब) मायाराम, राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर अलवर पृ० 129।
   (स) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 134,467 बस्ता 18,67 बण्डल 11,1 पृ० 1,28।
6. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 350, 467 बस्ता 51,7 बण्डल 8,1 पृ० 1, 29।

मेवो को मुस्लिम धर्म ग्रहण करवा दिया।[1] सन् 1267 में बलवन ने एक लाख मेवातियो को कत्ल करवा दिया था। 1803 मे मेवो ने अंग्रेजी सेना को बहुत तग किया था इस पर अग्रेज गवर्नर लार्ड लेक ने उनका दमन किया। बख्तावरसिंह, बन्नेसिह आदि ने भी समय-समय पर उन्हे दण्ड दिया। 1857 के विद्रोह के समय मेवो के द्वारा अंग्रेजो की खाद्य सामग्री लूटने पर उन्होने कई मेवो को फाँसी के तख्ते पर लटकवा दिया। लेकिन बाद मे मेवो ने अपना शान्तिमय जीवन व्यतीत करना शुरू किया और कृषि का कार्य अपना लिया।

जाट—जाट लोग यदु वशी कहलाते थे। अलवर मे जो जाट बसे हुए थे उनके पूर्वज पजाब की ओर से आये थे।[2]

राजपूत—अलवर के राजपूतो मे मुख्यत चौहान, नरुका, राजावत और शेखावत थे।

(अ) चौहान—राजपूत अलवर के उत्तर पश्चिम मे राठ प्रदेश मे रहते थे और ये राजपूत अपना सम्बन्ध पृथ्वीराज चौहान से मानते थे।[3]

(ब) नरुका राजपूत अलवर राज्य के दक्षिण मे नरु खण्ड मे निवास करते थे और इन राजपूतो का यह कहना था कि वे आमेर के राजा उदयकरण के प्रपौत्र नरु के वशज थे।[4]

(स) राजावाटी—ये राजपूत अलवर के दक्षिण पश्चिम मे राजावाटी मे रहते थे। इनका मानना था कि आमेर के राजा भारमल के पुत्र भगवन्तदास के वश से सम्बन्धित थे।[5]

(द) शेखावत—राजपूत अलवर राज्य के पश्चिमी भाग मे बान्सूर तहसील मे एक गाँव के रहने वाले थे। इन शेखावत राजपूतो का यह मानना था कि उनके पूर्वज आमेर के महाराजा उदयकरण के वश से सम्बन्धित थे।[6]

खानजादा—खानजादो का कहना है कि उनके वश का सम्बन्ध मेवात के

---

1. (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 350 बस्ता 51 बण्डल 8 पृ०।
   (ब) मायाराम, राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, अलवर पृ० 130।
2. (अ) मायाराम, राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, अलवर पृ० 135।
   (ब) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1695,467 बस्ता 219,7 बण्डल 5,1 पृ० 5–6,39।
3. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 467 बस्ता 67 बण्डल 1 पृ० 40–43।
4. वही, क्रमाक 132, 1691,467 बस्ता 18,219,67 बण्डल 9,1 पृ० 9,2–4, 40–42।
5. वही, क्रमाक 132, 1691 बस्ता 18,219 बण्डल 9,1 पृ० 9,2–4।
6. वही, क्रमाक 467 बस्ता 67 बण्डल 1 पृ० 40–42।

राजपूत यादव राजा यदु से था। यह खानजादा लोग मुस्लिम धर्म का पालन करते थे लेकिन फिर भी इनके कुछ सस्कार हिन्दुओ से मेल खाते थे।[1]

अहीर—अहीर सस्कृत का शब्द अमीर से बना है जिसका अर्थ दूध वाला होता है।[2] अहीरो का यह कहना है कि वे भगवान श्री कृष्ण के पालन करने वाले और उनके पिता नन्द के वशज एव ब्रज भूमि से सम्बन्धित थे। मुगल शासक औरगजेब के शासनकाल मे रेवाडी क अहीर नन्दराम का 380 गाँवो पर अधिकार था। लेकिन धीरे-धीरे 1857 तक अग्रेजो ने अहीरो मे सारे गाँव छीन लिये। इसके पश्चात अहीरो ने कृषि का कार्य करना आरम्भ कर दिया।

गूर्जर—गूर्जर की उत्पत्ति राजपूत जाति से हुई थी। ये पहले गुर्ज से लडने की कला मे बहुत दक्ष थे इसलिये ये लोग गुर्जर कहलाये। गुर्जरो ने 11वी शताब्दी मे अलवर पर अपना अधिकार कर लिया था। उस समय उन्होने अपनी राजधानी राजोरगढ बनाई थी। इन लोगो का मुख्य व्यवसाय खेती करना तथा पशु पालन करना था।[3]

माली—बाग बगीचो के अन्दर कार्य करने वालो को माली कहा जाता था। माली जाति के लोग पहले राजपूत थे लेकिन जब मोहम्मदगोरी ने भारत पर अधिकार कर मुस्लिम साम्राज्य स्थापित कर दिया तबसे इन लोगो ने बागवान का कार्य करना प्रारम्भ कर दिया था। इसलिये माली कहलाये। बाकी इस जाति की जो उपजातियाँ थीं वो राजपूतो की उपजातियो से मेल खाती थी। उदाहरण के लिये राठोड, तवर, देवडा परमार, गहलोत, भाटी चौहान आदि थे।[4]

चमार—इस जाति के लोग चमडे का काम करते थे इसलिये ये चमार कहलाये। ये लोग गाय बैल भैस आदि के मर जाने पर उनकी खाल उतार कर उसको रगते थे और फिर उस खाल क जूते तथा चडस आदि बनाते थे। चूंकि इस जाति के लोग अनुसूचित जाति के थे अत इनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। इस जाति के लोगो के साथ-साथ उच्च जाति के लोग खान पान का सम्बन्ध नही रखते थे।[5]

सभी जातियो को अपना-अपना धर्म मानने की छूट थी। इसी कारण यहाँ

---

1. वही, क्रमाक 467 बस्ता 67 बण्डल 1 पृ० 40–42।
2. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 467,1694 बस्ता 67,219 बन्डल 1,4 पृ० 103,9।
3. वही, क्रमाक 1350,1695,467 बस्ता 51,219,67 बन्डल 8,5,1 पृ० 2,4,38।
4. वही, क्रमाक 467,1695 बस्ता 67,219 बन्डल 1,5 पृ० 31,7-8।
5. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 350,1700,467 बस्ता 51,21967 बन्डल 8,8,1 पृ० 2,11,130,31।

सभी धर्मों के मन्दिर एव मुसलमानो की मस्जिदें काफी मात्रा मे पायी जाती हैं।[1] किन्तु इन जातियो मे ऊच-नीच का ध्यान बराबर रखा जाता था। भगी एव चमार से ब्राह्मण आदि उच्च वर्ग के लोग दूर रहते थे और उनके साथ खानपान एव बेटी व्यवहार नही रखते थे। मुसलमानो में शिया एव सुन्नी भी एक दूसरे के प्रति इस प्रकार का व्यवहार करते थे।[2] *खानपान मे गेहूँ, मक्का एव दालो आदि का प्रयोग सभी लोग करते थे। कुछ जातियाँ माँस का प्रयोग भी करती थी।*[3]

यहाँ के पुरुषो का पहनावा बहुत ही सादा था। सभी जातियो के लोग बहुधा धोती, अगरखा, एव दुपट्टा पहनते थे।

स्त्रियाँ प्रायः लहगा, कुर्ती काचली, एव ओढ़नी पहनती थी। हाथ में लाख अथवा काँच की चूडियो का प्रयोग करती थी। सम्पन्न घराने की स्त्रियाँ चाँदी की चूडियाँ पहनती थी। नाक मे नथ एव लोग का प्रयोग भी अनेक स्त्रियाँ करती थी।[4]

समाज का प्रत्येक वर्ग अपने-अपने त्यौहारो को हर्षोल्लास के साथ मनाता था। अनेक त्यौहारो को राजकीय स्तर पर महत्व दिया जाता था। उनमे होली, दीवाली, गणगौर एव ईद प्रमुख थे। इन अवसरो पर मल्लयुद्धो एव अनेक सास्कृतिक कार्यक्रमो के आयोजन भी होते थे।[5]

मेले—

समस्त राज्य मे 225 के लगभग मेले लगते थे। अलवर में गणगौर और श्रावणी तीज के प्रसिद्ध उत्सव मार्च और अगस्त मे होते थे। अषाढ में जगन्नाथ का उत्सव साहिबजी देवता का मेला लगता था। डेहरा के आठ मील पश्चिमोत्तर में फरवरी के महीने के चूहर सिन्ध का मेला शिवरात्रि के दिन लगता था।[6]

---

1. वही, क्रमाक *132,1479* बस्ता *26* बन्डल *1,9* पृ० *6,1-5,34*।
2. वही, पृ० 40।
3. वही, पृ० 41।
4. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 182 बस्ता 26 बन्डल 3 पृ० 43।
5. *वही, पृ० 49*।
6. यह मेला एक मेव पुरुष के नाम पर होता था जिसकी पैदाइश एक मेव और एक नाई जाति की औरत से औरगजेब के समय मे हुई थी। वह धनेता गाँव मे पैदा हुआ था। और महसूल वसूल करने वालों के डर से घर छोडकर खेतो की रखवाली और मवेशी की चराई से अपना गुजर करता था। इत्तफाक से उसको शाह मदार नामी एक मुसलमान वली वही मिल गयी। जिससे वह अजीब काम करने लगा। आखीर में उसने वर्तमान धाम की जगह अपने रहने का मुकाम करार दिया।
   (अ) श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 4 पृ० 1372।
   (ब) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 330, बस्ता 46 बन्डल 4 पृ० 1-4।

यहाँ पर प्रतिवर्ष लगने वाले मेलों में बिलाली माता का, राजगढ में रथ यात्रा, शीतलादेवी का, भरतहरि का, साहिबजी का मेला, अश्विनी देवी का मेला, चंद्रदेवी का मेला और नारायणी का मेला एव लालदास का मेला इत्यादि प्रमुख थे। इनमे बिलाली एव चूहड मिन्ध के मेले बड़ी धूमधाम से आयोजित किये जाते थे। जिनमे दूर-दूर मे सभी जाति एव धर्मों के लोग सम्मिलित होते थे।

(ख) अलवर क्षेत्र का प्रारम्भिक इतिहास—

पुरातत्ववेता कनिंगम के मतानुसार इस प्रदेश का प्राचीन नाम मत्स्य देश था। महाभारत युद्ध से कुछ समय पूर्व यहाँ राजा विराट के पिता वेणु ने मत्स्यपुरी नामक नगर बसा कर उसे अपनी राजधानी बनाया था। कालान्तर मे इसी को साचेड़ी कहने लगे। और बाद में वही राजगढ़ परगने मे माचेड़ी के नाम से जाना जाने लगा।[1] उस समय यौधेय, अर्जुनायन, वच्छल आदि अनेक जातियाँ इसी भू-भाग में निवास करती थीं। राजा विराट ने अपने पिता की मृत्यु हो जाने के बाद मत्स्यपुरी से 35 मील पश्चिम मे बैराठ नामक नगर बसा कर इस प्रदेश की राजधानी बनाया।[2]

इसी विराट नगरी से लगभग 30 मील पूर्व की ओर स्थित पर्वत मालाओं के मध्य में पाण्डवों ने अज्ञातवास के समय निवास किया था। बाद में यह स्थान अलवर प्रान्त में पाण्डव पोल के नाम से जाना जाने लगा। उन्हीं दिनो राजा विराट के समीपवर्ती राजाओं मे प्रसिद्ध राजा सुशर्माजीत था जिसकी राजधानी श्रोद्धविष्ट[3] नगर थी जो अब तिजारा परगने में सरहटा नामक एक छोटा गाँव है।[4]

सुशर्मण के वंशजो का यहाँ बहुत समय तक अधिकार रहा। यादव वंशीय तेजपाल ने सुशर्मा के वंशधरों के यहाँ आकर शरण ली और कुछ समय बाद उसने तिजारा बसाया। राजा विराट के समय कीचक का प्रदेश पर शासन था। जिनकी राजधानी मायकपुर नगर थी जो अब बान्सूर प्रान्त मे मामोड़ नामक एक उजड़ा हुआ खेड़ा पड़ा है।[5]

तीसरी शताब्दी के आसपास इधर गुर्जर प्रतिहार वंशीय क्षत्रियों का अधिकार

1. राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, क्रमांक 181 बस्ता 26 बण्डल 2, पृष्ठ 1।
2. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 181, बस्ता 26 बण्डल 3 पृ० 2।
3. तथाई बठूमर के प्राचीन शिलालेख मे श्रोद्ध विष्ट शब्द मिलता है संभव है कि सरहटा इसी गाँव का अपभ्रंश हो। शिलालेख की प्रतिलिपि लक्ष्मणगढ़ के प्रान्तीय गजेटियर मे उल्लिखित है।
4. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 181 बस्ता 26 बण्डल 2 पृ० 2।
5. वही, पृ० 4।

हो गया और इसी क्षेत्र मे राजा बाघराज[1] ने मत्स्यपुरी से 3 मील पश्चिम मे एक नगर बसाया तथा एक गढ भी बनवाया। इसी वश के राजा राजदेव ने उक्त गढ का जीर्णोद्धार करवाया और उसका नाम राजगढ रखा। वर्तमान राजगढ दुर्ग के पूर्व की ओर इस पुराने राजगढ की बस्ती के चिन्ह अब भी दृष्टिगत होते हैं।[2]

पाँचवी शताब्दी के आसपास इस प्रदेश के पश्चिमोत्तरीय भाग पर राजा ईशर चौहान के पुत्र राजा उमादत्त के छोटे भाई मोरध्वज का राज्य था जो सम्राट पृथ्वीराज से 34 पीढी पूर्व हुआ था इसी की राजधानी मोरध्वज नगरी थी जो उस समय साबी नदी के किनारे बहुत दूर तक बसी हुई थी। इस बस्ती के प्राचीन चिन्ह नदी के कटाव पर अब भी पाये जाते हैं और अब मोरधा[3] और मोराडी दो छोटे-छोटे गाँव रह गये हैं।[4] छठी शताब्दी मे इस देश के उत्तरीय भाग पर भाटी क्षत्रियो का अधिकार था। इनमे प्रसिद्ध राजा शालिवाहन ने 'कोट' नामक एक नगर बसाया था और उसे अपनी राजधानी बनाया था। मुडावर प्रान्त के सिहाली ग्राम मे उपरोक्त नगर के प्राचीन खण्डहरो के चिन्ह अब भी पाये जाते हैं। इसी शालिवाहन[5] ने इस नगर से लगभग 25 मील पश्चिम की ओर शालिवाहनपुर नाम का दूसरा नगर बसाया जहाँ आजकल बहरोड बसा हुआ।[6]

इन चौहानो और भाटी क्षत्रियो के अधिकारो का ऐसा दृढ प्रमाण नहीं मिलता जैसाकि उपरोक्त गुर्जर प्रतिहार (बड गुर्जर) के शासनाधिकार के समय का प्राप्त होता है। राजोरगढ के शिलालेख से पता चलता है कि सन् 959 मे इस प्रदेश पर गुर्जर प्रतिहार वशीय सावर के पुत्र मथनदेव का अधिकार था जो कन्नौज के भट्टारक राजा परमेश्वर क्षितिपाल देव के द्वितीय पुत्र श्री विजयपाल देव का सामन्त था। इसकी राजधानी राजपुर (वर्तमान राजोरगढ) थी यहाँ उस समय का एक प्राचीन नीलकठ नामक शिव मन्दिर अब भी विद्यमान है।[7]

---

1. राजगढ ठाकुर जो स्थानीय अन्वेषण के समय लगभग 100 वर्ष की आयु का था वह पुराने राजगढ और दक्षिणीय प्राचीन बान्ध को डेढ हजार वर्ष से पूर्व इसी बाघराव का बनवाया हुआ बताता था और इनको पडिहार क्षेत्रीय कहता था। राय बहादुर गौरीशकर हीराचन्द ओझा—पणिहारा और गुर्जर प्रतिहार को बड गुर्जर ही बताते हैं।
2. रा० रा० अभि० बीकानेर०, क्रमाक 181, बस्ता 26 बण्डल 2 पृ० 5-6।
3. यह मोरधा इस राज्य की पश्चिमोत्तरीय सीमान्त पर जयपुर राज्य मे स्थित है।
4. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 181 बस्ता 26 बण्डल 2 पृ० 6-7।
5. वही, पृ० 8।
6. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 181 बस्ता 26 बण्डल 2, पृ० 8-9।
7. वही, पृ० 9-10।

इसी समय जयपुर तथा अलवर राज्य के पूर्वज राजा सोढदेव ने बड गुर्जरो से दौसा लिया और इनके पुत्र दुल्हेराय ने खोह आदि के मीणों को दबाकर एक छोटे से राज्य की स्थापना की तथा इनके पुत्र काकिलदेव ने[1] अजमेर को अपनी राजधानी बनाया। उन दिनो इस प्रदेश के कुछ स्थानों पर बडगुर्जरो, कही पर यादवो और कहीं निकुम्भ क्षत्रियो का अधिकार था।[2]

राजाकाकिल देव ने मेड वैराठ और इस प्रदेश के कुछ भाग को यादवो मे लेकर निकुम्भ क्षत्रियों के शासन में दिया पर इनके पुत्र अलघराय ने मेड, वैराठ यादवों से लेकर इस क्षेत्र के कुछ भाग पर अधिकार करके एक दुर्ग और अलपुर नामक नगर बसाया।[3]

अलघराय के बाद उसके पुत्र सगर से निकुम्भ क्षत्रियो ने यह प्रदेश छीन लिया और राजगढ बान्सूर थानागाजी आदि कुछ प्रान्तो को छोडकर इस राज्य के अधिकाश भाग पर निकुम्भो का शासन रहा।

अलवर के गढ को इन्होंने सुदृढ किया तथा इण्डोर (तिजारा) मे एक दूसरा दुर्ग बनवाया। उन दिनो राजगढ प्रान्त मे बडगूजर थानागाजी मे मेवात के मीणें एव बान्सूर और मण्डवरा मे चौहान क्षत्रियो का आधिपत्य था।[4] राजगढ प्रदेश मे राजा देव कुण्ड वडगूजर ने देवती नामक बसाकर उसे अपनी राजधानी बनाया।

इसी के वशजो मे से देवत ने देवती, राजदेव ने राजोरगढ और मानर्ने माचेडी मे अपनी-अपनी स्थिति को मजबूत कर लिया। इसी वश के राजा हरपाल ने अजमेर नरेश राजा देव को अपनी पुत्री नवलदेवी विवाही थी। राजा कर्णमल की पुत्री आमेर नरेश कुन्तल को विवाही गयी। कर्णमल की तीसरी पीढी मे बडगूजर वंशीय राजा असलदेव के पुत्र महाराजा गागादेव का सुल्तान फिरोजशाह के समय मे माचेडी मे राज्य था इनके समय के दो शिलालेख सन् 1369 ई० मे और सन् 1382 मे माचेडी से मिले हैं।[5]

सन् 1458 मे इस वश के राजा रामसिंह का पुत्र राजपाल था। उसके पुत्र कुम्भ ने आमेर नरेश पृथ्वीसिंह से अपनी पुत्री भगवती का विवाह किया। राजा कुम्भ का द्वितीय पुत्र अशोकमल था जिसका दूसरा नाम ईश्वरमल था।[6] सम्राट अकबर

1. वही, पृ० 10।
2. (अ) वही, पृ० 11।
   (ब) गहलोत, जगदीशसिंह, जयपुर और अलवर राज्यो का इतिहास पृ० 248।
3. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 181 बस्ता 26 बन्डल 2 पृष्ठ 11-12
4. वही, पृष्ठ 13
5 वही, पृष्ठ 13-14
6. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 181, बस्ता 26, बन्डल 2, पृष्ठ 15

को डोला न देने तथा आमेर नरेश मानसिंह से बिगाड हो जाने के कारण दिल्ली और जयपुर की सेना ने इनसे देवती का राज्य छीन लिया और केवल राजोरगढ पर इनके पुत्र बीका का अधिकार रहा अन्त मे यह भी छीन लिया गया और राजगढ प्रान्त से बडगुर्जरो का शासन सदैव के लिये समाप्त हो गया। इसके बाद राजगढ प्रान्त जयपुर, राज्य मे सम्मिलित कर लिया गया।[1]

थानागाजी प्रान्त मे अकबर सम्राट के शासन के प्रारम्भ मे मेवात मीणो की राजधानी क्यारा नगर थी। यहाँ के मौक्लसी नामक राजा को शाही सेना ने परास्त करके क्यारा को उजाड दिया और शाही सेनापति ने मोहम्मदाबाद नामक एक नगर बसाया, उन्ही दिनो इधर नरहट का बाँदा मीणा प्रसिद्ध लुटेरा था जिसकी धर्मपुत्री शशिबदनी मेवात के विख्यात टोडरमल सेय के पुत्र दारिया खाँ को विवाही गयी थी। आमेर नरेश मानसिह के अनुरोध से सम्राट ने इस प्रान्त मे शान्ति बनाये रखने के कारण बाँदा को "राव" का पद प्रदान किया।[2]

सन् 1599 के आसपास आमेर नरेश महाराजा भगवन्तदास के द्वितीय पुत्र माधवसिंह ने भानुगढ़ नगर को अपनी राजधानी बनाया और आमेर से पृथक भानुगढ राज्य की स्थापना की। इसके बाद उसका पुत्र शत्रुशाल भानुगढ की गद्दी पर बैठा। तदुपरान्त अजबसिंह, हरिसिंह, काबुलसिंह, जसवन्तसिंह आदि क्रमानुसार यहाँ के शासक बने। सन् 1720 मे जयपुर नरेश सवाई जयसिंह ने भानुगढ पर चढाई करके जसवन्तसिंह को पराजित कर यह प्रदेश छीन लिया।[3]

मडावर मे चौहान क्षत्रियों का अधिकार था इनमे राव शंकर के वशज मादे (मदनसिंह) ने सन् 1726 मे मदनपुर ग्राम बसाया जो अब मडावर कहलाता है। इन्हीं के वंशज हासा मडावर की गद्दी पर बैठे और इनके छोटे भाई कान्हडदेव को बडोद मिला। उनके वशज बडोद के राजा थे। राव हासा के पुत्र जामा ने फिरोजशाह तुगलक के समय मे अपने प्राण दे दिये पर अपना धर्म नही छोडा (विधर्मी बनना स्वीकार न किया)। इसी जामा के पुत्र चाँद को सन् 1442 मे उक्त बादशाह ने जबरन मुसलमान बनाया। चाँद के मुसलमान बन जाने पर इनके चचा राजदेव ने मडावर छोड दिया और सन् 1464 मे नीमराना को अपनी राजधानी बनाया। इन्ही के वशज नीमराना के राजा और ततारपुर पेट्रल आदि के ठाकुर थे चाँद के वशज अजीतसिंह कुम्भ आदि ने बान्सूर प्रान्त पर अपना अधिकार जमाया।[4]

मडावर और नीमराने के चौहानो ने बान्सूर के प्रदेश मामोड और रामपुर

---

1. वही
2. वही, पृष्ठ 16-17
3. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 181 बस्ता 26 बन्डल 2 पृ० 18-19।
4. वही, पृ० 20-21।

आदि मे अपनी स्थिति को मजबूत किया लेकिन शेखावत क्षत्रियों ने उन्हे जमने नही दिया।[1]

राव शेखा के पुत्र राव सूजा और जगमल ने सन् 1503 के लगभग बान्सूर प्रदेश पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। सूजा ने बसई को अपनी राजधानी बनाया और जगमाल हाजीपुर मे रहे सन् 1537 मे सूजा का देहावसान हो गया और इसके पुत्र लूणकर्ण रायसल चांदा और भैरू बड़े प्रतापी और वीर हुए थे। शेखावाटी के खेतड़ी, खण्डेला, सीकर, शाहपुरा आदि नगरो मे लूणकर्ण और रायसल के वशजो का अधिकार था जहाँ इन वीरो का जन्म हुआ था। वहाँ सूजा का राजभवन बसई मे अब तक खण्डहर पडा हुआ है।[2]

शेखा के तीसरे पुत्र तेजसिंह के पुत्र मानसिंह और सकतनसिंह ने कुल के चौहान राजा को मार कर अपना अधिकार किया। मानसिंह के पुत्र नारायण दास ने नारायणपुर बसाया। नारायणदास के पुत्र बालभद्र सिंह बड़े वीर और साहसी थे।[3]

13वी शताब्दी से पूर्व अजमेर के राजा वीशलदेव चौहान ने अलवर मेवात के निकुम्भो को अपने अधीन कर लिया और राजा महेश को अपना सामन्त नियुक्त किया लेकिन सम्राट पृथ्वीराज चौहान ने महेश के वशज मंगल को हराकर यह प्रदेश निकुम्भो से छीन कर अपने वशजो के अधिकार मे दे दिया। पृथ्वीराज चौहान और मंगल ने ब्यावर के राजपूतो की लडकियो से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया।[4] सन् 1205 मे कुतुबुद्दीन एबक ने चौहानो से यह देश छीन कर पुनः निकुम्भों को ही दे दिया।

मेवात का मुस्लिम इतिहासकारो ने सबसे पहली बार इल्तुतमिश के समय-तारीख-ए फिरोजशाही मे उल्लेख किया है। उसने मेवात पर अपना अधिकार स्थापित किया था। इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद बलबन ने मेवातियो का दमन किया। क्योंकि मेवातियों की लूटमार से वह परेशान हो गया था। बलवन ने दिल्ली के आस-पास के जगलो को जहाँ मेवाती रहते थे, कटवा दिया और वहाँ पर सैनिक चौकियाँ स्थापित की ताकि मेवाती फिर कभी उपद्रव नही कर सकें।[5]

---

1. वही, पृ० 21-22।
2. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 181, बस्ता 26 बन्डल 2 पृष्ठ 22।
3. वही, पृष्ठ 23
4. (अ) वही, पृष्ठ 24।
   (ब) गहलोत जगदीश सिंह, जयपुर व अलवर राज्यों का इतिहास पृष्ठ 248।
5. (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 181 बस्ता 26 बन्डल 2 पृ० 26।
   (ब) हबीबुल्लाह ए० बी० एम०, फाउण्डेशन आफ मुस्लिम रूल इन इण्डिया पृ० 167-68
   (स) मायाराम, राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, अलवर पृ० 48।
   (द) ब्रिग, फरिश्ता भाग 1 पृ० 249-255।

बलबन की दमनकारी नीति के परिणामस्वरूप 100 वर्षों तक मेवात में कोई विद्रोह नही हुआ। इसके पश्चात् बहादुर नाहर के बारे मे जानकारी मिलती है जो मुस्लिम धर्म को मानने वाला था वह यादव वंशीय था तथा दिल्ली बादशाह के प्रमुख सामन्तों मे उसकी गिनती थी। बहादुर नाहर के वंशज रायजादा के नाम से पुकारे जाते थे। फिरोजशाह तुगलक की मृत्यु के पश्चात जब उसके पोते अबुबकर और उसके भाई नसीरुद्दीन के बीच राजसिंहासन के लिये संघर्ष प्रारम्भ हुआ तब बहादुर नाहर ने अबुबकर को सहायता दी जिसके कारण वह नासीरुद्दीन को सिंहासन से हटाकर स्वय गद्दी पर बैठ सका। जब नसीरुद्दीन ने राजगद्दी पर फिर अपना अधिकार कर लिया तब अबुबकर ने बहादुर नाहर के पास जाकर कोटला म शरण ली। नसीरुद्दीन ने कोटला पर भी आक्रमण किया और अबुबकर को गिरफ्तार कर लिया लेकिन नाहर को क्षमा कर दिया। कुछ समय पश्चात् बहादुर नाहार ने दिल्ली पर आक्रमण किया लेकिन पराजित होने पर कोटला छोडकर जिरका मे शरण लेनी पडी। नसीरुद्दीन की मृत्यु 1394 मे हुई उसके पश्चात् नाहर दिल्ली दरबार मे फिर से शक्तिशाली सामन्त बन गया और राजसिंहासन के लिए इच्छुक दो उम्मीदवारो को तीन वर्ष तक आपस मे लडा कर अपना स्वार्थ पूरा करता रहा।[1]

तैमूरलग की आत्मकथा से भी उसके और बहादुर नाहर दोनो के बीच सम्बन्धो का पता चलता है सन् 1398 मे जब तैमूर ने भारतवर्ष पर आक्रमण किया तब उसने बहादुर नाहर क पास अधीनता स्वीकार करने के लिए अपना दूत भजा।[2] इस पर तैमूर की अधीनता स्वीकार कर ली थी। तैमूर के भारत से जाने के पश्चात् उसके प्रतिनिधि खिज्रखाँ ने बहादुर नाहर के चारो ओर कोटला में घेरा डाल दिया इसलिये बहादुर नाहर ने पहाडो मे जाकर शरण ली। खिज्रखाँ ने कोटला नष्ट कर दिया। बहादुर नाहर ने पहाडो मे रहते हुए भी तिजारा म दुर्ग का निर्माण करवाया।[3]

खिज्र खाँ की मृत्यु के पश्चात् सैय्यद मुबारक शाह ने मेवातियो के विद्रोह को पुन बुरी तरह से दबाया। मेवातिया ने पहाडों मे शरण लेकर भी मुबारक शाह का तिजारा पर अधिकार करने के प्रयास को विफल कर दिया। जब बहादुर शाह के पोते जल्लु तथा कद्दू ने दिल्ली के बादशाह को बहुत परेशान किया तब शाही सेनायें

---

1 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1 1 बस्ता 26 बन्डल 2 पृष्ठ 25-26।
(ब) ब्रिग फरिश्ता भाग 1 पृष्ठ 471 481।
2 इस समय बहादुर नाहर ने दो सफेद तोते तैमूर को उपहार स्वरूप भेजे थे।
3 (अ) मायाराम, राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, अलवर पृष्ठ 50।
(ब) पाउलेट, पी० डब्ल्यु, गजेटियर आफ अलवर पृष्ठ 4।

तिजारा पर आक्रमण करने के लिये भेजी गई। इस पर मेवातियो ने इन्डोर (कोटला से 10 मील) मे जाकर आश्रय लिया लेकिन बादशाही सेना ने मेवातियों को पराजित किया। इन्डोर नष्ट कर दिया गया तथा मेवाती भाग कर अलवर की पहाड़ियो पर चढ गये लेकिन शाही सेना ने मेवातियो को पहाड़ियो से भी भगा दिया। उनके गाँवो को जला कर राख कर दिया और मेवातियो को मौत के घाट उतार दिया गया तथा मेवात के इलाके को नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया।[1]

सन् 1427 मे बहादुर का पोता कद्दू युद्ध मे मृत्यु को प्राप्त हुआ। जल्लू ने अलवर के दुर्ग में आश्रय लिया दिल्ली की सेना को अलवर के दुर्ग पर अधिकार करने मे सफलता नही मिली। जल्लू के द्वारा बादशाह की सेना को युद्ध का खर्चा दिया जाने पर बादशाही सेना दिल्ली वापस लौट गई।[2]

इसके पश्चात् बहलोल लोदी ने मेवात पर आक्रमण किया। उस समय अहमद खाँ मेवात पर शासन कर रहा था। बहलोल लोदी ने उससे 7 परगने छीन लिये और अहमद खाँ को विवश होकर बादशाह की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी।[3]

सिकन्दर लोदी ने तिजारा मे अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया और अलावलखा खानजादे ने निकुम्भ क्षत्रियो से अलवर का दुर्ग छीन लिया। अलावलखाँ का पुत्र हसनखाँ मेवाती बहुत बडा देश प्रेमी और बहादुर योद्धा था। सन् 21, अप्रैल 1526 को पानीपत के प्रथम युद्ध मे हसनखाँ मेवाती ने इब्राहीम लोदी की ओर से बाबर के विरुद्ध युद्ध मे भाग लिया था लेकिन युद्ध मे बाबर की विजय हो जाने के कारण उसे अपने साम्राज्य से हाथ धोना पडा। हसनखाँ मेवाती ने बाबर के विरुद्ध मेवाड के महाराणा सागा से सन्धि की थी। बाबर ने अपने दूत मुल्ला तुर्कअली और नजफरखाँ बेग के द्वारा यह कहलाया कि मैं भी मुसलमान हूँ और तुम भी मुसलमान ही हो इसलिए एक ही धर्म के होने से आपको मेरा साथ देना चाहिये।" लेकिन इस देश भक्त ने अपने स्वदेश प्रेम के कारण बाबर के निमन्त्रण को स्वीकार नहीं किया अन्त मे 17 मार्च 1527 को खानवा के युद्ध मे वह अपनी 10000 सेना के साथ लडते हुए में मारा गया।[4]

---

1. (अ) ब्रिग, फरिश्ता भाग 1 पृ० 518।
   (ब) गहलोत जगदीश सिंह, जयपुर व अलवर राज्यों का इतिहास, पृष्ठ 249।
2. (अ) ब्रिग, फरिश्ता भाग 1 पृष्ठ 521।
   (ब) लाल के० एस० ट्वी लाइट ऑफ दी सल्तनत पृ० 108।
3. (अ) केम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, भाग 3 पृ० 229
   (ब) मायाराम, राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर अलवर पृ० 51
4. (अ) वेवरीज, तुजुके बाबरी, पृ० 533
   (ब) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 181 बस्ता 26 बन्डल 2 पृ० 27-28।

हसनखां की मृत्यु के बाद उसके पुत्र नाहरखां को बाबर की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। तब बाबर ने उसके जीवन यापन के लिये एक परगना देकर उसे सन्तुष्ट कर दिया। इसके पश्चात् बाबर ने तिजारा और अलवर का दुर्ग अपने अधिकार में कर लिया और वहाँ पर अपने प्रतिनिधि नियुक्त किये। बाबर ने स्वयं एक रात अलवर के दुर्ग में विश्राम किया और वहाँ का खजाना अपने पुत्र हुमायूँ को सौंप दिया। मेवातियों पर अपना नियन्त्रण रखने के लिए हुमायूँ ने हसन खाँ की बड़ी पुत्री से तथा उसकी छोटी पुत्री से उसके सेनापति बैराम खाँ ने विवाह किया।[1]

हुमायूँ ने अपने भाई हिन्दाल को अलवर का प्रान्त जागीर में दिया। इसके पश्चात् मेवात तथा तिजारा पर निरन्तर मुगल गवर्नर शासन करते रहे, और मेवातियों को परेशान करते रहे।[2]

माचेड़ी का हेमू जो बहादुर योद्धा तथा कुशल प्रशासक भी था उसने पठान आदिलशाह को दिल्ली के सिंहासन पर बिठा दिया था लेकिन दुर्भाग्यवश वह पानीपत के द्वितीय युद्ध (1556 ई०) में पराजित हुआ। हेमू, माचेड़ी (राजगढ़ से 3 मील की दूरी पर स्थित है) का निवासी था। तथा एक साधारण बनिया परिवार से होते हुए भी अपनी योग्यता के कारण कुशल प्रशासक हो गया था। अकबर ने हेमू के राजकोष पर अपना अधिकार कर लिया तथा उसके पिता को मुस्लिम धर्म ग्रहण करने के लिये आदेश दिया। उसके अस्वीकार करने पर उसे मौत के घाट उतार दिया गया और हेमू बन्दी अवस्था में अकबर के सेनापति बैरम खाँ के द्वारा मार दिया गया।[3]

अकबर ने मेवात का विभाजन दो जिलों अलवर और तिजारा के नाम से कर दिया था जो आगरा प्रान्त के अधीन थे। अलवर जिले के नीचे 43 महाल थे जिनके अधीन 1612 गाँव थे जिनसे 1,48,105 रुपया की वार्षिक आय प्राप्त होती थी। तिजारा में 18 महाल के अधीन 253 गाँव थे। उसकी वार्षिक आय 8,07,332 रुपया प्राप्त होती थी। सन् 1579 में जब अकबर फतेहपुर सीकरी जा रहा था तब उस समय उसने अलवर में विश्राम किया था।[4]

औरंगजेब ने अलवर का दुर्ग आमेर नरेश सवाई जयसिंह को दे दिया था। लेकिन दूफ्तेखां के कहने से औरंगजेब ने अलवर के दुर्ग का मानचित्र मँगवाया और दुर्ग के सामरिक महत्व को देखकर पुनः वापस ले लिया। औरंगजेब ने मिर्जा अब्दुल

1. (अ) गहलोत, जगदीशसिंह : जयपुर व अलवर राज्यों का इतिहास पृ० 250।
   (ब) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 181 बस्ता 26 बण्डल 2 पृ० 27-28।
2. (अ) वही,
3. (अ) मायाराम, राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, अलवर पृ० 55।
   (ब) श्रीवास्तव, ए० एल० अकबर दी ग्रेट भाग 1, पृ० 29।
4. (अ) मायाराम, राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर अलवर, पृ० 56।
   (ब) पाउलेट पी०, डब्ल्यू० गजेटियर आफ अलवर पृ० 9।
   (स) गहलोत जगदीशसिंह, जयपुर व अलवर राज्यों का इतिहास पृ० 251।

करीम को अलवर का दुर्गाध्यक्ष बना कर वहाँ पर शाह सेना रख दी।[1] सन् 1756 में दिल्ली शासकों की कमजोरी का लाभ उठाकर भरतपुर के महाराजा सूरजमल जाट ने अलवर के दुर्ग पर अधिकार कर लिया जो लगभग 19 वर्षों तक उसके अधिकार में रहा। सूरजमल ने राजगढ़, लक्ष्मणगढ़, थानागाजी आदि कुछ प्रदेशों को छोड़कर इस राज्य के समस्त प्रदेशों पर अपना अधिकार कर लिया था।[2]

अलवर राज्य का संस्थापक प्रतापसिंह था जो आमेर नरेश महाराज उदयकर्ण के बड़े पुत्र बरसिंह की 15 वी पीढ़ी में था।[3] अलवर के राजा कछवाहा राजवंश की लालावत नरुका की शाखा से सम्बन्धित थे। बरसिंह के पौत्र नरु से नरुका शाखा चली और नरु के पुत्र राव लाला से लालावत नरुके कहलाये और अलवर के राजा इसी लालावत नरुका के शाखा से थे।[4]

आमेर नरेश उदयकर्ण जेणसी का ज्येष्ठ पुत्र था। अपने पिता की मृत्यु हो जाने पर वह 1366 ई म आमेर के राजसिंह शासन पर बैठा तथा 1388 ई तक शासन किया। बरसिंह आमेर के नरेश उदयकर्ण का बड़ा पुत्र होने के नाते आमेर राजगद्दी का उत्तराधिकारी था। इस समय एक ऐसी घटना घटी जिसके कारण बरसिंह ने राजगद्दी का अधिकार अपने छोटे भाई नृसिंह को दे दिया और स्वयं मौजाबाद[5] की जागीर के 84 गावों को लेकर सन्तोष कर लिया।[6]

खण्डेला का चौहान राजा बीशलदेव था उसने अपनी पुत्री के विवाह करने का टीका उदयकर्ण के पुत्र बरसिंह से करने के लिये आमेर भेजा था। उस समय महाराजा उदयकर्ण ने दाढ़ी और मूछो पर हाथ फेरते हुए कहा कि हमारे तो यह बाल सफेद हो गये हैं इसलिये तुमने बरसिंह के लिये टीका भेजा है। इस प्रकार हँसी

1. रा॰रा॰अभि॰ बीकानेर, क्रमांक 181 बस्ता 26 बण्डल 2 पृ॰ 29।
2. वही, पृ॰ 30।
3. (अ) रा॰ रा॰ अभि॰ बीकानेर, क्रमांक 1478, 1589, 520 बस्ता 186, 196, 77 बण्डल 1, 2, 1 पृ॰ 1, 5, 16।
   (1) (बरसिंह) मोजमाबाद का जागीरदार (2) मेराज (3) (नरु) नरुकों का पूर्वज (लालसिंह) लालावत नरुकों का पूर्वज (4) उदयकर्ण (5) लाडसिंह (6) फतहसिंह (7) कल्याणसिंह (8) उग्रसिंह (9) तेजसिंह (10) जोरावरसिंह (11) हाथीसिंह (12) मुकुन्दसिंह (13) महोब्बतसिंह (14) राव राजा प्रतापसिंह (अलवर राज्य का संस्थापक)।
4. (अ) रा॰ रा॰ अभि॰ बीकानेर, क्रमांक 350, 520 बस्ता 51,77 बण्डल 1 पृ॰ 3,16।
   (ब) श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 4 पृ॰ 1375।
5. मौजाबाद जयपुर नगर से 35 मील दक्षिण पश्चिम में स्थित है।
6. रा॰ रा॰ अभि॰ बीकानेर, क्रमांक 362, 350, 168 बस्ता 52, 51, 214 बण्डल 8 10 पृ॰ 1,3।

मजाक मे बरसिंह के पिता उदयकर्ण ने स्वयं विवाह करने की इच्छा प्रकट की। पिता की यह हँसी पुत्र को अच्छी नही लगी और हास्य भाव को सत्य मानकर बरसिंह ने खण्डेले वालों से अपने पिता उदयकर्ण का ही विवाह सम्बन्ध कर देने के लिये अनुरोध किया और अपने पिता की मुराद पुरी करने के लिये बरसिंह ने खण्डेले वालों से यह वायदा किया कि यदि आप इस कन्या का विवाह मेरे पिता उदयकर्ण से कर देंगे तो उससे जो पुत्र उत्पन्न होगा वही आमेर राज्य का उत्तराधिकारी होगा और उसके कल्याण के लिये मै राज्य का अपना जन्मसिद्ध अधिकार छोड़ दूँगा।

बरसिंह की प्रतिज्ञा को देखकर बोसलदेव ने अपनी पुत्री का विवाह उसके पिता उदयकर्ण से कर दिया। आगे चलकर उसकी नव विवाहिता निर्वाण रानी के गर्भ से एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम नृसिंह रखा गया। अपने किये हुए वायदे के अनुसार बरसिंह ने अपने पिता उदयकर्ण की मृत्यु के पश्चात् सन् 1488 मे नृसिंह को आमेर का उत्तराधिकारी घोषित किया चूँकि जब उदयकर्ण की मृत्यु हुई तब नृसिंह बालक था इसलिये बरसिंह राज्य का सारा कार्य देखता रहा। जैसे ही नृसिंह बड़ा हुआ बरसिंह ने राज्य का सारा कार्यभार अपने छोटे भाई नृसिंह को सौंप दिया और मौजाबाद की जागीर मे चला गया।

जयपुर महाराजा नृसिंह के और अलवर नरेश बरसिंह के वंश से सम्बन्धित था बरसिंह के क्रमानुसार सात वंशज जयपुर की सेवा सहायता और वृद्धि में योग देते रहे। सारे राज्य का प्रबन्ध उनके साथ में रहा। उनकी विलक्षण दूरदर्शिता, राजनीतिज्ञता, बुद्धिमता, कर्तव्यपरायणता और राजनिष्ठा के द्वारा राज्य को अनेक प्रकार का लाभ पहुँचता रहा।[2]

बरसिंह के पुत्र मेराज ने आमेर पर अधिकार कर लिया था लेकिन इसका अधिकार अधिक समय तक नहीं रह सका। मेराज ने माहुठा तालाब का निर्माण करवाया।[3] मेराज के पुत्र नरु ने भी कुछ समय तक आमेर को अपने अधिकार मे रखा लेकिन आमेर के राजा चन्द्रसेन ने नरु को आमेर से मार भगाया। अत वह निराश होकर अपनी जागीर मौजाबाद मे चला गया।[3] नरु बड़ा प्रतापी राजा था जिससे नरुवंश का प्रादुर्भाव हुआ। नरु के वंशज नरुका नाम से पुकारे जाने लगे। नरु के पाँच पुत्र थे।[4]

---

1. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 1018 बस्ता 139 बण्डल 2 पृ 20।
2. वही, क्रमांक 215 बस्ता 28 बण्डल 5 पेज 3।
3. वही, क्रमांक 350 बस्ता 51 बण्डल 8 पृ. 3।
   168 214 10 4-6
4. (अ) वही, क्रमांक 215, 181, 362 बस्ता नम्बर 28, 26, 52 बण्डल न. 5, 2, 8 पृ. 2-15, 38, 4।
   (ब) श्यामलदास—वीर विनोद भाग 4 पृ. 1374।

1. लाला—

लालावत के वंशज जो लालावत नरुका कहलाते थे अलवर राज्य के शासक थे।

2. दासा—

दासा के वंशज दासावत नरुका कहलाते थे और ये दासावत नरुका जयपुर के उनियारा, वाला और अलवर मे जावली गढों मे निवास करते थे।

3. तेजसिंह—

जिसके वंशज तेजावत नरुका कहलाये जो जयपुर एव अलवर मे हादीहेड़ा में निवास करते थे।

4. जेतसिंह—

इसके वश जेतावत नरुका कहलाते। ये गोविन्दगढ तथा पीपलखेड़ा मे निवास करते थे।

लाला जो कि नरु का बडा पुत्र था उसने अपने पिता की इच्छा को ध्यान में रखते हुए आमेर पर फिर से अधिकार करने से मना कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि उसके पिता ने उसे कमजोर समझा और इसलिये उसने अपने दूसरे नम्बर के पुत्र दासा को जो कि बहादुर एव वीर था उसको मौजाबाद का स्वामी बनाया तथा लालसिंह को 12 गावो सहित झाक का जागीरदार बना दिया।[1]

चूँकि लालसिंह कछवाहा वश के आमेर के राजा भारमल से कोई झगड़ा नहीं करना चाहता था जब इसका पता भारमल को लगा तो वह लालसिंह से बहुत खुश हुआ और उसने प्रसन्न होकर लालसिंह को राव का खिताब और निशान दिया।[2]

लालसिंह का बेटा उदयसिंह राजा भारमल की हरावल फौज का अफसर गिना जाता था। उदयसिंह के पुत्र लाडसिंह जिसकी गिनती आमेर व मिर्जा राजा मानसिंह के बड़े-बडे सरदारो मे की जाती थी बादशाह अकबर ने लाडसिंह को खान की उपाधि से विभूषित किया था। इसलिये वह लाड खाँ के नाम से पुकारा जाता था।[3]

---

1. (अ) रा रा अभि. बीकानेर, क्रमाक 215 बस्ता 28 बण्डल 5 पृ 16।
   (ब) गहलोत जगदीशसिंह, जयपुर व अलवर राज्यो का इतिहास, पृ. 254।
2. रा रा. अभि. बीकानेर, क्रमाक 1648, 350 बस्ता 214,51 बण्डल 10, 8 पृ. 6,3।
3. (अ) लाडखां का खिताब बादशाह अकबर का दिया हुआ था।
   (ब) रा. रा. अभि. बीकानेर, क्रमाक 362, 215 बस्ता 52,28 बण्डल 8,5 पृ. 3, 19-20।
   (स) मायाराम, राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ. 60।

लाड खाँ का पुत्र फतेहसिंह था। फतेहसिंह के चार पुत्र थे।[1]

(1) कल्याणसिंह (2) कर्णसिंह (3) अक्षयसिंह (4) रणछोड़दास[2]

कल्याणसिंह पहला व्यक्ति था, जिसने प्रथम बार अलवर के इलाके को विजित किया। कल्याणसिंह ने मिर्जा राजा जयसिंह के पुत्र कीर्तिसिंह के साथ कामा के विद्रोह का दमन किया। इस पर आमेर के नरेश रामसिंह ने कल्याणसिंह की सेवाओं से प्रसन्न होकर माचेड़ी गाँव जागीर में दे दिया। जिससे राजगढ़ माचेड़ी व आधा राजपुर यानी कुल मिलाकर ढाई गाँव की जागीर रामसिंह ने कल्याणसिंह को 25 दिसम्बर 1671 को प्रदान की।[3]

कल्याणसिंह के छ पुत्र थे जिनमें से पाँच जीवित रहे।[4]

1 उग्रसिंह माचेड़ी पर।[5]
2 श्यामसिंह पारा में
3 जोधसिंह पाई में
4 अमरसिंह खोरा में

---

1. रा रा अभि. बीकानेर, क्रमांक 1648 बस्ता 214 बण्डल 10 पृ 6-8।
2 (अ) वही क्रमांक 362 बस्ता 52 बण्डल 8 पृ 3।
   (ब) गहलोत, जगदीशसिंह, जयपुर व अलवर राज्यों का इतिहास भाग 3 पृ 254।
3 (अ) रा रा अभि बीकानेर क्रमांक 361, 350, 1018, 181 बस्ता 52, 51, 139, 26 बण्डल 7 8, 2, 2 पृ 2, 4, 20 38।
   (ब) श्यामलदास ने वीर विनोद के पृ 1376 मे कल्याणसिंह को 20 सितम्बर 1671 को जागीर दिया जाना लिखा है जो सही नहीं है।
   (स) गहलोत जगदीशसिंह ने जयपुर व अलवर राज्यो का इतिहास भाग 3 पृ 245 मे यह लिखा है कि कल्याणसिंह को माचेड़ी की जागीर मिर्जा राजा जयसिंह के द्वारा दी गई थी। यह कथन पूर्णतया सत्य नहीं है। क्योंकि जागीर 25 सितम्बर 1671 को दी गई थी जबकि मिर्जा राजा जयसिंह की मृत्यु 28 अगस्त 1667 को बुरहानपुर मे हो गई थी। अत यह जागीर कल्याणसिंह को रामसिंह के द्वारा ही दी गई होगी।
4 रा रा अभि बीकानेर, क्रमांक 362, बस्ता 52 बण्डल 8 पृ 2।
5 श्यामलदास ने वीर विनोद के पृ 1375 पर कल्याणसिंह के पहले लड़के का नाम आनन्दसिंह लिखा है जबकि जगदीशसिंह गहलोत ने जयपुर व अलवर राज्यो का इतिहास भाग 3 के पृ 254 पर कल्याणसिंह के पुत्र का नाम उग्रसिंह लिखा है। मैं गहलोत के मत से सहमत हूँ क्योंकि सन् 1676 के शिलालेखो से राव उग्रसिंह का माचेड़ी का अधिपति होना प्रमाणित होता है जिसकी पुष्टि निम्न रेकार्ड से होती है। रा रा अभि बीकानेर क्रमांक 361, 181 बस्ता 52, 26 बण्डल 7,2 पृ 2, 38।

5. ईश्वरीसिंह पलवा में जागीरदार रहा । इन पाँचो के पास कुल 84 घोड़े की जागीर थी ।

उग्र सिंह के बाद तेजसिंह गद्दी पर बैठा । तेजसिंह के दो लड़के थे बड़ा जोरावरसिंह जो माचेड़ी का पाटवी सरदार बना और दूसरा जालिमसिंह जिसको बीजवाड़ की जागीर मिली ।[1] जोरावरसिंह की मृत्यु के पश्चात् हाथी सिंह और मुकुन्दसिंह माचेड़ी के जागीरदार बने । इनके पश्चात जोरावर सिंह का पुत्र मोहब्बत सिंह सन् 1735 मे माचेड़ी की गद्दी पर बैठा । इनके तीन रानियाँ थी ।[2]

1 जून 1740 रविवार को मोहब्बत सिंह की रानी बख्त कुँवारे ने एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम प्रतापसिंह रखा गया ।[3] इसके पश्चात् सन् 1756 मे मोहब्बतसिंह बखाड़े के युद्ध में जयपुर राज्य की ओर से लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ । राजगढ़ मे उसकी विशाल छत्री बनी हुई है ।[4]

मोहब्बतसिंह की मृत्यु के बाद उसके पुत्र प्रतापसिंह ने 25 दिसम्बर 1775 ई. को अलवर राज्य की स्थापना की ।[5]

---

1. रा. रा. अभि. बीकानेर, क्रमांक 181,215 बस्ता 26,28 बन्डल 2,5 पृष्ठ 38-2 ।
2. (अ) वही, क्रमांक 1018, 1017 बस्ता 139 बन्डल 2,1, पृष्ठ 20,1 ।
   (ब) एक रानी हरिकुम्वरि कनकसिंह हाडा की बेटी और शिवनाथसिंह की पोती । दूसरी रानी बख्त कुम्वरी जेतावत राठोड़ तेजपाल की बेटी और शार्दूलसिंह की पोती । तीसरी रानी फूलकुम्वरि हिन्दुसिंह चौहान की बेटी और हिम्मतसिंह की पोती ।
3. राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, क्रमांक 404,746, 747,1588 बस्ता 62,107,196 बन्डल 2,4,5,1, पृष्ठ 4, 1-4, 5-6,5 ।
4. वही ।
5. (अ) राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, क्रमाक 1018, 329,181, 215,350, बस्ता 139,46,26,28,5 ।
   बन्डल 2,3,2,5,8, पेज 20, 17,39-40, 30,4 ।
   (ब) श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 4 पृष्ठ 1376 ।
   (स) मायाराम, राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, अलवर पृष्ठ 60 ।

2
प्रतापसिंह का उदय

अलवर राज्य की स्थापना राव प्रतापसिंह के असीम साहस, अदम्य उत्साह एव अक्लान्त पौरुप का फल है।

प्रतापसिंह का प्रारम्भिक जीवन (1740 से 1756 ई)

प्रतापसिंह कछवाहा राजपूतो की नरुवश शाखा के मोहब्बतसिंह का पुत्र था।[1] उसका जन्म मिति ज्येष्ठ वदी 3 सम्वत् 1797 तदनुसार। जून 1740 रविवार को हुआ।[2] मोहब्बतसिंह ने पुत्र जन्मोत्सव के उपलक्ष में अपने सम्बन्धियो एव मित्रों को एक बहुत बडा भोज दिया।[3] उस समय कौन जानता था कि आगे चल कर ज्योतिषियो की भविष्यवाणी सत्य प्रमाणित होगी और एक दिन यह बालक अपने अद्भुत कृत्यों से नरु वश को उज्ज्वल कर एक स्वतन्त्र राज्य की स्थापना करने मे

---

1. (अ) राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर, क्रमांक 1588 बस्ता 196, बन्डल 1, पृष्ठ 2।
   (ब) श्यामलदास, वीर विनोद भाग 4, पृष्ठ 1376।
   (स) वेब, राजपूताना के सिक्के, अनुवादक डॉ मागीलाल व्यास मयक ने पृष्ठ 142 पर प्रतापसिंह को राव महावतसिंह का पुत्र होना लिखा है जो सही प्रतीत नही होता।
2. (अ) श्यामलदास ने वीर विनोद (पृ 1376) मे प्रतापसिंह के जन्म की तिथि ज्येष्ठ कृष्णा 3 सम्वत् 1797 की अंग्रेजी तारीख 13 मई 1740) दी है। जगदीशसिंह गहलोत ने अपनी पुस्तक जयपुर व अलवर राज्य के इतिहास मे पृष्ठ 282 पर उसके जन्म की तारीख 3 मई सन् 1740 दी है जो कि सही प्रतीत नही होती क्योकि इस तिथि की अंग्रेजी की तारीख इन्डियन एफेमेरिज भाग 6 के पृष्ठ 282 के अनुसार। जून 1740 आती है जो ज्यादा सही प्रतीत होती है।
   (ब) रा रा अभि बीकानेर, क्रमाक 404,746,747 बस्ता 62, 107 बन्डल 2,4,5 पृष्ठ 1-4, 5-6 पत्र 197 एल एन 78 अलवर (819-823)।
3. वही, क्रमाक, 1588 बस्ता 196 बन्डल 1 पृष्ठ 6।

सफल हो सकेगा ।[1] सन् 1750 मे जब उसकी अवस्था 10 वर्ष की थी, जब वह अपने सेवकों और ग्वालो के लडको को लेकर व्यूह रचना करता और उन्हें दो दलो मे विभाजित कर किसी एक दल का नेता बनकर कृत्रिम युद्ध मे प्रवृत होता और विजय प्राप्त करता ।[2] इस अल्प अवस्था मे ही वह अनेक प्रकार के अस्त्रों-शस्त्रो के सचालन एव क्षात्र धर्म सम्बन्धी व्यवहारो मे कुशल हो गया। इसके अतिरिक्त अन्य विषयो मे भी अच्छी योग्यता प्राप्त कर उसने युद्ध स्थलो में अनेक बार अपनी प्रतिभा, वीरता, विलक्षण बुद्धि एव अपूर्व युद्ध कौशल से बडे बडे योद्धाओ के दांत खट्टे किये ।[3]

जयपुर की राजनीति में प्रवेश—

सन् 1756 मे अपने पिता मोहब्बतसिंह की मृत्यु के पश्चात प्रतापसिंह ने अपने कुटुम्ब और पैतृक सम्पत्ति का भार अपने ऊपर लिया और जयपुर की राजनीति मे महत्वपूर्ण भाग लेना प्रारम्भ किया ।[4]

सर्वप्रथम प्रतापसिंह का चौमू[5] के ठाकुर जोधसिंह के नाथावत के साथ मनोमालिन्य हो गया। सम्बन्ध बिगडने का मुख्य कारण यह था कि चौमू के नाथावत ठाकुर जोधसिंह और माचेडी के प्रतापसिंह दोनों की बैठक जयपुर महाराजा माधवसिंह की राजसभा मे दाहिनी ओर थी ।[6] ठाकुर जोधसिंह को यह बात असह्य प्रतीत हुई। उसकी इच्छा थी कि महाराजा माधवसिंह की दाहिनी ओर केवल उसकी ही बैठक लगे। सन् 1758 मे[7] एक दिन प्रतापसिंह को अपने स्थान पर बैठे देखकर उसने उठ जाने के लिए कहा। उस दिन तो उसने अपमान सूचक और अशिष्ट व्यवहार को किसी प्रकार सह लिया किन्तु जब दूसरे दिन भी नाथावत सरदार ने उसके साथ पुन अशिष्ट व्यवहार किया तब वह अपना क्रोध वश मे न रख सका। महाराजा माधवसिंह इस समाचार को सुनकर बहुत अप्रसन्न हुए और उन्होंने दोनो को सभा से बाहर

---

1. वही, क्रमाक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृष्ठ 12।
2. वही, क्रमांक 1588 बस्ता 196 बन्डल 1 पृष्ठ 7-8।
3. रा. रा. अभि. बीकानेर, क्रमाक 364, 403, 556 बस्ता न. 52, 62, 82 बन्डल 1, पृ 14-15, 5,।
4. वही, क्रमाक 746, 747, 403, 556, 364, 10, 17, बस्ता न. 107, 62, 82, 52, 139, बन्डल न. 4,5, 1, 10, 1 पृ. 1-4, 5-6, 1, 16, 3।
5. चौमू कस्बा जयपुर से 20 मील उत्तर पश्चिम में स्थित है।
6. वही रा रा. अभि. बीकानेर क्रमाक 1588, 536 बस्ता 196, 82 बन्डल 1 पृ. 9,।
7. वही, क्रमांक 746, 747, 364 बस्ता 10, 7, 52 बन्डल 4, 5, 10, पृ. 1-4 5-6, 17

चले जाने की आज्ञा दी।[1] बाद मे जयपुर के तत्कालीन दीवान (प्रधान मन्त्री) खुशालीराम बोहरा के अनुरोध पर उन्होंने बैठक सम्बन्धी पत्रों की जांच कराई तो उन्हें यह ज्ञात हुआ कि दोनो सरदारो की बैठक एक ही है। इस पर यह आज्ञा प्रदान की गई कि जिस दिन सभा म माचेड़ी का प्रतापसिंह आये उसके दूसरे दिन की सभा में चौमू के ठाकुर सम्मिलित हो, इस प्रकार दोनों का झगड़ा समाप्त हुआ।[2]

प्रतापसिंह का जयपुर की राजनीति मे दूसरा महत्वपूर्ण कार्य यह था कि 1755 मे जयपुर की सेना को मराठो ने रणथम्भोर[3] के दुर्ग म घेर लिया उस समय प्रतापसिंह ने अपनी सैनिक सहायता द्वारा जयपुर की सेना की रक्षा कर दुर्ग को मराठो के हाथो में जाने से बचाया।[4] जब सन् 1755 म मराठो ने रणथम्भोर के दुर्ग पर अधिकार करना चाहा तब दुर्गाध्यक्ष ने तीन वर्षा तक्कसल मराठो का सामना किया।[5] जब उसका कुछ फल न हुआ और सेना तथा सामग्री की न्यूनता हुई तब अन्त मे वहां के हाकिम ने रणथम्भोर का दुर्ग मराठों के हाथों मे न देकर खन्डार के दुर्ग के अध्यक्ष ठाकुर अनूपसिंह खागारोत को सौंप दिया।[6] ज्योंही यह समाचार जयपुर नरेश को मिला, उसने दुर्ग पर अपना पचरंगा झण्डा फहरा दिया।

कुछ ही दिनो पश्चात नवम्बर 1759 मे गगाधर तांतिया की अध्यक्षता में मराठी सेना रणथम्भोर पर चढ़ आई। काकोड़ गाँव के समीप *18 नवम्बर 1759 ई* को जयपुर नरेश की सेना की होल्कर की सेना से मुठभेड़ हुई और युद्ध प्रारम्भ हो गया।[7] इस लड़ाई मे चौमू व नायावत सरदार जोधसिंह तथा बगरू के चन्द्रभुजोत

---

1. रा. रा अभि. बीकानेर, क्रमांक 1588, 403 बस्ता 196, 62 बन्डल 11 पृ 9-10, 5।
2. वही, क्रमांक 364, 556 बस्ता न 52, 82 बन्डल 10, 1 पृ 18,1।
3. (अ) रणथम्भोर का दुर्ग जयपुर से *95* मील की दूरी पर स्थित है।
   (ब) श्यामलदास—वीर विनोद भाग 4, पृ 1376।
   (स) सरदेसाई, जी. एस.—सिलेक्शन्स फ्राम दी पेशवा दफ्तर भाग 27, पृ. 112, 117, 119, 275।
   (द) सरदेसाई, जी. एस —हिंगणे दफ्तर भाग 1, पृ 163।
4. रा. रा अभि बीकानेर, क्रमांक 1588, 364 556 बस्ता न 196, 52, 82 बन्डल 1, 10, 1, पृ 10, 20 1।
5. (अ) सरदेसाई, जी., एस सिलेक्शन्स फ्राम दि पेशवा दफ्तर भाग 27 पृ 155।
   (ब) राजावाड़े भाग 1 पृ 63।
   (स) रा रा अभि बीकानेर, क्रमांक 364, 556 बस्ता 52, 82 बन्डल न. 10, 1 पृ. 19, 20,1।
6. (अ) वही (राजावाड़े) भाग 1 पृ 218।
   (ब) रा रा अभि बीकानेर, क्रमांक 1588 बस्ता 196 बन्डल 1 पृ 10।
7. (अ) वही, क्रमांक 364, 1588 बस्ता 52, 196 बन्डल 10 पृ. 23, 10।
   (ब) वही, क्रमांक *746, 747* बस्ता न *107* बन्डल *4-5*, पृ. *1-4, 5-6*।
   (स) सरदेसाई, जी एस सलेक्शन्स फ्राम पेशवा दफ्तर भाग 21, पृ. 107-9, 114, 117-119।
   (द) राजवाड़े भाग 1, पृ 165।

सरदार गुलाबसिंह के मारे जाने पर माचेडी के प्रतापसिंह ने शत्रु पर इतना प्रबल धावा किया कि जिससे मराठी सेना तितर-बितर हो गई और स्वयं गंगाधर तातिया घायल होकर भाग गया। इस प्रकार माचेड़ी के प्रतापसिंह की सहायता से महाराजा माधवसिंह का रणथम्भोर पर अधिकार हो गया।[1]

प्रतापसिंह ने उनियारा के दासावत नरुका का दमन भी किया क्योंकि सन् 1760 मे उनियारा[2] के दासावत नरुका सरदारसिंह ने जयपुर महाराजा माधवसिंह की अनुमति के बिना महाराव होल्कर को भेंट देकर उससे अपना पीछा छुडा लिया और सन्धि कर ली।[3] जिससे अप्रसन्न होकर महाराजा माधवसिंह ने उनियारे पर सेना भेजी जिसके कई बार परास्त होकर लौट आने पर अन्त मे उन्होंने प्रतापसिंह को सेना सहित वहाँ भेजा। प्रतापसिंह और जयपुर महाराजा की सैनिक शक्ति के दबाव के कारण सरदारसिंह को विवश होकर जयपुर महाराजा से सन्धि करनी पड़ी। वास्तव में इस कार्य में प्रतापसिंह ने अपनी कार्यकुशलता का अच्छा परिचय दिया।[4] किन्तु प्रतापसिंह का जयपुर राजनीति मे इतना प्रभाव होने पर भी उसको जयपुर छोडना पड़ा। उस समय उसकी आयु 25 वर्ष की थी। घटना इस प्रकार हुई कि एक दिन जयपुर दरबार में एक ज्योतिषी ने अपनी विद्या का चमत्कार दिखलाकर उपस्थित सदस्यों को विस्मित कर दिया।[5] ज्योंही महाराजा से विदाई होने के लिये उसके सामने उपस्थित हुआ त्योंही उसकी दृष्टि प्रतापसिंह पर पड़ी। उसको देखते ही उसने जयपुर महाराजा माधवसिंह से निवेदन किया कि माचेडी के प्रतापसिंह के नेत्रो में एक चक्र है[6] जो उसकी भावी उन्नति का परिचायक है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि

---

1. रा. रा. अभि. बीकानेर, क्रमांक 364-556 बस्ता न. 52, 82 बन्डल 10, 1 पृ. 23, 1।
2. उनियारा कस्बा जयपुर से 70 मील दक्षिण में स्थित है।
3. रा. रा. अभि. बीकानेर क्रमांक 364, 1588 बस्ता न. 52, 196 बन्डल 10, 1 पृ. 23-24, 11।
4. (अ) वही, क्रमांक 419, 746, 747 बस्ता न. 62, 107 बन्डल 16, 4 5 पृ 1, 1-4, 5-6।
   (ब) श्यामलदास कृत वीर विनोद, पृ. 1376।
5. (अ) रा. रा अभि. बीकानेर, क्रमांक 364, 1588 बस्ता 52, 196 बन्डल 10, 1 पृ. 25, 11।
   (ब) श्यामलदास, वीर विनोद, पृ. 1376।
6. रा. रा अभि. बीकानेर क्रमांक 1243, 1260 बस्ता 172-1 75 बन्डल 15, 1 पृ. 1, 9।

वे आगे चलकर किसी विशाल साम्राज्य को स्थापना करेंगे। ज्योतिषी के इस कथन का जयपुर महाराजा पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा और उनके हृदय में द्वेषाग्नि भड़क उठी।[1]

प्रतापसिंह की प्रतिष्ठा और मान मर्यादा पहले से ही कुछ सरदारों को खटक रही थी। कारण यह था कि प्रतापसिंह प्रारम्भ से जयपुर राज्य के अधीन एक छोटा सा जागीरदार था जिनके पास केवल ढाई गाँव थे माचेड़ी राजगढ़ व आधा राजपुरा लेकिन माचेड़ी गाँव के नाम पर वो माचेड़ी वाला के नाम से पुकारा जाता था[2]

प्रतापसिंह इतना महत्वाकांक्षी और अवसरवादी था कि उसने अपनी मृत्यु से पहले एक ऐसे राज्य की स्थापना कर ली जिसका क्षेत्रफल 3158 वर्गमील था। जो जयपुर राज्य से स्वतन्त्र था। मुगल सरकार उसको स्वतन्त्र राजा मानती थी। प्रतापसिंह की बढ़ती हुई कीर्ति के कारण सभी लोग उसकी ओर आकर्षित होते थे।[3] प्रतापसिंह का यह उत्कर्ष कुछ लोगो को खटक रहा था उनको जयपुर महाराजा को बहकाने का एक अच्छा अवसर हाथ लगा। अनेक कुचक्रो और षड्यन्त्रो द्वारा विरोधी सरदारो ने माधोसिंह को यह कहकर भड़काया कि प्रतापसिंह उसको हटाकर स्वयं शासक बनना चाहता है। इससे प्रतापसिंह की जान पर आ बनी।[4]

ज्योतिषी के कथन को सुनकर जयपुर महाराजा को आशका हुई कि कहीं ऐसा न हो कि प्रतापसिंह आगे चलकर राज्य मे किसी प्रकार का उपद्रव खड़ा करे। अतएव उसने मन ही मन दृढ सकल्प कर लिया कि जैसे बने प्रतापसिंह को बन्दी बना लेना चाहिये।[5] इधर जयपुर महाराजा तो भावी अनर्थ की आशका एव राज्य की एकान्त हितेच्छा के भाव से प्रेरित हो प्रतापसिंह को वश मे लाने के लिये अनेक प्रकार के उपाय सोचने लगा और उधर प्रतापसिंह को जब इसकी सूचना मिली तब वे भी भावी विपत्ति से आत्मरक्षा के लिये उपाय सोचने लगा। जयपुर नरेश के व्यवहार से प्रतापसिंह भाग गया कि वे उसकी जान के ग्राहक हो रहे हैं। बहुत उधेड़ बुन के बाद उसने जयपुर से कही अन्यत्र चले जाने मे ही अपना कल्याण समझा।[6]

---

1. (अ) वही, क्रमाक 404, 556 बस्ता 62, 82 बन्डल 2, 1 पृ. 7, 1।
   (ब) श्यामलदास—वीर विनोद पृ 1376।
2. रा. रा. अभि बीकानेर, क्रमांक 364, 404 बस्ता 52, 62 बन्डल 10, 2 पृ. 27, 7
3. रा. रा. अभि, बीकानेर, क्रमाक 1588 बस्ता 196 बन्डल न. 1 पृष्ठ 12।
4. वही, क्रमाक 364, 404, 557 बस्ता न. 52 62, 82 बन्डल 10, 21, पृष्ठ 27, 7, 1।
5. वही, क्रमांक 1588, 1243, 1260 बस्ता 196, 172 175 बन्डल 1, 15, 1 पृष्ठ 13, 1/9।
6. रा. रा. अभि. बीकानेर, क्रमाक 364, 404, 1260, 556 बस्ता 52, 62, 75 बन्डल 10, 2, 1, पृष्ठ 28, 29, 7, 9, 2।

सन् 1765 मे जब प्रतापसिंह जयपुर नरेश माधव सिंह के साथ आखेट खेलने के लिये बाहर गये। वहाँ किसी ने उस पर गोली चलाई।[1] जो उन्हें लगी नहीं वरन् उनके वक्षस्थल के पास से निकल गई। जयपुर नरेश का मनोरथ उसके मन ही में रह गया। यह घटना सन् 1765 मे घटित हुई।[2]

इस घटना से प्रतापसिंह को पक्का विश्वास हो गया कि जयपुर का महाराजा उसको मरवाना चाहता है अत उसने जयपुर मे अधिक समय तक ठहरना उचित नही समझ जयपुर छोड दिया। पहले राजगढ गया जहाँ उसने अपने इष्ट मित्रों को सारा हाल सुनाया।[3] किन्तु मान-अपमान का कुछ विचार न कर प्रतापसिंह ने अपने जातिवालों को अपने स्वामी नरेश के प्रति अचल भक्ति और श्रद्धा का भाव बनाये रखने का उपदेश दिया। इसके पश्चात् सन् 1765 मे वे जयपुर छोडकर भरतपुर के लिये रवाना हो गया।[4] उस समय भरतपुर का शासक जवाहरसिंह था जो 30 दिसम्बर 1763 को भरतपुर की गद्दी पर बैठा था।[5] जिस समय जवाहरसिंह भरतपुर का शासक बना उस समय मुगल सम्राट की शक्ति क्षीण हो चुकी थी और सारे देश मे धीरे-धीरे अराजकता फैल रही थी। ऐसी स्थिति मे जवाहरसिंह ने अपने राज्य की सीमा विस्तार करने के प्रयत्न आरम्भ कर दिये।[6] प्रतापसिंह के भरतपुर पहुँचने पर जवाहरसिंह को बडी प्रसन्नता हुई और डेहरा।[7] ग्राम में एक राजमन्दिर मे वे आदर पूर्वक ठहराया गया। बाद मे वह गाव उन्हे वासा खर्च मे दे दिया

---

1 गोली चलाने वाला हमीर दे का कुशवाहा खगारसिंह था जिसे उपयुक्त सेवा के उपलक्ष मे जयपुर राज्य की ओर से पाल गाव मिला था (क्रमांक 1588 बस्ता 196 बण्डल 1 पृष्ठ 13)।

2 रा. रा अभि. बीकानेर, क्रमाक 1588, 404, 746, 747 बस्ता 199, 62, 107 बण्डल 1, 2, 4, 5 पृष्ठ 13-14, 8, 1-4, 5-6।

3. वही, क्रमाक 364, 1588, 1243, 419 बस्ता न. 52, 196, 172,62 बण्डल न 10, 1, 15, 16 पृष्ठ 30, 14, 3, 3,।
(ब) श्यामल दास, वीर विनोद पृष्ठ 1377।

4 रा रा. अभि बीकानेर, क्रमाक 1588, 1260, 148, 906 बस्ता 196, 175, 21, 126, बण्डल 1, 1, 31, पृष्ठ 14-15, 9, 6, 4-5।

5. वही, क्रमाक 364, 1243, बस्ता 52, 172, बण्डल 10, 15 पृष्ठ 31, 32, 3।

6. वही, क्रमाक 1588, 1260, 148, 906, बस्ता 196, 175, 21, 126, बण्डल 1, 1, 31, पृष्ठ 16-9, 6, 4-5।

7. डेहरा-गाँव भरतपुर से 14 मील दूर पश्चिम में है।

गया।[1] डेहरा ग्राम में शरण देने का मुख्य कारण यह था कि डेहरा के जाटों ने अराजकता फैलाकर डेहरा को अपने अधीन करना चाहा लेकिन उसी समय प्रतापसिंह के भरतपुर महाराजा जवाहरसिंह की शरण मे चले जाने पर शत्रुओं से निर्भीक रहने के लिये यह ग्राम उन्हे कासे खर्च मे दिया गया।

डेहरा ग्राम मे शरण देने का मुख्य कारण यह था कि डेहरा के जाटो ने अराजकता फैलाकर डेहरा को अपने अधीन करना चाहा लेकिन उसी समय प्रतापसिंह के भरतपुर महाराजा जवाहरसिंह की शरण में चले जाने पर शत्रुओ से निर्भीक रहने के लिये ग्राम उन्हे कांसे खच मे दिया गया।[2]

जयपुर और भरतपुर के संघर्ष मे प्रतापसिंह की भूमिका—

प्रतापसिंह ने जयपुर और भरतपुर की राजनीति मे कुछ ऐसे कार्य किये जिससे भरतपुर और जयपुर के सम्बन्ध बिगड गये। जयपुर और भरतपुर के सम्बन्ध बिगडने के निम्न कारण थे—

1 ज्योतिषी के कहने पर जयपुर महाराजा द्वारा प्रतापसिंह को मरवाने के प्रयासो से घबरा कर प्रतापसिंह ने भरतपुर महाराजा जवाहरसिंह के यहाँ शरण ली।

---

1 (अ) रा रा अभि बीकानेर क्रमांक 364, 133, 134, 439, 181, 403, 404, बस्ता 52 18, 19, 26, 62, बण्डल 10 2, 5, 2, 1, 2, पृष्ठ 33, 4, 2, 8, 41, 6, 11।

(ब) शर्फ खानजादा शर्फउद्दीन अहमद-मुरक्का ए मेवात पृष्ठ 326।

(स) रा रा अभि बीकानेर, क्रमाक 746, 747, बस्ता 107, बण्डल 4,5 पृष्ठ 1-4, 4-5-6।

(द) श्यामलदास—वीर विनोद पृष्ठ 1376।

(क) गगासिंह कृत भरतपुर राजवश का इतिहास (1637-1768 भाग 1 पृष्ठ 316।

(ख) मनोहरसिंह राणावत-भरतपुर महाराजा जवाहरसिंह 1763-1768 पृ 79 मे लिखा है कि प्रतापसिंह ने जयपुर से भाग कर भरतपुर महाराजा *सूरजमल के यहाँ शरण ली। लेकिन यह कथन सत्य प्रतीत नही होता* क्योकि प्रतापसिंह ने भरतपुर मे शरण 1765 ई मे ली थी और उस समय भरतपुर पर जवाहरसिंह का शासन था क्योंकि सूरजमल की मृत्यु 25 दिसम्बर 1763 ई मे हो गई थी और 30 दिसम्बर 1763 को भरतपुर का शासक जवाहरसिंह हो गया था।

(ग) के आर कानूनगो—हिस्ट्री आफ जाट्स पृष्ठ 172 मे लिखा है कि जवाहरसिंह ने ही प्रतापसिंह को डेहरा ग्राम मे शरण दी थी।

2 रा रा अभि बीकानेर, क्रमाक 906, 1588 बस्ता 126, 196 बण्डल 31, 1 पृ. 8, 16।

उस कारण जयपुर महाराजा माधवसिंह और भरतपुर नरेश जवाहरसिंह के सम्बन्ध बिगड़ने शुरू हो गये।[1]

2. जवाहरसिंह अपने छोटे भाई नाहरसिंह की पत्नी को जो अत्यन्त रूपवती थी, अपनी रानी बनाना चाहता था। इस बात का पता जब नाहरसिंह को लगा तब वह अपनी पत्नी सहित जयपुर महाराजा माधवसिंह की शरण में चला गया। वहाँ उसे निर्वाह के लिये निवाइ और माधवपुर ग्राम दे दिये। जब सन् 1864 ई. में नाहरसिंह ने जयपुर राज्य के अन्तर्गत मनोहरपुर नामक ग्राम में जहर खाकर आत्म हत्या करली तब जवाहरसिंह ने जयपुर नरेश को लिखा कि नाहरसिंह की पत्नी को उसे सौंप दे किन्तु महाराजा ने अपने शरणागत को उसे सौंपने से इन्कार कर दिया तो भरतपुर महाराजा जवाहरसिंह ने जयपुर के महाराजा माधवसिंह पर यह आरोप लगाया कि तुम नाहरसिंह की विधवा को अपनी पत्नी बनाना चाहते हो, इसलिये भरतपुर नहीं भेजना चाहते हो। जब माधवसिंह को इस मिथ्या आरोप का पता लगा तो उन्होंने जवाहरसिंह को बड़ा उत्तर भेजा। नाहरसिंह की पत्नी ने जवाहरसिंह की कुदृष्टि की शिकार होने से बचने हेतु जहर खाकर आत्महत्या करली।[2]

3. जवाहरसिंह ने इस समय अपनी सैन्य शक्ति काफी बढ़ा ली थी। उसकी सेना में प्रसिद्ध यूरोपियन सेना नायक समरू और रैने मादे भी थे। जयपुर की सीमा पर जवाहरसिंह की बढ़ती हुई शक्ति के कारण जयपुर महाराजा माधवसिंह उससे ईर्ष्या करता था और वह उस समय की प्रतीक्षा में था जब वह उसका सिर

---

1. (अ) वही, क्रमांक 1588, 133, 134 139, 181, 403, 404 बस्ता 196, 18, 19, 26, 62 बण्डल 1, 10, 2, 5, 2, 1, 2 पृ. 16, 4, 2, 8, 41, 6, 11।
   (ब) शरफ खानजादा अहमदउद्दीन-मुरक्का-ए मेवात पृ. 326।
2. (अ) राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर, क्रमांक 364, 906, 1260, बस्ता 52, 176, 175 बण्डल 10, 3, 1, पृ. 34, 21, 11।
   (ब) कानूनगो, के आर ... हिस्ट्री आफ जाट्स पृ. 205।
   (स) पाण्डेराम, भरतपुर अप टू 1826 पृ 98।
   (द) रा. रा. अभि बीकानेर, क्रमांक 906, 1260 बस्ता 126, 175 पृ 31, 1।
   (च) वेण्डल, एन एकाउन्ट आफ दि जाट किंगडम (यदुनाथ सरकार कृत अंग्रेजी अनुवाद)। पृ. 108।
   (ख) श्यामलदास, वीर विनोद, पृ 1304।
   (ग) मिश्रण, सूर्यमल्ल, वंश भास्कर भाग 4, पृ 3718 319।
   (घ) नरेन्द्रसिंह—थर्टी डिसायसिव बेटल्ज आफ जयपुर पृ. 20 9।

झुका सके ।[1] इसके अतिरिक्त जवाहरसिंह ने अपनी सफलताओ के उपलक्ष मे अपनी खोई हुई उपाधि महाराज सवाई जवाहरसिंह भारतेन्दु के नाम से भी ऊँचा कर लिया ।[2] जवाहरसिंह ने अपनी सफलता के समय जयपुर के महाराजा माधोसिंह के द्वारा भेजे गये टीके को ठुकरा दिया ।[3] कानूनगो का मानना है कि जवाहर सिंह यादव वश की अपनी प्रतिष्ठा को महसूस कर रहा था इसलिये उसने जयपुर के टीके को अस्वीकार कर दिया ।[4] इस प्रकार जवाहरसिंह ने अपने पूवजों की भाँति जयपुर के महाराजा को अपना स्वामी मानने से तथा अधीनता स्वीकार करने से इन्कार कर दिया इसका परिणाम यह हुआ कि दोनों के सम्बन्ध और अधिक कटु होते चले गये ।[5]

4 उदयपुर के महाराजा अमरसिंह (द्वितीय) ने 25 मई 1708 को जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह से अपनी पुत्री चन्द्र कुवर का विवाह इस शर्त पर किया था कि उससे उत्पन्न पुत्र ही आमेर राज्य का उत्तराधिकारी होगा चाहे वो बडा न भी हो ।[6] सवाई जयसिंह की मृत्यु के बाद उसके बडे पुत्र ईश्वरीसिंह और छोटे पुत्र माधोसिंह (जो उदयपुर की राजकुमारी चन्द्रकुवर से पैदा हुए थे और वैवाहिक शर्तों के अनुसार ज्येष्ठ न होते हुए भी आमेर राज्य का शासक बनना चाहता था) के बीच उत्तराधिकार सघर्ष प्रारम्भ हो गया था । माधोसिंह और ईश्वरीसिंह के बीच बगरू[7] के मैदान म युद्ध हुआ । इस युद्ध मे मराठे माधोसिंह की तरफ स लडे थे और भरत पुर के महाराजा सूरजमल ने इस युद्ध मे माधोसिंह के खिलाफ उसके बडे भाई और प्रतिद्वन्दी ईश्वरीसिंह की सहायता दी थी । इसका परिणाम यह हुआ कि सूरजमल

---

1 (अ) गगासिंह—भरतपुर राजवंश का इतिहास (163 7-1668 ई) पृ 316
(ब) पाड राम—भरतपुर अप टू 1826 पृ 90
(स) सरकार ज एन मुगल साम्राज्य का पतन भाग 2, पृ 336
2 (अ) वे डल—एन एकाउन्ट आफ दि जाट किंगडम पृ 107 108
(ब) गुलाम अली—पर्शियन टैक्टस 3
(स) कानूनगो के आर —हिस्ट्री ऑफ जाट्स पृ 210-214
3 पाडेराम—भरतपुर अप ट 1826 पृ 97
4 वही ।
5 (अ) सरकार जे एन —हिस्ट्री आफ जयपुर स्टेटस पृ 3 16-17
(ब) ग्राउज एफ एस —एडिस्ट्रिक्ट मेमोयर्स आफ मथुरा पृ 183-85
6 (अ) मिश्रण सूर्यमल—वश भास्कर पृ 3017-18
(ब) श्यामलदास—वीर विनोद भाग 2 पृ 7 69-771
(स) कनल टाड—एनाल्स एन्ड एन्टिक्वीटीज आफ राजस्थान भाग 1 पृ 318
(द) गहलोत सुखवीर सिंह—राजस्थान का सक्षिप्त इतिहास पृ 109
7 बगरू साभर से 23 मील दूरी पर स्थित है ।

के साथ माधोसिंह के सम्बन्ध अब उतने अच्छे नही रहे । उनमे कटुता आ गयी और दोनो के बीच एक दरार पड गई थी ।[1]

5 अलवर का किला जयपुर के महाराजा माधोसिंह के अधिकार मे था। उस पर जवाहरसिंह ने अपने पिता सूरजमल के कहने पर 1756 ई मे अधिकार में कर लिया और माधोसिंह की सेना को पराजित होकर लौटना पड़ा। इसलिये माधोसिंह ऐसे अवसर की तलाश मे था जब भरतपुर के महाराजा जवाहरसिंह जाट से अपनी पराजय का बदला ले सके ।[2]

6. जब मराठा जयपुर के साथ व्यस्त थे तब भरतपुर के महाराजा जवाहरसिंह ने समय का फायदा उठाना चाहा और उसने जयसिंह और तारासिंह के साथ 25,000 हजार सिक्ख सेना को लेकर 1765 ई. मे जयपुर राज्य मे प्रवेश किया और जयपुर राज्य की रेवाडी सीमाओ पर लूटमार करना आरम्भ कर दिया ।[3]

माधोसिंह ने महसूस किया कि वह अकेला इस खतरे का मुकाबला नही कर सकेगा। अत उसने मराठो से सहायता लेने का निश्चय किया और मल्हार राव होल्कर तथा महादजी सिन्धिया से सहायता करने की प्रार्थना की।[4] इस पर मल्हार राव होल्कर ने शान्ताजी वावले और गोविन्दराव के अधीन अपनी सेना भेजी। सिन्धिया ने अच्चुन राव गनेश को जो कि किशनगढ़ के आसपास लूटमार कर रहा

---

1 (अ) मिलेक्शन्स फ्राम द पेशवा दफ्तर भाग 2, न. 11 एवं 26।
(ब) कानूनगो के. आर.—हिस्ट्री आफ जाट्स पृ 203।
(स) पाण्डे राम—भरतपुर अप टू 1826 पृ. 98।
(द) नरेन्द्रसिंह—थर्टी डिसायसिव वेल्ट्ज आफ जयपुर पृ 208।
(क) सर देसाई जी. एस. ऐतिहासिक पत्र व्यवहार भाग 2, पृ. 68।

2. (अ) पे. द. (नई) प. स, 189।
(ब) पे द पृ. 128।
(स) भरतपुर महाराजा जवाहरसिंह (1763-2763 ई.) पृ. 69।

3. (अ) मिश्रण सूर्यमल-वश भास्कर, पृ. 3720-27।
(ब) केलेन्डर आफ पर्शियन कोरसपोण्डेन्स भाग 2, पृ. 789-91।
(स) पाण्डेराम-भरतपुर अप टू 1826 पृ. 98।
(द) वेण्डल—एन एकाउण्ट आफ दि जाट किंगडम पृ. 108।

4. (अ) ड्राफ्ट खरीता बण्डल 11, ड्राफ्ट न. 53।
(ब) सिलेक्शन फाम द पेशवा दफ्तर, भाग 29 पृ. 192।
(स) दास हरिचरण—चहारगुलजार ईशुजाई पृ. 495-9।
(द) जे. एन सरकार—मेमोयर्स आफ रेनेमादे पृ. 40-50।

झुका सके।[1] इसके अतिरिक्त जवाहरसिंह ने अपनी सफलताओं के उपलक्ष मे अपनी खोई हुई उपाधि महाराज सवाई जवाहरसिंह भारतेन्दु के नाम से भी ऊंचा कर लिया।[2] जवाहरसिंह ने अपनी सफलता के समय जयपुर के महाराजा माधोसिंह के द्वारा भेजे गये टीके को ठुकरा दिया।[3] कानूनगो का मानना है कि जवाहर सिंह यादव वश की अपनी प्रतिष्ठा को महसूस कर रहा था इसलिये उसने जयपुर के टीके को अस्वीकार कर दिया।[4] इस प्रकार जवाहरसिंह ने अपने पूर्वजो की भांति जयपुर के महाराजा को अपना स्वामी मानने से तथा अधीनता स्वीकार करने से इन्कार कर दिया इसका परिणाम यह हुआ कि दोनो के सम्बन्ध और अधिक कटु होते चले गये।[5]

4 उदयपुर के महाराजा अमरसिंह (द्वितीय) ने 25 मई 1708 को जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह से अपनी पुत्री चन्द्र कुवर का विवाह इस शर्त पर किया था कि उसस उत्पन्न पुत्र ही आमेर राज्य का उत्तराधिकारी होगा चाहे वो बडा न भी हो।[6] सवाई जयसिंह की मृत्यु के बाद उसके बड़े पुत्र ईश्वरीसिंह और छोटे पुत्र माधोसिह (जो उदयपुर की राजकुमारी चन्द्रकुवर से पैदा हुए थे और वैवाहिक शर्तों के अनुसार ज्येष्ठ न होते हुए भी आमेर राज्य का शासक बनना चाहता था) के बीच उत्तराधिकार सघर्ष प्रारम्भ हो गया था। माधोसिंह और ईश्वरीसिंह के बीच बगरू[7] के मैदान मे युद्ध हुआ। इस युद्ध मे मराठे माधोसिंह की तरफ से लड़े थे और भरतपुर के महाराजा सूरजमल ने इस युद्ध मे माधोसिंह के खिलाफ उसके बड़े भाई और प्रतिद्वन्दी ईश्वरीसिंह की सहायता दी थी। इसका परिणाम यह हुआ कि सूरजमल

---

1 (अ) गगासिंह—भरतपुर राजवश का इतिहास (163 7-1668 ई) पृ 316
(ब) पान्डे राम—भरतपुर अप टू 1826 पृ 90
(स) सरकार जे एन मुगल साम्राज्य का पतन भाग 2, पृ 336
2 (अ) वैन्डल—एम एकाउन्ट आफ दि जाट किंगडम पृ 107-108
(ब) गुलाम अली—पर्सियन टैक्टस 3
(स) कानूनगो के आर —हिस्ट्री ऑफ जाट्स पृ 210-214
3 पान्डेराम—भरतपुर अप ट 1826 पृ 97
4 वही।
5 (अ) सरकार जे एन —हिस्ट्री आफ जयपुर स्टेट्स पृ 3 16-17
(ब) ग्राउज, एफ एस —एडिस्ट्रिक्ट मेमोयर्स आफ मथुरा पृ 183-85
6 (अ) मिश्रण सूर्यमल—वश भास्कर पृ 3017-18
(ब) श्यमलदास—वीर विनोद भाग 2 पृ 7 69-771
(स) कर्नल टाड—एनाल्स एन्ड एन्टिक्वीटीज आफ राजस्थान भाग 1, पृ 318
(द) गहलोत सुखवीर सिंह—राजस्थान का सक्षिप्त इतिहास पृ 109
7. बगरू सामर से 23 मील दूरी पर स्थित है।

के साथ माधोसिंह के सम्बन्ध अब उतने अच्छे नही रहे। उनमे कटुता आ गयी और दोनो के बीच एक दरार पड़ गई थी।[1]

5 अलवर का किला जयपुर के महाराजा माधोसिंह के अधिकार मे था। उस पर जवाहरसिंह ने अपने पिता सूरजमल के कहने पर 1756 ई. मे अधिकार मे कर लिया और माधोसिंह की सेना को पराजित होकर लौटना पड़ा। इसलिये माधोसिंह ऐसे अवसर की तलाश मे था जब भरतपुर के महाराजा जवाहरसिंह जाट से अपनी पराजय का बदला ले सके।[2]

6 जब मराठा जयपुर के साथ व्यस्त थे तब भरतपुर के महाराजा जवाहरसिंह ने समय का फायदा उठाना चाहा और उसने जयसिंह और तारासिंह के साथ 25,000 हजार सिक्ख सेना को लेकर 1765 ई. मे जयपुर राज्य मे प्रवेश किया और जयपुर राज्य की रेवाड़ी सीमाओ पर लूटमार करना आरम्भ कर दिया।[3]

माधोसिंह ने महसूस किया कि वह अकेला इस खतरे का मुकाबला नही कर सकेगा। अत उसने मराठो से सहायता लेने का निश्चय किया और मल्हार राव होल्कर तथा महादजी सिन्धिया से सहायता करने की प्रार्थना की।[4] इस पर मल्हार राव होल्कर ने शान्ताजी बावले और गोविन्दराव के अधीन अपनी सेना भेजी। सिन्धिया ने अच्युत राव गनेश को जो कि किशनगढ के आसपास लूटमार कर रह

---

1. (अ) मिलेक्शन्स फ्राम द पेशवा दफ्तर भाग 2, न. 11 एवं 26।
   (ब) कानूनगो के. आर —हिस्ट्री आफ जाट्स पृ 203।
   (स) पाण्डे राम—भरतपुर अप टू 1826 पृ. 98।
   (द) नरेन्द्रसिंह—थर्टी डिसायसिव बेल्ट्ज आफ जयपुर पृ 208।
   (क) सर देसाई जी एस. ऐतिहासिक पत्र व्यवहार भाग 2, पृ. 68।
2. (अ) पे. द (नई) प. स, 189।
   (ब) पे द. पृ. 128।
   (स) भरतपुर महाराजा जवाहरसिंह (1763-2763 ई.) पृ. 69।
3. (अ) मिश्रण सूर्यमल-वंश भास्कर, पृ. 3720-27।
   (ब) केलेन्डर आफ पर्शियन कोरसपोण्डेन्स भाग 2, पृ. 789-91।
   (स) पाण्डेराम-भरतपुर अप टू 1826 पृ. 98।
   (द) वेण्डल—एन एकाउण्ट आफ दि जाट किंगडम पृ. 108।
4. (अ) ड्राफ्ट खरीता बण्डल 11, ड्राफ्ट न. 53।
   (ब) सिलेक्शन फ्राम द पेशवा दफ्तर, भाग 29 पृ. 192।
   (स) दास हरिचरण—चहारगुलजार ईशुजाई पृ. 495-9।
   (द) जे. एन. सरकार—मेमोयर्स आफ रेनेमादे पृ. 40-50।

था, जयपुर महाराजा को सहायता[1] देने का आदेश दिया और उसको पाँच हजार रुपया प्रतिदिन देने का वायदा किया। मराठों द्वारा जयपुर को इस प्रकार की सहायता देने से जवाहरसिंह निराश हो गया क्योंकि वह अकेला उनसे नहीं लड़ सकता था। अतः जवाहरसिंह ने मराठों के हस्तक्षेप करने के कारण जयपुर के महाराजा माधोसिंह के साथ समझौता कर लिया।[2]

7 जयपुर और भरतपुर की सीमायें एक दूसरे से इस प्रकार से जुड़ी हुई थीं कि इन दोनों राज्यों में सीमा विवाद हमेशा बना रहता था। कामा का परगना (जो माधोसिंह के अधीन था) उस पर जवाहरसिंह अधिकार करना चाहता था। और उतना ही इलाका उसकी सीमा के पास देना चाहता था। किन्तु जब माधोसिंह ने कामा परगना देने के लिए इन्कार कर दिया तो जवाहरसिंह नारनौल जिले में (जो कि जयपुर में था) युद्ध की तैयारियाँ करने लगा। इस प्रकार जवाहरसिंह की बढ़ती हुई शक्ति से जयपुर राज्य के पूर्वी भाग में एक बहुत बड़ा खतरा पैदा हो गया था।[3]

प्रतापसिंह का भरतपुर छोड़कर जयपुर प्रस्थान—

जब जयपुर और भरतपुर में पहले से ही सम्बन्ध खराब थे तब भरतपुर नरेश जवाहरसिंह ने जयपुर नरेश माधवसिंह के राज्य में सन् 1767 ई में हस्तक्षेप करने का निश्चय किया।[4] प्रतापसिंह ने उनके इस अनुचित और अन्यायपूर्ण आचरण का घोर विरोध किया लेकिन उसका कुछ परिणाम न हुआ।[5] तब प्रतापसिंह ने जयपुर महाराजा के पास इस षड्यन्त्र का समाचार कहला भेजा और उसने जयपुर

---

1 (अ) खरीता, सेक्शन इन्दौर बण्डल।
(ब) सिलेक्शन्स फ्राम दि पेशवा दफ्तर भाग, 29, दिसम्बर 1765।
(स) वेण्डल—एन एकाउण्ट ऑफ दी जाट किंगडम पृ 108।

2 (अ) सिलेक्शन्स फ्राम दि पेशवा दफ्तर भाग 29 पृ 192।
(ब) सरकार जे एन मेमोयर्स आफ दि रैनेमादे पृ. 49 50।
(स) मिश्रण सूर्यमल—वंश भास्कर पृ 3720 27।
(द) राणावत मनोहरसिंह—भरतपुर महाराजा जवाहरसिंह 1763–1768 पृ 79।

3. (अ) सिलेक्शन्स फ्राम द पेशवा दफ्तर भाग 29 पृ 192।
(ब) नरेन्द्रसिंह—ईश्वरीसिंह का जीवन चरित्र एपेण्डिक्स 111।
(स) केलेण्डर आफ पर्शियन कोरसपोण्डेन्स पृ 789 91।
(द) कानूनगो के आर हिस्ट्री आफ जाट्स भाग 1, पृ 206।
(क) वेण्डल—एन एकाउण्ट आफ दि जाट किंगडम पृ 107।

4 रा रा अभि बीकानेर क्रमांक 364 1243 बस्ता 52, 172 बण्डल 10, 15 पृ 34 35 3।

5 वही, क्रमांक 1588, 137 बस्ता 196, 19 बण्डल 1, 2 पृ 17, 2।

महाराजा को न केवल सावधान करना अपना कर्तव्य समझा अपितु उसने युद्ध भूमि में उनका साथ देने की प्रतिज्ञा भी की।[1]

पुष्कर तीर्थ यात्रा करने के बहाने जवाहरसिंह जयपुर राज्य पर आक्रमण करना चाहता था। इस कार्य में उसने प्रतापसिंह की सहायता माँगी पर उसने यह उत्तर दिया कि आमेर उनका देश है अतः वे उसके विरुद्ध शस्त्र ग्रहण नहीं करेंगे।[2] लेकिन जवाहर सिंह पर उसका कोई प्रभाव नहीं पडा तब उसने स्पष्ट शब्दों में उसको उत्तर दिया कि आपको मेरी प्रार्थना स्वीकार नहीं है, अतः विवश होकर मैं जयपुर जा रहा हूँ क्योकि उसकी रक्षा करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ और यह कहकर सन् 1767 में डेहरे से जयपुर के लिये रवाना हो गया।[3]

प्रतापसिंह सन् 1767 में डहरे से जयपुर के लिये रवाना हुआ। यह किंवदन्ती प्रचलित है कि जिस दिन वह डेहरे से जयपुर को प्रस्थान करने वाला था उसी दिन उसकी किसी दासी को भूमि के नीचे गडी हुई बहुत सी मोहरें और रुपये मिले।[4] उसने दौडकर प्रतापसिंह से यह समाचार निवेदन किया जिसे सुनकर उन्हें प्रसन्नता हुई। उन्होंने उस सारे धन को ऊँटों पर लदवा कर उसी समय जयपुर

---

1 राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर क्रमांक 364, 403, बस्ता 52, 62 बन्डल 10 1 पृ० 35 8

2 (अ) वही, क्रमांक 1588, 1243 148 बस्ता 196, 172, 21 बन्डल 1, 15 1 पृ० 18 4 8
(ब) श्यामलदास—वीर विनोद पृ० 1376
(स) शरफ स्याजादा सरफ उद्दीन अहमद—मुरक्का अ मवान पृ 46—326

3 (अ) रा रा० अभि बीकानेर क्रमांक 364, 403, बस्ता न० 52 62, बन्डल 10 1 पृ० 35, 37 9
(ब) वही क्रमांक 746 747 बस्ता 107 बन्डल 4 5 पृ० 1—4 5—6

4 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 364 बस्ता 52, बन्डल 10 पृ० 37 मे लिखा है कि रावप्रतापसिंह की एक चेली के बच्चा होने वाला था। इसलिये प्रतापसिंह बाहर बैठे ईश्वर-आराधना में लीन था एक क्षुधा पीडित वृद्धा शीत से काँपती हुई उनके दरबार पर आ गई। उस वृद्धा की दीन दशा देखकर प्रतापसिंह ने अत्यन्त करुणार्द्र होकर उसको भोजन कराया और अपनी प्रेम भरी वाणी से उसे तृप्त एवं सन्तुष्ट कर दिया। वृद्धा ने प्रतापसिंह को कुछ गडी हुई सम्पत्ति बता कर अपनी कृतज्ञता का परिचय दिया। अपनी ओर उक्त स्त्री के कृतज्ञता पूर्ण भाव देखकर प्रतापसिंह को अपने ऊपर हर्ष हुआ वे उसको माता के समान मानने लगे और उसकी ओर उसका पूज्य भाव हो गया। इस धन से उन्होंने भरतपुर त्याग कर गुप्त रूप में कुछ सेना इकट्ठी करली।

जाने की तैयार करली ।[1] प्रतापसिंह के जयपुर पहुँचने पर जयपुर के महाराजा ने उसका स्वागत किया तथा सेना का संचालन प्रतापसिंह के हाथ मे दे दिया।[2]

मावन्डा युद्ध की ओर

भरतपुर नरेश जवाहरसिंह मराठो के विरुद्ध एक ऐसा संघ बनाना चाहता था जो उनका सम्मिलित रूप मे विरोध कर सके । इसलिये जवाहरसिंह ने इस संघि का गठन करने के लिये जोधपुर के राजा विजयसिंह को पुष्कर आमंत्रित किया ।[3] इधर जवाहरसिंह ने अपने दल बल सहित 5 नवम्बर 1767 को पुष्कर तीर्थ यात्रा के लिए प्रस्थान कर दिया ।[4] उसके साथ उसका प्रधान सेनापति (यूरोपियन) समरु भी था ।[5] उन्होंने सीधा मार्ग छोड तोरावटी से होकर पुष्कर जाने की चेष्टा की ।[6] जब वह जयपुर से केवल तीन मन्जिल दूर रह गया तब उसने जयपुर नरेश माधवसिंह

---

1 (अ) वही, क्रमांक 1588, 1343, 148, 403, बस्ता नं॰ 196, 172, 21, 62, बन्डल 1, 15, 1, 1 पृ॰ 10, 19, 6, 9, 9, 10, 0—10
(ब) श्यामलदास—वीरविनोद पृ॰1377

2 रा॰ रा॰ अभि॰ बीकानेर 364 133 746, 747 बस्ता नं॰ 52, 18, 107 बन्डल 10, 10, 4 5 पृ॰ 38—39 5, 1—4, 5 -6

3. (अ) रेऊ— मारवाड का इतिहास भाग 1 पृ 382
(ब) पाण्डे राम—भरतपुर अप टू 1826 पृ॰ 98
(स) सरकार जे॰ एन॰— मैमोयर्स आफ रेने मादे बंगाल पास्ट एन्ट प्रजन्ट अप्रेल, जून 1937 जिल्द 53 भाग 2 क्रम संख्या 106

4 (अ) रा॰ रा॰ अभि॰ बीकानेर क्रमांक 364, बस्ता 52 बन्डल 10 पृ॰ 39
(ब) वही क्रमांक 404 419, 746 747, बस्ता 62 62 107 107 बन्डल 2, 164, 5 पृ॰ 12, 2 1–4 5–6
(स) मायाराम—राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर अलवर के पृ॰ 61 पर लिखा है कि ज्वारसिंह 1768 मे पुष्कर यात्रा पर गया था जो सही प्रतीत नहीं होता है । क्योंकि जब मावन्डा का युद्ध 14 दिसम्बर 1767 मे हो गया तब 1768 मे जवाहरसिंह का पुष्कर यात्रा पर जाने का कोई प्रश्न ही पैदा नही होता ।
(द) पुष्कर अजमेर से 7 मील उत्तर मे स्थित है ।

5 रा॰ रा॰ अभि॰ बीकानेर, क्रमांक 1588 बस्ता 196 बन्डल 1 पृ॰ 20

6 वही क्रमांक 1588, 404, 419 बस्ता 196, 62, 62 बन्डल 7, 1, 16 पृ॰ 21, 21, 2

को यह कहला भेजा कि मैं पुष्कर स्नान करने के निमित्त आया हूँ जिस मार्ग से जाने की आज्ञा हो उस मार्ग मे स्नान करूँ।[1]

प्रत्युत्तर स्वरूप महाराजा माधोसिंह ने उसे यह लिख भेजा कि यदि वह केवल पुष्कर स्नानार्थही आया है और एक मित्र की तरफ जाना चाहता है तो वह अपने साथ इतनी बडी सेना लेकर क्यों आया है। यदि जाना ही है तो थोडी सेना को लेकर चला जाय।[2] लेकिन अपने वंश और परम्परागत रीति के अनुसार उसको मेरी राज्य सभा में उपस्थित होकर मुझे (माधोसिंह) भेंट देना चाहिये।[3] यदि वह अपनी वंश और परम्परागत रीति तथा प्रथा का पालन करना अपना कर्तव्य नही समझता है तो फिर उसे उससे आज्ञा लेने की क्या आवश्यकता है। माधोसिंह ने चेतावनी दी कि जवाहरसिंह वापस लौटते समय जयपुर राज्य की सीमा मे पैर रखने का साहस न करें अन्यथा उसे इसका फल भुगतना पडेगा।[4]

जवाहरसिंह ने जयपुर नरेश की इस धमकी पर कुछ ध्यान नहीं दिया। वह अपने सैन्य बल[5] से मदचूर हो रहा था। वह दिनांक 5 नवम्बर 1767 को पुष्कर स्नान करने हेतु रवाना हुआ। रास्ते मे जयपुर राज्य की सीमा के अन्तर्गत

---

1. (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 364, 416 बस्ता न० 52, 62 बन्डल 10, 13 पृ० 40—41, 1
   (ब) तारीख झुंझनू पृ० 175
   (स) सरकार जे० एन० मेमायर्स आफ रेने मादे पृ० 70
2. (अ) क्रमाक, 364, बस्ता 52, बन्डल 10, पृ० 41 (रा० रा० अभि० बीकानेर)
   (ब) दास हरिचरण—चहार गुलजार ई—शुजा ई (इलियट और डाउसन जिल्द 8 पृ० 25)
   (स) गगासिंह—भरतपुर राजवंश का इतिहास 1637–1768 पृ० 313
3. (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1588 बस्ता 196 बन्डल 1, पृ० 22
   (ब) तारीख झुझनू पृ० 175
   (स) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 419 बस्ता 62 बन्डल 16 पृ० 4
4. (अ) वही, क्रमाक 364, 419 बस्ता 52, 62 बन्डल 10, 13 पृ० 42 2
   (ब) सरकार जे० एन०—मैमोयर्स आफ रेने मादे पृ० 48—49
5. (अ) रा०रा०अभि० बीकानेर, क्रमांक 1588 बस्ता 196 बन्डल 1 पृ० 22
   (ब) शरफ खानजादा शर्फउद्दीन अहमद—मुरक्का—ए मेवात पृ० 327
   (स) दास हरिचरण—चहार गुलजार ईशुजाई (इलियट और डाउसन भाग 8 पृ० 225 के अनुसार इस समय महार जवाहरसिंह के पास एक लाख पैदल और एक हजार छोटी तोपें तथा 60 हजार घुड़सवार थे।

डीग मे लूटमार करता हुआ दिनाक 6 नवम्बर 1767 को पुष्कर पहुँचा।[1] वहाँ उसने पुष्कर मे स्नान किया।[2] जवाहरसिंह ने पुष्कर पहुँच कर जोधपुर नरेश महाराजा विजयसिंह से भेट की और दोनो ही शासक पगडी बदल भाई बन गये।[3] इस समय उनके बीच यह सधि हुई कि दोनो मिलकर मराठो को उत्तरी भारत से बाहर निकालें। पूर्वी भाग मे जवाहरसिंह को, मालवा का प्रदेश माधोसिंह को, तथा गुजरात, जोधपुर नरेश विजयसिंह को सौंपा गया और यह निश्चय किया गया कि तीनो ही शासक अपने अपने प्रदेशो मे मराठो का सयुक्त रूप से विरोध करेंगे और उनको उत्तरी भारत से बाहर निकाल देंगे।[4] जोधपुर नरेश ने भी जयपुर पर आक्रमण मे जवाहरसिंह का साथ देना सहर्ष स्वीकार कर लिया।[5]

जोधपुर के महाराजा विजयसिंह तथा माधवसिंह के बीच यद्यपि सम्बन्ध खराब थे फिर भी जोधपुर नरेश ने मोतमद खा नामक एक दूत को भेजकर[6] इस आशय का सदेश कहला भेजा कि माधवसिंह भी पुष्कर आये जिससे सब एक मत होकर मराठो को नर्मदा पार उतारने का निश्चय करें। माधोसिंह मालवा प्रान्त ले। विजयसिंह गुजरात पर अधिकार करें और जवाहरसिंह अन्तर्वेद की ओर अपना राज्य बढा लें। इस प्रकार विजयसिंह ने माधोसिंह को मराठा विरोधी सघ मे

---

1 (अ) वही, क्रमाक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 43
(ब) वेन्डल—एन एकाउन्ट आफ दि जाट किंगडम पृ० 107
(स) दास हरिचरण—चहार गुलजार ईशुजाई (इलियट और डाउसन) भाग 8 पृष्ठ 225

2 (अ) ओझा गौरी शकर—जोधपुर राज्य का इतिहास भाग 2 पृ० 718
(ब) ड्राफ्ट खरीता बन्डल 11 ड्राफ्ट 344

3 (अ) रा०रा०अभि० बीकानेर क्रमाक 1588 बस्ता 196 बन्डल 1 पृ० 32
(ब) मिश्रण सूर्यमल्ल—वश भास्कर भाग 4 पृ० 3719
(स) श्यामलदास—वीर विनोद, भाग 4 पृ० 1304
(द) कर्नल टाड कृत राजस्थान का इतिहास—पृ० 653
(क) जोधपुर राज्य की ख्यात, जिल्द 3 पृ० 41

4. (अ) श्यामलदास—वीर विनोद, भाग 3 पृष्ठ 1304।
(ब) सरकार जे० एन० हिस्ट्री ऑफ जयपुर स्टेट्स पृष्ठ 318।
(स) ओझा गौरीशकर—जोधपुर राज्य का इतिहास भाग 2 पृ० 718-19।

5. (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 364 बस्ता 52, बन्डल 10 पृ० 43।
(ब) शरफ खानजादा शर्फउद्दीन अहमद-मुरक्का ए-मेवात पृ० 327।
(स) रेऊ विश्वेश्वर नाथ—मारवाड का इतिहास भाग I पृ० 382।

6 रा० रा० अभि बीकानेर क्रमाक 1588 बस्ता 196 बन्डल 1, पृ० 22।

सम्मिलित होने के लिये उसे पुष्कर आने का निमन्त्रण दिया।[1] प्रत्युत्तर स्वरूप माधवसिंह ने दूत के माध्यम से कहला भेजा कि वह अस्वस्थ है अत आने मे असमर्थ है साथ ही उसने यह भी कहला भेजा कि विजयसिंह के मतव्य से उसकी पूर्ण महानुभूति है। वस्तुत जवाहरसिंह और माधोसिंह के बीच पहले से सम्बन्ध खराब चल रहे इसलिये उसने बीमारी का बहाना बनाकर पुष्कर जाने मे इन्कार कर दिया।[2] साथ ही साथ माधोसिंह ने यह भी सन्देश भेजा कि विजयसिंह ने जयपुर राज्य के सेवक और एक किसान को अपना पगडी बदल भाई बनाकर राठोडो की प्रतिष्ठा को धक्का पहुचाया है।[3]

इस सन्देश पर जवाहरसिंह क्रोधित हुआ क्योंकि वह अपने को एक राजा का पुत्र मानता था। अत उसने माधोसिंह को चेतावनी भरा सदेश भेजा कि यदि कामा और खोरी के परगने उसको नही सौंपे गये तो वह जयपुर राज्य के प्रदेशो को लूटेगा।[4] माधोसिंह जवाहरसिंह की सैनिक शक्ति से चिंतित तो था ही, जवाहरसिंह की, चेतावनी से एक नई समस्या पैदा हो गई। अब उसके सामने केवल दो ही तरीके थे

---

1 (अ) रा० रा० अभि० बीकानर, क्रमाक 416 बस्ता 62 बन्डल 13 पृ० 3
(ब) मिश्रण सूर्यमल—वश भास्कर भाग 4 पृ० 3720

2 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 364 बस्ता 52, बन्डल 10 पृ० 44–45
(ब) श्यामलदास—वीर विनोद भाग 3, पृ० 1303 –4
(स) पाण्डेराम—भरतपुर अप टू 1826 पृ० 98
(द) जयपुर राज्य की ख्यात, भाग 4 पृ० 46

3 (अ) सरकार जे० एन० मेमायर्स आफ रेनेमादे पृ० 48—49
(ब) जयपुर राज्य की ख्यात भाग 4 पृ० 46
(स) सरकार जे० एन० हिस्ट्री आफ जयपुर स्टेट्स पृ० 318
(द) मिश्रण, सूर्यमल—वश भास्कर पृ० 3720
(क) ग्राऊज एफ० एस० ए डिस्ट्रिक्ट मेमोयर्स आफ मथुरा पृ० 184

4 (अ) सिलेक्शन्स फ्राम दि पेशवा दफ्तर जिल्द 29, पृ० 162
(ब) जोधपुर ख्यात भाग 3, पृ० 399
(स) मिश्रण सूर्यमल—वश भास्कर भाग 4 पृ० 3720
(द) ओझा गौरी शकर—जोधपुर राज्य का इतिहास भाग 2, पृ० 719
(क) शरफ खानजादा शर्फुद्दीन अहमद—मुरक्का ए मेवात पृ० 326

या तो वह मामा और मोरी के परगने जवाहरसिंह को सौंप दे या फिर उससे युद्ध करे।[1] माधोसिंह ने जवाहरसिंह से युद्ध करना ही अधिक उचित समझा।[2]

जोधपुर नरेश राजा विजयसिंह ने स्वयं तो जवाहरसिंह के साथ जयपुर के विरुद्ध शस्त्र उठाना स्वीकार नहीं किया परन्तु अपने तीन हजार घुड़सवार इस युद्ध में भेजकर उसकी सहायता की।[3] प्रतापसिंह तो जाटाधिपति से लोहा लेने के लिये पहले ही तैयार था जयपुर नरेश माधवसिंह ने अपने सब सरदार तथा सैनिकों को एकत्रित कर युद्ध के लिए तैयारी करली।[4]

माचेड़ी के प्रतापसिंह को छोड़कर सभी ने युद्ध का समर्थन किया।[5] ठाकुर राजसिंह शेखावत ने उससे (प्रतापसिंह) से इसका कारण पूछा तब प्रतापसिंह ने जवाब दिया कि वह जिस दिन भरतपुर छोड़कर यहाँ आया उसी दिन उसने जवाहरसिंह के विरुद्ध युद्ध का फैसला कर लिया था। महाराजा माधवसिंह उसकी (प्रतापसिंह) की बुद्धिमता और कृतज्ञतापूर्ण वचनों को सुनकर अत्यन्त सन्तुष्ट और प्रसन्न हुए।[6] सभी सरदारों का विचार था कि लड़ाई सावर ग्राम के पास हो लेकिन घूला[7] का ठाकुर दलेलसिंह इस बात पर सहमत नहीं हुआ। उसने कहा कि वहाँ जवाहरसिंह को राठोड़ा से सहायता मिलने की संभावना है इसलिये उक्त गाँव से कुछ दूर मावन्डा नामक स्थान पर उसका मार्ग रोककर युद्ध किया जाय तो अवश्य विजय प्राप्त होगी। यह सलाह उचित एवं युक्ति होने से सभी को पसन्द आ गई।[8] दीवान हर सहाय बख्शी गुरुसहाय और घूला के ठाकुर दलेलसिंह की अध्यक्षता

---

1 (अ) दास हरिचरण—चहार गुलजार ईशुजाई इलियट और डाउनसन भाग 8 पृ० 225
   (ब) नरेन्द्रसिंह—थर्टी डिमायसिव बन्टल्स आफ जयपुर पृ० 211
2 (अ) जोधपुर, भाग 3, पृ 399
   (ब) मिश्रण सूर्यमल —वंश भास्कर भाग 4 पृ० 3720
3 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 1588 बस्ता 196 बन्डल 1 पृ० 22 23।
4 (अ) वही, क्रमांक 364 बस्ता 52, बन्डल 10, पृ० 46
   (ब) तरीख ए इम्मर पृ० 177
5 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 416 बस्ता न०62, बन्डल 13 पृ०2
6 राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर, क्रमाक 403 बस्ता सख्या 62 बन्डल सख्या। पृष्ठ सख्या 9
7 घूला जयपुर के पूर्व में 25 मील की दूरी पर स्थित है।
8 (अ) राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर क्रमांक 1586 बस्ता सख्या 196 बन्डल सख्या 1 पृ० 22
   (ब) तवारीख इम्मर पृ० 177

कई सरदार[1] जवाहरसिंह का मान ध्वस्त करने के लिए एकत्रित हो गये और पुर महाराजा की सेना ने पुष्कर और भरतपुर के बीच डेरा डाला।[2]

चूँकि जवाहरसिंह ने पुष्कर में अपना कुछ समय बरबाद किया। इसलिए समर पाकर माधोसिंह ने अपनी सेना की स्थिति अच्छी कर ली और 16 हजार इसबार नये भर्ती कर लिये।[3] जब जवाहरसिंह ने पुष्कर से भरतपुर की ओर

(अ) शरफ खानजादा—शर्फउद्दीन अहमद ने मुरक्का ऐ मेवात के पृ० 327—28 में जयपुर के महाराजा की ओर से लडने वालो की सूची निम्न प्रकार दी है।

1 नवाब मिर्जा साबित खाँ खानजादा—रईस खसावली बिरादर नवाब जुल्फीकार खाँ का भाई।

2. राव राजा प्रतापसिंह रईस माचेडी। उर्फ अलवर वाली रियासत अलवर

3 घूला के ठाकुर दलेलसिंह

4 दीवान हरसहाय व बख्शी गुरसहाय।

(ब) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 364 बस्ता 52 बन्डल 16 पेज 48—49 के अनुसार निम्न जागीरदार भी जयपुर नरेश माधवसिंह की ओर से लडने आये थे—

1 ठाकुर दलेलसिंह का कनिष्ट पुत्र लक्ष्मणसिंह शेखावत गुमानसिंह, राजसिंह, सीकर के राव शिवसिंह का बेटा, लक्ष्मणसिंह धानुता के ठाकुर बुद्धसिंह। ठाकुर शिवदास शेखावत, ठाकुर रघुनाथसिंह डटावे के ठाकुर नाहरसिंह, राजसिंह जसोत के भान सिंह ठाकुर बख्तावरसिंह।

(स) कीर्तिसिंह, जवानसिंह, शत्रुशाल, अमरसिंह बरवाडे के राव पृथ्वीसिंह, उनियारे के नरुका राव सरदारसिंह भूपालसिंह शेखावत।

(द) चौमू के नाथावत ठाकुर जोधसिंह के पुत्र रत्नसिंह, सामोदर के नाथावत ठाकुर रावल उम्मेदसिंह

(क) नरुका हिम्मतसिंह, मेघसिंह अजतसिंह, नाथसिंह ,पिचणोत के सालम सिंह जालिमसिंह आदि।

2. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 364, 1588, 403, 416 बस्ता 52, 19, 6, 62, बन्डल 10 1, 13 पृ० 47—50, 22 9, 1
   (ब) तवारीख झझर पृ० 177,

3. (अ) सरकार जे० एन०—मुगल साम्राज्य का पतन भाग 2 पृ० 349
   (ब) दास हरिचरण—चहार गुलजार ईशुजाई इलियट डाउसन वा० 8 पृ० 226 के अनुसार 20 हजार पैदल और 20 हजार घुडसवारो की सेना माधोसिंह के पास थी।
   (स) श्यामलदास—वीरविनोद भाग 3, पृ० 1305 के अनुसार महाराजा माधोसिंह के पास 60 हजार सेना थी।
   (द) सरकार जे. एन, मेमोयर्स आफ रेने मादे पृ० 70 मे महाराजा माधोसिंह के पास 60 हजार सेना के होने का उल्लेख है।

प्रस्थान किया तब मारवाड के महाराजा विजयसिंह ने राजा जवाहरसिंह को भरतपुर तक पहुँचा देने का निश्चय किया लेकिन जवाहरसिंह ने इन्कार कर दिया। इस पर विजयसिंह जवाहरसिंह को देवलिया तक पहुँचाकर साभर लौट आया।[1] लेकिन जवाहरसिंह की सहायता के लिये 3 हजार सैनिकों के साथ महत्ता मनरूप और सिंघवी शिवचन्द्र को भेजा।[2] उस समय जवाहरसिंह के पास भी 70 तोपें बहुत से ऊँट 70—80 हजार सवार और कई हजार पैदल थे। वह अपनी सेना का भार समरु को सौंप कर आगे बढा।[3]

जयपुर के महाराज माधोसिंह को जब भरतपुर नरेश के आक्रमण का समाचार मिला तब उसने अपनी रुग्णावस्था के कारण उसका विरोध करने मे अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए सरदारो से कहा कि जवाहरसिंह ने कामा[4] के परगने पर अधिकार कर लिया है इसलिये अब उन्हे जवाहरसिंह से छेडछाड नही करनी चाहिये।[5] इस पर धूला के ठाकुर दलेलसिंह ने कहा कि "जब तक एक भी कछवाह जिन्दा है उस देश के किसी भाग पर शत्रुओं का अधिकार स्थायी नही रह सकता। हरसहाय और उसके भाई गुरुसहाय ने भी उसका समर्थन किया।[6]

उधर जयपुर की सहायता के लिये उदयपुर से 5 हजार और बूंदी से युवराज अजीतसिंह की अध्यक्षता मे 3 हजार सैनिक रणभूमि मे आ डटे।[7] धूला के ठाकुर दलेलसिंह जयपुर के दीवान हरसहाय तथा बख्शी गुरसहाय की अध्यक्षता मे समस्त सेना मावडा के पास तोरावाटी मे जवाहरसिंह का मार्ग रोकने के लिये आगे बढ़ी।[8]

---

1 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 1588 बस्ता 196 बन्डल 1 पृ० 22
(ब) जोधपुर राज्य का इतिहास भाग 3 400
(स) श्यामल वीर विनोद भाग 3 पृ० 1304
(द) रेऊ विश्वेश्वर नाथ मारवाड का इतिहास भाग 2, पृ 382

2 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 364 बन्डल 10 बस्ता 52, पृ० 50
(ब) सरकार जे० एन०—मेमोयर्स आफ रेने मादे पृ० 49

3 (अ) वही, क्रमांक 403 बस्ता 62, बन्डल 1 पृ० 10
(ब) शरफ खानजादा शर्फ उद्दीन अहमद—मुरक्का –ए" मेवात पृ० 328

4 कामा जयपुर के उत्तर मे 9 मील की दूरी पर स्थित है।

5 रा० रा० अभिलेखागार बीकानेर, क्रमांक 139, 834 बस्ता 19, 117 बन्डल 5, 2 पृ० 8,3

6 वही 1260 181, बस्ता 175 26 बन्डल 1- पृ० 1, 41

7 वही 361 831 बस्ता 52, 117 बन्डल 10, 2 पृ० 52 3

8 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 1588 139 बस्ता 196, 19 बन्डल 1, 5 पृ० 22 8
(ब) जोधपुर राज्य का इतिहास, भाग 2 पृ० 401

मावडा का युद्ध (14 दिसम्बर 1767)

14 दिसम्बर 1767 को जवाहरसिंह पुष्कर से मावण्डा[1] नामक स्थान पर जा पहुँचा। उस समय जयपुर की सेना उसका पीछा करती हुई बहुत करीब आ गई थी।[2] इस सेना को मार्ग में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। युद्ध छिड़ने से पूर्व राजसिंह नामक जयपुर की सेना के एक सरदार जवाहरसिंह की सेना में जा मिला।[3] जवाहरसिंह को इतना समय नहीं मिला कि वह अपनी सेना के लिये उपयुक्त मोर्चा ले सकता उसने अपनी सेना के सामने लग घाटी को देखते हुए अपना सारा सामान आगे भिजवा दिया और सेना के पिछले मोर्चा जमाने लगा। उसी समय अचानक जयपुर की सेना ने भरतपुर की सेना पर आक्रमण कर दिया।[4]

दोनों सेनाओं के बीच युद्ध प्रारम्भ हो गया। यह युद्ध 14 दिसम्बर 1767 को जयपुर और भरतपुर की सेनाओं के बीच मावन्डा नामक स्थान पर हुआ।[5] जयपुर की ओर से घूला का ठाकुर दलेलसिंह दीवान हरसहाय बख्शी और गुरुसहाय

---

1 मावन्डा—जयपुर से उत्तर में 60 मील की दूरी पर एक रेल्वे स्टेशन है।

2 (अ) सरकार जे० एन० मेम्वायर्स आफ रेने मादे पृ० 70
(ब) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 133, बस्ता 18 बन्डल 10, पृ० 5

3 वही क्रमांक 1588 139 1260, 181, बस्ता 196, 19, 175, 26 बन्डल 1 5 12 पृ० 24, 8, 1 41

4 (अ) वही क्रमांक 364, 133 बस्ता 52, 18 बन्डल 10, 10 पृ० 53, 5
(ब) वेंन्डल—एक एकाउन्ट आफ दि जाट किंगडम पृ० 108
(स) सिलेक्शन्स फ्राम दी पेशवा दफ्तर व० 29 पृ० 192
(द) कानूनगो, के० आर० हिस्ट्री आफ जाट्स भाग 1, पृ० 208
(क) सिलेक्शन्स प्रथम दी पेशवा दफ्तर वा०, 3, 144
(ख) सरकार जे० एन०—हिस्ट्री आफ जयपुर स्टेट्स पृ० 318

5 (अ) गहलोत सुखवीरसिंह—राजस्थान के इतिहास का तिथिक्रम पृ० 69
(ब) श्यामलदास—वीर विनोद पृ० 1377 में लिखा है कि मावडा का युद्ध सन् 1766 में लिखा था। यह तारीख सही प्रतीत नहीं होती है।
(स) गंगासिंह—भरतपुर राजवंश का इतिहास 1637— 1768 के पृ० 313 में लिखा है कि मावण्डा का युद्ध 17 दिसम्बर 1767 को हुआ था। यह तारीख भी सही प्रतीत नहीं होती है। इसका कारण यह है कि जवाहरसिंह 14 दिसम्बर 1767 को ही मावन्डा पहुचा था और जयपुर की सेना ने उस पर आक्रमण कर दिया था तो फिर युद्ध की तारीख 14 दिसम्बर 1767 ही सही प्रतीत होती है क्योंकि ऐसी जानकारी कहीं नहीं मिलती कि दोनों सेनायें तीन दिन तक एक दूसरे के आमने सामने पड़ी रही हों इसलिये मावन्डा युद्ध की तारीख 14 दिसम्बर 1767 ही ज्यादा सही प्रतीत होती है।

सनी की अध्यक्षता म कई सरदारा न जवाहरसिंह जाट की सेना पर प्रचण्ड आक्रमण कर जाट सना म त्राहि त्राहि मचा दी।[1] लेकिन जाट सना ने जयपुर की सेना को आक्रमण का ऐसा जवाब दिया कि जयपुर की सना को पीछे हटना पडा। उस समय तक जयपुर की सना का तापखाना और पैदल सना पूणत युद्ध क्षेत्र तक नही पहुँच पाय थ।[2]

जयपुर की सेना का पीछ हटती दखकर जवाहरसिंह मैदान म युद्ध करने के लिय शीघ्रता स घाटी पार करन लगा लकिन जाट सना सना ने आधी घाटी भी पार नही की थी कि जयपुर की सना ने व्यवस्थित हाकर पीछे स जाट सेना पर भयकर आक्रमण कर दिया।[3]

इस पर जाट सना क वीरा ने डटकर कछवाह सना का मुकाबला किया। जाट क प्रसिद्ध सनानायक समरु और रत मादे ने तोपा स भयकर गोले बरसाये।[4]

---

1 (अ) शरफ खानजादा शफउद्दीन अहमद—मुरक्का—ए—मवात पृ० 327 28
(ब) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 364 1588 बस्ता 52 196 बन्डल 10 1 पृ० 47–49, 23

2 वही क्रमाक 364 1588 बस्ता 52 196 बन्डल 19, 1 पृ० 54 24
(ब) सरकार ज एन०—ममायस आफ रने माद पृ० 70

3 (अ) सरकार ज० एन० मैमायस आफ रन माद पृ० 70
(ब) मिश्रण सूयमल—वश भास्कर भाग 4 पृ० 3721
(स) गगासिह भरतपुर रा वश का इतिहास 1637—1768 पृ० 314

4 (अ) शरफ खानजादा शर उद्दीन अहमद—ए—मवात पृ० 327—28 म भरतपुर क महाराजा जवाहरसिंह की तरफ स लडन वालों की सूची निम्न प्रकार स दी है

1 नवाब जुल्फीकार खा रईस खमारनी जा महज दास्ती के लिहाज स शामिल हुआ था।
2 मिसर साहब फासीस जा राजा सूरजमल क जमान स रहता था और यह यूराप क तीन सौ बदमाश और आवारागर्दी सिपाहियो की एक पल्टन और एक तापखाना अपन साथ लाया था।
3 मदारीखाना मय बरकदिया।
4 रूप राम कटारा।
5 नवाब अलमन खा खानजादा मय वतन शाहर आबाद उसका राजा जवाहर सिंह न ल्हावा तिजारा क बाईस गाव की जागीर सनद अदा करके अपने हमराह लिया था।
6 नवाब नाजन खा खानजादा मय वतन माधरवली परगना किशनगढ जिस रान अन दखकर परगना माठ और महाका की फौजदारी इनायत करके लडाई म भजा।
7 फवाजदारेन कौम जाट

तापो के गोले का धुआ आकाश मे बादलो के समान चारो ओर आ गया लेकिन कछवाहा भी जी जान की बाजी लगा कर युद्ध के मैदान मे डटे रहे और जाट सना का सहार करत रहे ।[1]

प्रतापसिंह की जयपुर नरेश को सहायता

इस युद्ध मे प्रतापसिंह न भरतपुर नरेश जवाहरसिह जाट के विरुद्ध जयपुर महाराजा माधोसिह का साथ दिया ।[2] और जवाहरसिंह के विरुद्ध विजय दिलाने मे अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया ।[3]

इधर जवाहरसिह न भी वीरता का ऐसा अभूतपूव परिचय दिया कि जयपुर के बहुत से सरदारों ने महाराजा स भरतपुर नरेश स सधि कर लेने की प्रार्थना की । परन्तु धूला का ठाकुर दलेलसिह[4] इस प्रस्ताव स सहमत था । उसने इस सन्धि का घोर विरोध किया ।[5] अपने उत्साहपूर्ण वचनो से उसने अपन सैनिको को युद्ध करने के उत्तेजित किया । इसस जयपुर की वह सना जिसम पहले भरतपुर नरेश का ऐसा आतक छा गया था कि वह विजय की आशा छोडकर निरुत्साहित हो गयी थी, अब नवस्फूर्ति स सचालित हो उठी और उसन दुगने उत्साह स फिर लडना प्रारम्भ किया ।[6]

जयपुर की सना का सचालन का भार धूला के ठाकुर दलेल सिंह और भरतपुर की सना का नेतृत्व सिमरु के हाथो मे था ।[7] जयपुर के बड-बडे सरदार दीवान हरसहाय खत्री और बख्शी गुरसहाय खत्री धूला के दलेलसिह अपने छोटे पुत्र लक्ष्मणसिंह, शेखावत सावन्तदास सीकर के शिवसिंह का बेटा लक्ष्मणसिंह धानुते के ठाकुर बुद्धसिह शेखावत शिवदास इटावे का रघुनाथसिह, नाथावत नाहरसिंह और जोबनेर का ठाकुर धर्मसिंह अपन सब तीनों पुत्रो सहित इस युद्ध मे

---

1 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 364, 1588 बस्ता 52, 196 बन्डल 10, 1 पृ० 56, 24 ।
   (ब) अकाउन्ट आफ दी जाट किंगडम—पृ० 108 ।
   (स) दास हरिचरण—चहार गुलजार ईशुजाई (इलियट और डाउसन वा 8 पृ० 226) ।
   (द) श्यामलदास—वीर विनोद भाग 3 पृ० 1305 ।

2 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 133 बस्ता 18, बन्डल 10 पृ० 5 ।

3 वही, क्रमाक 1588 बस्ता 196 बन्डल 1 पृ० 25 ।

4. वही, क्रमाक 364 1260 बस्ता 52, 175 बन्डल 10, 1 पृ० 54—55, 2 ।

5 वही, क्रमाक 834, बस्ता 117 बन्डल 2 पृ० 3 ।

6 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1588 बस्ता 196 बण्डल । पृ० 26 ।

7 वही, क्रमाक 133 बस्ता 18 बण्डल 10 पृ० 5 ।

वीरगति को प्राप्त हुए।[1] तब मावेडी के प्रताप सिंह मेडा के जागीरदार ठाकुर सयोगसिंह नरुका ने पुत्र कुंवर म गतसिंह और मानपुर के ठाकुर इन्द्रसिंह को साथ लेकर जाटो की सना पर तीव्र वेग से आक्रमण किया जिसम भरतपुर की सेना के पैर उखड गये।[2] जवाहरसिंह घायल होकर माय रण भूमि स भाग निकला।[3] और मावन्डा स 16 कोस की दूरी पर वह रोड तहसील के कोराणा गाव मे आकर ठहरा और वहाँ एक जावरिय स अ न धावा की महरम पट्टी करा उसकी सेवा के बदले मे उसको कुछ भूमि दी फिर वहा से मिमक सहित अलवर होता हुआ भरतपुर जा पहुँचा[4] जयपुर की सेना ने जाटा की सेना का बहुत दूर तक पीछा किया।[5]

---

1 (अ) वही क्रमाक 364 239 181 बस्ता 52 19 26 बण्डल 105, 2 पृ० 56-57 8।
(ब) ओझा गौरीशकर, जोधपुर राज्य का इतिहास पृ० 714।
(स) गगासिंह—भरतपुर राजवश का इतिहास (1637 1768) पृ० 314।
(द) मिश्रण सूर्य मल्ल—वश भास्कर भाग 7 पृ० 3727।

2 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1586 824 1260 बस्ता न० 196 117 175 बण्डल न० 1 2 1 पृ० 22 3, 1।
(ब) वण्डल एन ऐकाउन्ट आफ दी जाट किंगडम पृ० 108।
(स) शरफ खानजादा शर्फउद्दीन अहमद मुरक्का ए मेवात पृ० 329।

3 (अ) रा० रा अभि बीकानेर, क्रमाक 64, 416, 139, 181 बस्ता 52, 62 19 26 बन्डल 10, 13, 5, ? पृ० 58 4, 8, 41।
(ब) वेन्डल, एन एकाउन्ट आफ दि जाट किंगडम पृ० 108।
(स) सरकार—जे० एन० समोयर्स आफ रेन मादे 49-54।
(द) दास हरिचरण—चहार गुलजार ईशुजाई (इलियट डाउसन) वा० 8 पृ० 226।
(क) सिलेक्शन्स फ्राम दि पेशवा दफ्तर वा० 29 पृ० 105 108, 192।

4 (अ) रा० रा० अभि बीकानेर, क्रमाक 1588, 834, 1260 बस्ता 196, 117 1, 175 बण्डल 1 2, पृ० 22-26 4 2।
(ब) तवारीख झून्झूनू पृ० 177।
(ब) खानजादा शर्फउददीन अहमद—मुरक्का ए मेवात पृ० 329।
(द) मिश्रण सूर्य मल्ल—वश भास्कर पृ० 3720-29।

इस युद्ध मे दोना ओर के लगभग 10 हजार सैनिक खेत रहे।[1] यद्यपि इस बात का ठीकठीक पता लगाना कठिन है कि इस युद्ध मे किसे विशेषक्षति उठानी पड़ी लेकिन इसमे कोई सन्देह नही कि माचेड़ी के प्रतापसिंह की वीरता से जय पुर को युद्ध मे विजय प्राप्त हुई और भरतपुर महाराजा जवाहरसिंह को पीठ दिखाकर भागना पड़ा।[2] लेकिन जितनी इस युद्ध मे हानि हुई थी। वह उसके सामने नगण्य है क्योकि इस युद्ध मे जयपुर की ओर से इतने अधिक राजपूत मारे गये कि बहुत से परिवारो मे केवल 8-10 वर्ष की उम्र के बालक ही बचे।[3] कामा का परगना जवाहरसिंह से लेने के जिस उद्देश्य से यह युद्ध लड़ा गया था वह पूरा नही हुआ।[4]

इस लड़ाई से माचेड़ी के प्रतापसिंह की वीरता का आतक जाटो पर इतना

---

1 (अ) सरकार यदुनाथ—मेमोयर्स आफ रेने माद पृ० 70।
(ब) वही मुगल साम्राज्य का पतन भाग 2, पृ० 360।
(स) गाउज, एम० एस ने अपनी पुस्तक ए डिस्ट्रिक्ट मेमोयर्स आफ मथुरा मे 5 हजार सैनिको का मारा जाना लिखा है।
(द) दास हरिचरण—चहार गुलजार ईशुजाई (इलियट डाउसन) वा० 8 पृ० 226 का यह कथन सही नही है कि इस युद्ध म जवाहरसिंह के 20 हजार सैनिक मारे गये थे क्योंकि रेने मादे जो इस युद्ध मे जवाहरसिंह की तरफ से लडा था उसने दोनो पक्षों के मारे जाने की सख्या अपने सस्मरण मे 10 हजार लिखी है। अत चाहर म दी गई सैनिक सख्या सही प्रतीत नही होती है।

2 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1588 834 1260 181 बस्ता 196 175, 26 बन्डल 10 2 1 2 पृ० 22 27 4 2 41-42।
(ब) तवारीख झुन्झुनू पृ० 177।
(स) शरफ खानजादा शरफउद्दीन अहमद—मुरक्का ए मवात पृ० 47।
(द) कानूनगो के० आर० हिस्ट्री आफ जाट्स पृ० 209।
(क) वेन्डल—एन एकाउन्ट आफ दि जाट किंगडम पृ० 108।
(ख) ग्राउज एफ० एस०—ए डिस्ट्रिक्ट मैमायस ऑफ मथुरा पृ० 184-85।
(ग) देहली क्रोनिकल पृ० 136

3 (अ) दास हरिचरण—चहार गुलजार इशुजाई पृ० 495-99।
(ब) मिश्रण सूर्यमल्ल—वश भास्कर पृ० 3720-29।
(स) वेंडल—एन एकाउन्ट आफ दि जाट किंगडम पृ० 108
(द) सरकार जे० एन०—ममोयर्स ऑफ रेने मादे पृ० 49-50।

4 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1260, 181 बस्ता 175, 26 बन्डल 1,2 पृ० 2, 41।

अधिक छा गया कि कुछ ही वर्ष बाद उसने अलवर का दुर्ग और प्रान्त को जाटो से छीन कर अपने लिए पृथक राज्य की स्थापना करली और वे कुछ भी नहीं कर सके।[1]

युद्ध समाप्त हो जाने पर प्रतापसिंह ने युद्ध का एक चित्र बनवाकर उसे जयपुर नरेश के पास भेज दिया और उसके साथ उन्होंने घायल सैनिको की एक सूची भी लगा दी।[2] जिसे देखकर अपने प्रधान शूरवीरो और सामन्तो के मारे जाने पर महाराजा ने हार्दिक शोक प्रकट करते हुए कहा कि हमारे मुख्य योद्धा और प्रधान सरदारो मे से प्रतापसिंह नरुका के सिवाय सब इस युद्ध मे खेत रहे।[3] उनमे से केवल प्रतापसिंह नरुका ने लडाई मे शत्रु का मान ध्वस्त कर अपनी जाति का गौरव एवं मेरी लाज रखी।[4] यह बात धीरे-धीरे फैलती हुई जब प्रतापसिंह के कानो तक पहुँची तब उन्होने जयपुर जाकर महाजा माधवसिंह से भेट की और उन्हे बधाई दी।[5] इस प्रकार प्रतापसिंह को अपने पक्ष मे मावन्डा युद्ध की सेवाओ को देखते हुए जयपुर महाराजा ने उसको माचेडी की जागीर फिर उन्हे लौटा दी जो पहले माधवसिंह के विरोध मे भरतपुर के शासक जवाहरसिंह जाट के यहाँ प्रतापसिंह के शरण लेने पर छीन ली गई थी। राजगढ मे उन्हे दुर्ग बनाने की भी आज्ञा प्रदान की।[6] यह आज्ञा सन् 1788 मे दी गई थी।[7] धूला वालो मे भी इस लडाई मे जयपुर राज्य को अच्छी सहायता मिली थी। जिसके उपलक्ष मे उन्हे एक लाख रुपय का पट्टा दिया गया।[8]

क्या प्रतापसिंह जवाहरसिंह के प्रति कृतघ्न था ?

भरतपुर के महाराजा जवाहरसिंह के आश्रयदाताओ ने प्रतापसिंह के जीवन चरित्र की निन्दा प्रमाणित करने मे अपना कल्पना शक्ति से मनमाना काम लिया है और अपने आश्रयदाता जवाहरसिंह के विरुद्ध शस्त्र ग्रहण करने से उन पर कृतघ्नता का दोष लगाया है।[9] कई इतिहासकार सकटग्रस्त महाराजा जवाहरसिंह का साथ छोड देने से प्रतापसिंह पर कृतघ्नता का दोषारोपण करते हैं लेकिन निष्पक्ष भाव से[10] विचार करने पर उनका यह आचरण औचित्यपूर्ण नही प्रमाणित होता क्योकि यदि

---

1 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1588 बस्ता 196, बन्डल 1 पृ० 22।
2 वही, क्रमाक 416 बस्ता 62 बन्डल 13 पृ० 5।
3 वही, क्रमाक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 59।
4 वही, क्रमाक, 416 बस्ता 62 बन्डल 13 पृ० 6।
5 वही, क्रमाक 1588 बस्ता 196 बन्डल 1 पृ० 28।
6 वही क्रमाक 1588, 1478 बस्ता 196, 186 बन्डल 1, 1, पृ० 28 2।
7 वही।
8 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 364 बस्ता 52, बन्डल 10 पृ० 60।
9 वही, क्रमाक 1588 बस्ता 196 बन्डल 1 पृ० 28 29।
10, वही, क्रमाक 364, बस्ता 52 बन्डल 10, पृ० 62।

वे युद्ध के समय जयपुर नरेश से मिल जाते तो अवश्य उक्त दोष के भागी माने जाते लेकिन उन्होंने लडाई छिडने से पहले ही उद्वेगपूर्ण भावों से प्रेरित होकर जाटाधिपति भरतपुर नरेश को खुले शब्दो मे अपना यह सकल्प बता दिया था कि यदि वह अपनी युद्ध की बात पर अटल रहेंगे तो मैं आपका साथ छोड दूँगा।[1] और अपनी जान पर खेल कर अपनी जन्मभूमि की रक्षा करूँगा।[4] तब उनके चरित्र पर कृतघ्नता का धब्बा किसी प्रकार नही लग सकता।[3] इसके अतिरिक्त उन्होने स्वदेश प्रेम से प्रेरित होकर सकट की स्थिति मे माधोसिंह का साथ दिया था।[4]

वास्तव मे प्रतापसिंह ने मावन्डा के युद्ध मे जयपुर नरेश की सहायता कर केवल अपने प्रताप और अभूतपूर्व स्वजाति स्नेह का परिचय दिया था। उनका यह कार्य निन्दनीय नही अपितु सराहनीय था।[5]

भरतपुर नरेश महाराजा जवाहरसिंह को यह आशा थी कि वह प्रतापसिंह की सहायता से जयपुर नरेश को अनायास ही पराजित कर देगा लेकिन प्रतापसिंह के हृदय में जातीयता का भाव दूर करने मे उसको सफलता नही मिली। प्रतापसिंह ने जब जयपुर छोडकर भरतपुर महाराजा जवाहरसिंह की शरण ली थी तब जयपुर महाराजा माधोसिंह ने उनकी माचेडी की जागीर छीन ली थी इसलिए प्रतापसिंह ने राजनीतिक उद्देश्य से प्रेरित होकर मावन्डा के युद्ध मे जयपुर के महाराजा माधोसिंह की सहायता की ताकि उनकी छीनी हुई जागीर वापस प्राप्त हो सके।[6]

इस प्रकार प्रतापसिंह के स्वदेश प्रेम तथा राजनीतिक उद्देश्य ने वास्तव मे जवाहरसिंह के सब मनोरथो पर पानी फेर दिया और मावन्डा के युद्ध मे प्रतापसिंह के कारण ही जयपुर नरेश माधोसिंह को विजय प्राप्त हुई और प्रतापसिंह भी अपनी माचेडी की जागीर प्राप्त करने मे सफल हुआ। उक्त स्पष्टीकरण से हम यह कह सकते हैं कि अपनी जन्म भूमि की रक्षा, स्वदेश प्रेम तथा राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए यदि प्रतापसिंह ने अपने आश्रयदाता भरतपुर नरेश जवाहरसिंह के विरुद्ध माधोसिंह का पक्ष लिया तो उसे विश्वासघात नहीं कहा जा सकता।[7]

---

1 वही, क्रमांक 403, बस्ता 62 बन्डल 1 पृ० 9।
2 (ब) शरफ खानजादा शर्फउद्दीन अहमद—मुरक्का ए मवात, पृ० 46।
3 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 1243, 148 बस्ता 172, 21 बन्डल 15, 1 पृ० 4 8।
4 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 1588 403 बस्ता, 196 62 बण्डल 1, पृ० 29-30, 8।
5 वही क्रमांक 364, 1243 148 बस्ता 52, 172, 21 बण्डल, 10, 15,1 पृ० 54, 4 8।
6 राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर, क्रमांक। 1588 403, बस्ता 196, 62 बण्डल 10 19 पृष्ठ 33 6।
7 राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, क्रमांक 364, 1243,148 बस्ता 52, 172, 21 बण्डल 10, 15, 1 पृ० 66, 67, 5, 9।

3

अलवर राज्य की स्थापना

मावन्डा युद्ध के चार दिन पश्चात जयपुर नरेश महाराजा माधोसिंह की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका बड़ा पुत्र पृथ्वीसिंह सन् 1768 ई० में जयपुर राज्य की गद्दी पर बैठा।[1]

जयपुर की राजनीति में प्रतापसिंह का बढ़ता हुआ प्रभाव

महाराजा पृथ्वीसिंह की बाल्यावस्था के कारण राज्य प्रबन्ध का भार उनकी माता चुन्डावत रानी जो मेवाड़ के देवगढ़ ठिकाने के ठाकुर जसवन्तसिंह की पुत्री को सौंपा गया।[2]

चुण्डावत रानी बहुत दिनों तक इस शासन प्रबन्ध का कार्य सुचारु रूप से नहीं चला सकी। *प्रतापसिंह ने इस समय राज्य प्रबन्ध में पूर्ण सहयोग देकर राज्य*

---

1 राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर क्रमांक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 67

(ब) शरफ खानजादा शफउद्दीन अहमद — मुरक्का ए मेवात पृ० 329

(स) क्रमांक 1589 बन्डल 2 बस्ता 196 पृ० 2 (रा० रा० अभि० बीकानेर)

2 वही क्रमांक 403, 1260 बस्ता 62 175 1 पृ० 11 1

कर्नल टाड ने अपनी पुस्तक राजस्थान का इतिहास में पृ० 655 पर यह लिखा है कि पृथ्वीसिंह की बाल्यावस्था के समय राज्य का सारा भार पृथ्वीसिंह की माता के हाथ में न होकर उसके भाई सवाई प्रतापसिंह की माता जो बड़ी पटरानी थी, के हाथ में था लेकिन यह कथन सही प्रतीत नहीं होता है क्योंकि पृथ्वीसिंह की मृत्यु के बाद जब उसका भाई प्रतापसिंह 17 अप्रेल 1778 को गद्दी पर बैठा तो उसकी अल्पावस्था के कारण राज्य भार उसकी माता ने अपने हाथ में ले लिया था।

की व्यवस्था मे बहुत कुछ सुधार किया तथा मुगल सेनापति मिर्जा नजफ खाँ[1] एव मराठो से अच्छे सम्बन्ध बनाकर राज्य की निरन्तर रक्षा करता रहा।

मुगल सेनापति मिर्जा नजफ खाँ का भरतपुर पर प्रथम आक्रमण 177 ई०

सन् 1770 मे मुगल सेनापति मिर्जा नजफ खाँ ने मराठो को अपनी ओर मिला लिया और उनकी सहायता मे जब भरतपुर पर 1770 मे प्रथम आक्रमण किया उस समय भरतपुर महाराजा नवलसिंह शासन कर रहा था।[2] प्रतापसिंह ने इस अवसर को हाथ से नही जाने दिया और उक्त आक्रमण मे उन्होने नजफ खाँ की सहायता कर उससे मित्रता स्थापित करली।[3]

प्रतापसिंह स्वतन्त्र शासक बनना चाहता था। इसलिए उसने अपने सभी सरदारो को एकत्रित कर इस विषय मे उनकी सम्मति ली। प्रतापसिंह द्वारा स्वतन्त्र राज्य की स्थापना का सकल्प सुनकर उसके सम्बन्धियो और मित्रो ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया।[4]

इस समय देश राजनीतिक एकता की दृष्टि स बहुत कमजोर था। मुगल साम्राज्य की शक्ति क्रमश क्षीण होती जा रही थी। जयपुर राज्य मे भी अव्यवस्था फैली हुई थी। नजफ खाँ के अत्याचार अन्याय और स्वेच्छाचारिता से जाट लोग तग

---

1 (अ) राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, क्रमाक 364, 403 बस्ता 52, 62 बण्डल 10, 1 पृ० 98।

(ब) मिर्जा नजफ खाँ ईरान का रहने वाला था। उसका जन्म 1737 मे इस्फहान म एक उच्च घराने मे हुआ था। वह अपनी बहन के साथ 18 वष की अवस्था मे भारत वष आया। आसफ उद्दोला के भाई आजुद्दोला के साथ इसकी बहिन का विवाह हुआ और यह अपने बहनोई के साथ 1765 मे इलाहबाद आया। जहाँ 1771 मे उसकी मुगल सम्राट शाह आलम से भेंट हुई। जिन्होने उसे अपना मन्त्री बनाया और नजफ खाँ को पचास हजार रुपये दिये और उसे अपनी सेना को सगठित करने के लिए कहा, इस प्रकार वह अपनी सेना को सगठित कर सम्राट के साथ कूच म रवाना हो गया। धीरे धीरे उन्नति करके मुगल साम्राज्य का गवर्नर बन गया 22 अप्रेल 1782 को उसका दिल्ली मे देहान्त हुआ।

2 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1589 403, बस्ता न० 196, 62 बण्डल 21, 1 पृ० 3 17

(ब) पाण्डेराम—भरतपुर अप टू 1826 पृ० 118

3 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 556, 364 बस्ता 82, 52 बण्डल 1, 10 पृ० 2 69

4 वही, क्रमाक 364, 1589, बस्ता 52, 196 बण्डल 10, 2 पृ० 69-70, 3

प्रतापसिंह की अनुपस्थिति मे उनसे मन-मुटाव रखने वाले सरदारो (महाराजा पृथ्वीसिंह और प्रतापसिंह के बीच वैमनस्य पैदा करने का अच्छा अव मिल गया।[1] राजसिंह नामक एक सरदार ने जयपुर महाराजा के समक्ष यह प्रस्त रखा कि प्रतापसिंह आपसे अप्रसन्न होकर राजगढ चला गया है। अतएव आप उससे सावधान रहना चाहिये और उसका दमन करने मे विलम्ब नही करना चाहिय

महाराजा पृथ्वीसिंह सरदार राजसिंह के कथन से प्रभावित हो गया और उस उसी समय सन् 1772 मे राजगढ पर आक्रमण करने की आज्ञा प्रदान कर दी।[3] इ पर राजसिंह और फिरोज खां[4] ने जयपुर के 40 000 सैनिको के साथ दलो मे विभक्त होकर राजगढ की ओर प्रस्थान किया।[5] और बसुवा नामक स्था पर घेरा डाला।[6] जब प्रतापसिंह को यह समाचार ज्ञात हुआ तो उन्होने अप मन्त्री छाजराम हल्दिया, उसके तीनो पुत्र दौलतराम, नन्दराम रामसेवक, मौजीरा जीवन खां तथा होशदार खां आदि सचिवो से परामर्श कर अपने सभी सरदार को परामर्श के लिए बुलाया।[7]

जब उसके सभी सरदार[8] राज्य सभा मे एकत्रित हुए तब उसने सभी जयपुर की सेना से युद्ध करने मे सहायता और उनकी स्वतन्त्र सम्पत्ति मांगी। इस पर प्रतापसिंह की सेवा मे उपस्थिति सभी सरदारो ने जयपुर की सेना से यु करने मे उसकी सहायता देने की प्रतिज्ञा की और युद्ध के प्रस्ताव का अनुमोद किया। प्रत्येक सरदार ने उसको इस विपत्ति मे साथ देने की प्रतिज्ञा की।[10]

---

1 वही, क्रमाक 403, बस्ता 62, बन्डल 1, पृ० 13

2 वही, क्रमाक 364, बस्ता 52, बन्डल 10, पृ० 78

3 वही, क्रमाक 403, बस्ता 62, बन्डल 1, पृ० 13

4 फीरोज खां महावत था जो राजमाता की विशेष कृपा होने के कारण कौसि का मेम्बर बन गय था। अन्त मे वह प्रतापसिंह के हाथ मारा गया जिस विवरण अन्यत्र दिया गया है।

5 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 79

6 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1589, बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 12

7 वही, क्रमाक 403 बस्ता 62, बन्डल 1 पृ० 13

8 निम्न सरदार राव प्रतापसिंह के समक्ष उपस्थित हुए पलवा, पाई, खो पाडा आदि स्थानो से अमरसिंह, विष्णुसिंह, भगवानसिंह शिवदानसिं जुझारसिंह समर्थसिंह खुशहालसिंह, सालिमसिंह, मगलसिंह छाजसिंह जगतसिं ईश्वरसिंह नयनसिंह अखपाल, अमरेश पदमसिंह शेरसिंह, अर्जुनसिंह, मेघसिं धीरसिंह, भगवतसिंह और दुर्जनसिंह आदि।

9 रा० रा० अभि० बीकनेर, क्रमाक 364, बस्ता 52, बण्डल 10 पृ० 80

10, वही, क्रमाक 1589 बस्ता 196, बन्डल 1, पृ० 12

सब सरदारो को युद्ध के लिए उत्साहित देखकर प्रतापसिंह ने अपनी सेना का एक भाग राजगढ की रक्षा के लिए छोडकर शेष सेना के साथ जयपुर की सेना का सामना करने के लिये प्रस्ताव किया।[1] जब राजसिंह को इसकी सूचना प्राप्त हुई तो वह फिरोज खां के साथ राजगढ की ओर बढा जहाँ प्रतापसिंह की सेना पहले ही से युद्ध के लिए उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।[2]

राजगढ के मुट्ठीभर सैनिकों ने निरन्तर दो माह तक जयपुर की विशाल सेना का सामना किया।[3] लेकिन जब उसका कोई परिणाम नही निकला तब प्रताप सिंह के नेतृत्व मे राजगढ के सैनिको ने इस युद्ध मे अपनी अद्भुत सैनिक प्रतिभा का परिचय दिया जिससे जयपुर की सेना भयभीत हो गयी और प्रतापसिंह के युद्ध कौशल को देखकर राजसिंह तथा फीरोज खां जैसे अनुभवी और पराक्रमी सेनापति भी चकित रह गये।[4]

इस लडाई मे पराजय के लक्षण देखकर राजसिंह शेखावत बहुत घबराया और उन्होंने जयपुर महाराजा को इस आशय का पत्र लिख भेजा कि निरन्तर दो माह से युद्ध चल रहा है लेकिन अभी तक हमें प्रतापसिंह को परास्त करने मे सफलता नही मिली है। सारी सेना हतोत्साहित हो रही है जिससे अब विजय प्राप्ति की आशा रखना दुराशा मात्र है।[5] सेना नायक का पत्र पाकर महाराजा पृथ्वीसिंह बडा भयभीत हुआ और उसे अपने मान रक्षा की बडी चिन्ता हुई। वास्तव मे प्रतापसिंह का उस पर ऐसा आतंक छा गया था कि उसने उससे क्षमा याचना की।[6]

प्रतापसिंह ने उसकी क्षमा याचना को स्वीकार कर लिया और अपने हृदय से सारा मन मुटाव दूर कर जयपुर महाराजा पृथ्वीसिंह से मिलने के लिये जयपुर को प्रस्थान किया।[7] जयपुर नरेश ने उसका यथोचित स्वागत किया। तत्पश्चात् प्रतापसिंह राजगढ लौट आया और अपनी शक्ति तथा राज्य विस्तार मे लग गया।[8]

सन् 1773 मे उसने कांकवाडी, अजबगढ, बलदेव गढ आदि स्थानो मे

---

1 वही क्रमाक 403, बस्ता 62, बन्डल 1 पृ० 14
2 वही, क्रमाक 1589, बस्ता 196, बन्डल 2, पृ० 12-13
3 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 364, बस्ता 52, बन्डल 10 पृ० 82।
4 वही, क्रमाक 746-47 बस्ता 107 बन्डल 4-5 पृ० 1-4, 5-6।
5 वही, क्रमाक 364, 403 बस्ता 52, 62 बन्डल 10, 1 पृ० 83-84, 14
6 वही, क्रमाक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2, पृ० 14।
7 राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर, क्रमाक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 14-15।
8 वही, क्रमाक 364, 746-47, बस्ता 52, 107 बन्डल 10, 4, 5 पृ० 85, 1-4, 5-6

गढ़िया बनवाई तथा अपनी शक्ति और राज्य विस्तार में लगा रहा।[1] नजफ खाँ का भरतपुर पर द्वितीय आक्रमण और प्रतापसिंह की नजफ खाँ को सहायता (1774)

मिर्जा नजफ खाँ ने भरतपुर पर द्वितीय आक्रमण 1774 में किया उस समय प्रतापसिंह ने मिर्जा नजफ खाँ की सहायता की। जिसके फलस्वरूप भरतपुर की सेना को आगरा का दुर्ग छोड़ने के लिये विवश होना पड़ा।[2]

इस सहायता के उपलक्ष में मिर्जा नजफ खाँ ने मुगल बादशाह शाह आलम (द्वितीय) से अनुरोध कर सन् 1774 में उसको 'राव राजा बहादुर की उपाधि", 'पंच हजारी मनसब" (पाँच हजार जात और पाँच हजार सवार) और माचेडी की जागीर दिलवाई। इस प्रकार प्रतापसिंह को मुगल बादशाह शाह आलम ने एक स्वतन्त्र राजा के रूप में स्वीकार कर लिया और उसकी माचेडी की जागीर हमेशा के लिये जयपुर से स्वतन्त्र करदी।[3]

---

1 वही क्रमांक 364 746-47 बस्ता 52, 107 बन्डल 10, 4, 5 पृ० 85, 1-4 5 6।

2 (अ) वही क्रमांक 1589, बस्ता 196 बन्डल 2, पृ० 6।
(ब) श्यामलदास—वीर विनोद भाग 4, पृ० 1377।

3 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर 364 747 419 बस्ता 52 107, 62 बन्डल 10 5 16 पृ० 86 5-6, 6
(ब) गहलोत सुखवीरसिंह—राजस्थान के इतिहास का तिथि क्रम पृ० 70
(स) डा० पद्मजा शर्मा ने अपने शोध महाराजा मानसिंह ऑफ जोधपुर एण्ड हिज टाइम्स के पृ० संख्या 15 पर यह लिखा है कि माचेडी के प्रतापसिंह ने 1780 ई० में जयपुर से एक स्वतन्त्र अलग राज्य माचेडी की स्थापना की थी।
(द) डा० पद्मजा शर्मा का कथन सही प्रतीत नहीं होता है क्योंकि 1774 में ही बादशाह शाह आलम ने उसे जयपुर से अलग एक स्वतन्त्र राजा के रूप में स्वीकार कर लिया था और उसकी जागीर माचेडी जयपुर राज्य से अलग कर दी गई थी।

• नकल शुक्र मुहम्मद शाह आलम बादशाह देहली बतारीख रोज एक शम्बा बिस्तुम शहर रमजानुल मुबारक सन् जुलूस मय मनत मनूस मुआफिक सन् 1187 हि० मुताबिक 14 आजारा माह वरिसानए मियादत व निजावत मर्तबत इमारत व इलायत मजिलत गतिजादे खिलाफत फस्से खाते मुशुआजत मिर्जा नजफ खाँ न आलि जाह व नोबत वारयाँ सिगारी कमनारी ने खानजादा ने दर्गाह आस्माजा व अकीदत असास बरनदास कलमी मे गरद हुकमे वाला सादिर सुद के प्रतापसिंह बन्द मुहब्बतसिंह मनसबे पंच हजारी जात पंच हजारी सवार व खिताब राव बहादुर अतारा आलम व नक्कारा सर अफराज शुद बाक पाज दहम शहरे रमजान सन् 15 जुलूस व मुजीव सम्दीक अलकाब कालमीगुद।

इसके पश्चात् 1775 मे प्रतापसिंह ने प्रतापगढ, मगुडा और सेन्थल आदि स्थानो मे गढ बनवाय ।[1]

अलवर राज्य की स्थापना 25 दिसम्बर 1775

इस प्रकार प्रतापसिंह एक स्वतन्त्र शासक बन गया । उसने अब आस पास के प्रदेश पर अधिकार करना शुरू किया जिससे उसके राज्य का विस्तार हो सके । इस नीति पर चलते हुए उसने सबसे पहिले अलवर के प्रसिद्ध किले पर अधिकार किया । इस समय अलवर का दुर्ग भरतपुर के अधीन था । लेकिन भरतपुर नरेश की इस गढ की ओर कुछ उपेक्षा दृष्टि थी । दुर्गाध्यक्ष[2] और सैनिकों को बहुत समय से वेतन नही मिला था इससे उनमे असतोष और अशान्ति फैल गयी थी ।[3] उन्होने वेतन के लिए अनेक बार भरतपुर नरेश से प्रार्थना की लेकिन उसने उनकी प्रार्थना पर कोई ध्यान नही दिया ।[4]

अन्त मे दुर्ग रक्षकों ने निराश होकर उक्त भरतपुर नरेश को अत्यन्त मर्मस्पर्शी भाषा मे अपना अन्तिम प्रार्थना पत्र लिख भेजा, जिसमे उन्होंने उससे अपने आर्थिक कष्ट जनित असन्तोष को खुले शब्दो मे प्रकट किया । अपने स्वामी से अपना हार्दिक भाव प्रकट कर स्वामी भक्त रक्षकों ने वास्तव मे अपने कर्तव्य का यथोचित पालन किया था परन्तु हृदयहीन भरतपुर नरेश पर इसका कोई प्रभाव नही पडा ।[5] भरतपुर नरेश की उदासीनता से झूंझला कर अपने निर्वाह एव प्राण रक्षा हेतु उन्होने प्रतापसिंह को इस आशय का प्रार्थना पत्र भेजा कि यदि वह उन लोगो का वेतन चुकाना स्वीकार करें तो वे अलवर का दुर्ग उसे समर्पित करने के लिए प्रस्तुत हैं ।[6]

---

1 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1589, 403, 420 बस्ता न० 196, 62, 82 बन्डल 2, 1, 17 पृ० 14-15, 16, 2, 2-
(ब) श्यामलदास—वीर विनोद, भाग 4 पृ० 1377 ।

2 फौजदार नवलसिंह दुर्गाध्यक्ष सिहाणे का लाल ठाकुरदास मुत्सद्दी और चूडामणी रामसिंह आदि दुर्गरक्षक थे ।

3 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 364, 556, बस्ता 52, 82 बन्डल 10, 1, पृ० 88, 2

4 (अ) वही, क्रमाक 1589 403, 420 बस्ता 196, 62, 62 बन्डल 2, 1, 17 पृ० 15 16 2
(ब) मेहता, एम० एन०—दि हिन्द राजस्थान पृ० 396

5 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 364, 556 बस्ता 52, 82 बन्डल 10, 1 पृ० 88 89, 2

6 वही, क्रमाक 364, 1589, बस्ता 51, 196 बन्डल 10, 2 पृ० 89, 16

प्रतापसिंह ने उनकी प्रार्थना को सहर्ष स्वीकार कर लिया[1] और खुशालीराम की सहायता से रुपयो की व्यवस्था कर उनका और उनके सैनिको का वेतन चुका दिया।[2]

खुशालीराम तथा अपनी सेना के साथ प्रतापसिंह ने मार्ग शीर्ष शुक्ला 3 सवत् 1832 (25 दिसम्बर 1775) सोमवार को अलवर के दुर्ग मे प्रवेश किया और माचेडी के स्थान पर अलवर को ही अपनी राजधानी बना कर अलवर राज्य की स्थापना की और अपना राज्याभिषेक कराया।[3] प्रतापसिंह का केवल अलवर दुर्ग पर अधिकार हो जाने से ही सतोष नही हुआ अपितु उसने बानसूर[4] तक आस-पास के सभी स्थानो पर अपना अधिकार कर लिया।[5] सन् 1775 मे बानसूर, रामपुर, हमीरपुर, नारायणपुर, मामूर, थानेगाजी आदि स्थानो पर भी प्रतापसिंह ने अधिकार कर लिया। इनमे से प्रत्येक स्थान पर दुर्ग का निर्माण करवाया इसी प्रकार जामरोली, रैनी, खेडजी, लालपुरा आदि अन्य स्थानो पर भी उसने अधिकार कर दुर्ग बनवाये।[6] प्रतापसिंह के सभी सम्बन्धियो मित्रो तथा जाति वालो ने उसे अपना मुखिया और राजा स्वीकार कर लिया और सभी ने उसको उपहार स्वरूप भेंट दी।[7]

---

1 वही, क्रमाक 133 148 बस्ता 18 21 बन्डल 10, 1 पृ० 6, 10

2 वही, क्रमाक 181, 420 बस्ता न० 26, 62 बन्डल न० 2, 1, 17 पृ० 31, 17, 3

3 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1589, 556 746-47 बस्ता 196, 82 107, बण्डल 2, 1, 4 5 पृ० 16 3, 1-4 और 5 6
उपरोक्त बस्तो के अनुसार अलवर राज्य की स्थापना की तिथिमार्ग शीर्ष शुक्ला 3 सवत् 1832 दी है जिसकी अग्रेजी तारीख इडियन एफेमेरीज वा० 6, पृ० 353 के अनुसार 25 दिसम्बर 1775 आती है। जबकि सुखवीरसिंह गहलोत न रास्थान के इतिहास का तिथिक्रम पृ० 71, श्यामलदास कृत वीर विनोद भाग 4 पृ० 1377, डा० रामपाण्डे कृत भरतपुर अप टू 1826 पृ० 118 मे अलवर राज्य की स्थापना की तारीख 25 नवम्बर 1775 दी है जो सही प्रतीत नही होती है क्योकि उक्त तिथी का एफेमेरीज का सनवर्शन 25 दिसम्बर 1775 आता है जो ज्यादा सही प्रतीत होता है।

4 बानसूर कस्बा, अलवर के पश्चिमोत्तर मे 20 मील की दूरी पर स्थिति है।

5 रा० रा० अभि० बीकानेर 1589, 139, 133 बस्ता 196, 19, 18 बन्डल 2 5 10 पृ० 16 8 6।

6 वही क्रमाक 364 1260 148, 181 बस्ता 52, 175 21 26 बन्डल 10 1 2 पृ० 90, 9, 9, 3।

7 वही, क्रमाक 1599, 419 420 556 139 133 बस्ता 196, 62, 62 82, 19 18 बन्डल 2, 16, 17, 5 10, पृ० 16, 9, 2, 3, 8, 6

प्रतापसिंह की प्रारम्भिक समस्यायें :

प्रतापसिंह के सामने कई आन्तरिक समस्याएँ आइ जिनका समाधान उन्होने बडी बुद्धिमता और साहस के साथ किया। उनकी प्रारंभिक समस्याएँ निम्न-लिखित थी।

प्रथम, अलवर के किले एव अन्य स्थानो पर अधिकार हो जाने के बाद भी लक्ष्मणगढ।[1] के दामावत नरुका सरदार स्वरूपसिंह ने न तो उसकी राजसता स्वीकार की और न ही उसे भेंट दी।[2] इसलिए प्रतापसिंह ने उस पर चढाई कर दी।[3] जिसका समाचार पाकर वह अपना गढ छोडकर भाग गया। प्रतापसिंह के सैनिको ने उसका पीछा किया। अन्त मे वह पकड कर अलवर लाया गया।[4] वह ऐसा हठी और दुराग्रही था कि लोगो के समझाने पर भी अपनी बात पर अडिग रहा और उसने प्रतापसिंह की अधीनता स्वीकार नही की[5] इसका फल उस बहुत शीघ्र भोगना पडा। वस्तुत वह बडा ही दुर्विनीत और दुष्ट था। उसके अशिष्टपूर्ण व्यवहार से चिढकर और आवेश मे आकर प्रतापसिंह ने उसे प्राण दण्ड की सजा दे दी।[6] बात ही बात म उसके किसी पार्श्ववर्ती सहचर ने अपनी तलवार से उसका सिर धड से अलग कर दिया।[7]

इस घटना के कुछ समय पश्चात प्रतापसिंह ने बैराठ[8] प्रदश पर आक्रमण

---

1 लक्ष्मणगढ अलवर के दक्षिण पश्चिम मे 20 मील की दूरी पर स्थित है।

2 श्यामलदास—वीर विनोद, भाग 4, पृ० 1377

3. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1589, 419 420 बस्ता 196, 62 बण्डल 2, 16, 17, पृष्ठ 10, 9, 2।

(ब) यह वही दामावत ठाकुर स्वरूपसिंह था जिसने राव राजा प्रतापसिंह को अपने अधिकृत ठिकाने की भूमि मे जयपुर से भरतपुर जाते समय भोजन तक नही बनाने दिया था।

4 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 364, 556, 123, 148 बस्ता 52 82, 18, 21 बण्डल 10, 1, 10, 1 पृ० 91, 3, 6, 9।

5 वही, क्रमाक 1589, 419, 420, 181 बस्ता 196, 62, 26, बण्डल 2, 16 17, 2 पृ० 17, 9, 2, 3।

6 वही, क्रमाक 556, 133, 148 बस्ता 82, 18, 21 बण्डल 1, 10, 1 पृ० 3, 6, 9।

7. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1589, 419, 420, 181 बस्ता 196, 62, 26 बण्डल 2, 16, 17, 2 पृ० 17-18, 9, 2, 3

8 बैराठ जयपुर के उत्तर पूर्व मे 52 मील की दूरी पर जयपुर दिल्ली रोड पर स्थित है।

करने का निश्चय किया क्योंकि अभी तक उसकी विजय महत्वाकांक्षा पूर्ण नहीं हुई थी ।[1]

प्रतापसिंह के समक्ष दूसरी महत्वपूर्ण समस्या यह थी कि सन् 1775 में पीपलखेड़े[2] के बुद्धसिंह नामक एक शाहजादी जागीरदार के मरने पर अहीरों और मेवों के बीच, परस्पर वाद विवाद उठ खड़ा हुआ । घटना इस प्रकार हुई कि उक्त जागीरदार के मरने पर उसकी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी कोई नहीं था ।[3] अहीर चाहते थे कि जागीर पर प्रतापसिंह का अधिकार हो मेव उस जागीर को गोविन्दगढ़ तथा धोसावली के नवाब जुल्फीकार खाँ के हाथ में दे देना चाहते थे ।[4]

प्रतापसिंह ने अपने दीवान भगवानदास टोगड़ा को भेजा जिसने पीपल खेड़े पहुँचते ही उस पर अलवर राज्य की ओर से अपना अधिकार कर लिया ।[5] जुल्फिकार खाँ भी सामना करने के लिए आया लेकिन जब उसे यह ज्ञात हुआ कि पीपलखेड़ा पर प्रतापसिंह का अधिकार हो चुका तो वह वापस धोसावली लौट गया ।[6]

प्रतापसिंह ने जुल्फीकार खाँ के हस्तक्षेप से परेशान होकर उसका दमन करने के लिए धोसावली पर आक्रमण किया ।[7] जो उस समय नवाब जुल्फीकार खाँ के अधीन था । प्रतापसिंह को इस अप्रत्याशित आक्रमण में मराठों ने भी सहायता दी ।[8] और दोनों सेनाओं ने मिलकर धोसावली पर घेरा डाल दिया ।[9] जुल्फीकार खाँ बड़ा ही निडर स्वच्छाचारी और साहसी था । जनरल लेक ने जब मराठों को दिल्ली से निकाल दिया ।[10] तब व वहाँ से भागकर धोसावली आये परन्तु जुल्फीकार खाँ प्रतापसिंह स भी अधिक द्वेष भाव रखता था और हर प्रकार की छेड़छाड़ किया

---

1 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 364, 133 बस्ता 52, 18 बण्डल 10 पृ० 92, 6 ।
2 पीपलखेड़ा अलवर से 37 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है ।
3 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 1589 बस्ता 196 बण्डल 2, पृ० 18
 (ब) खानजादा शर्फउद्दीन अहमद—मुरक्का—ए मेवात पृ० 330-333
4 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 364, 133 बस्ता 52 18 बण्डल 10, 18 बण्डल 10, पृ० 23 6 ।
5 वही, क्रमांक 1589, 133 बस्ता 196, 18 बण्डल 2, 10 पृ० 19, 6 ।
 (ब) शफ खानजादा शर्फउद्दीन अहमद—मुरक्का—ए—मेवात पृ० 330-33
6 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 364 बस्ता 52, बण्डल 10 ृ० 93 ।
7 वही, क्रमांक 1589 बस्ता 196, बन्डल 2 पृ० 19 ।
8 वही, क्रमांक 1589 बस्ता 196 बुन्डल 2 पृ० 19 ।
9 धोसावली, भरतपुर से 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है ।
10 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 364, बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 93 ।

करता था ।[1] अतएव मराठे और प्रतापसिंह दोनों उसके शत्रु थे। लेकिन न तो मराठे और न राव प्रतापसिंह ही अकेले उसे परास्त कर सकते थे । इसलिए उसका परास्त करने के लिए मराठा और प्रतापसिंह ने आपस में समझौता कर लिया ।[2] दोनों ने मिलकर उसे युद्ध में पराजित किया ।[3] पराजित होने पर वह आश्रय और सहायता के लिए इधर-उधर भटकता फिरा लेकिन लगनऊ तक किसी ने उसकी सहायता नहीं की ।[4] अन्त में, बुन्देलखण्ड जाकर वह लड़ाई में काम आया ।[5] उसके राज्य पर भी प्रतापसिंह का अधिकार हो गया । प्रतापसिंह ने घोसावली को उजाड़कर गोविन्दगढ़ बसाया ।[6]

जुल्फीकार खाँ के युद्ध में परास्त होकर भाग जाने तथा प्रतापसिंह के घोसावली को हस्तगत कर लेने पर जुल्फीकार खाँ के समर्थक वहाँ के मवों ने उसके विरुद्ध विद्रोह किया ।[7] प्रतापसिंह ने उनके मुख्य नेताओं को अपनी ओर मिला लिया जिससे उनकी शक्ति कम हो जाने पर उन्हें विवश होकर उसकी अधीनता स्वीकार करनी पड़ी ।[8] इस प्रकार प्रतापसिंह ने अपने साहस और योग्यता से बहुत शीघ्र अपने विद्रोहियों का दमन करने में सफलता प्राप्त की ।

नजफ खाँ का भरतपुर पर तृतीय आक्रमण तथा प्रतापसिंह की नीति—

सन् 1775 में मिर्जा नवाब नजफ खाँ ने भरतपुर पर तीसरी बार आक्रमण किया ।[9] और आक्रमण में उसकी सहायता करने के लिए उसने प्रतापसिंह को लिखा ।[10] जिसके उत्तर में उसने अपनी कुछ सेना सहित अपने मन्त्री खुशालीराम को नजफ खाँ की सहायता करने के लिए भेजा ।[11]

भरतपुर नरेश नवलसिंह अपने मन्त्री जोधराज, चतुरसिंह चौहान, सीताराम तथा गुरु अचलदास आदि पराक्रमी सामन्तों के साथ शत्रु से लोहा लेने के

---

1 वही, क्रमांक 133, बस्ता 18 बन्डल 10, पृ० 6 ।
2 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2, पृ० 19 ।
3 वही क्रमांक 133 बस्ता 18 बन्डल 10 पृ० 6 ।
(ब) शफ खानजादा शर्फउद्दीन अहमद मुरक्का ए मेवात पृ० 330 33 ।
4 वही क्रमांक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 93 । (रा० रा० अभि० बीकानेर)
5 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 1589 बस्ता 196 बन्डल 1 पृ० 19
6 वही क्रमांक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 19 ।
7 (अ) वही क्रमांक 364 133 बस्ता 52 18 बन्डल 10 पृ० 93 6 ।
(ब) शर्फ खानजादा शर्फउद्दीन—मुरक्का ए मेवात पृ० 330 33 ।
8 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 1589, बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 19
9 वही ।
10 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 94 ।
11 वही क्रमांक 556 बस्ता 82 बन्डल 1 पृ० 3 ।

लिए अपने दुर्ग मे आ डटा।[1] दोनो के बीच युद्ध हुआ। जिसमे नजफ खाँ की विजय हुई।[2] इस पर भरतपुर की सेना ने युद्ध भूमि से भागकर डीग के दुर्ग मे शरण ली और नजफ खाँ ने डीग के दुर्ग का घेरा डाल दिया।[3] भरतपुर नरेश ने दुर्ग (डीग) का अच्छा प्रबन्ध कर रखा था। जाटो ने शत्रु की गति रोकने तथा दुर्ग की रक्षा करने मे वीरता प्रगट की और शत्रु की विपुल सेना का बडी वीरता से सामना किया।[4] परन्तु अन्त म उनकी सारी वीरता और सारा यत्न विफल हुआ। जबकि प्रतापसिंह ने नजफ खाँ को सैनिक सहायता दी।[5] और प्रतापसिंह की सहायता से नजफ खाँ का डीग पर अधिकार हो गया।[6]

प्रतापसिंह ने साम्राज्य विस्तार करने क लिए 1775-76 म बहादुरपुर पर अधिकार कर वहा एक दुर्ग का निर्माण करवाया।[7] इसी वर्ष प्रतापसिंह ने डेहरा और जिन्दौली मे भी दुर्ग बनवाये।[8]

जयपुर की आन्तरिक समस्याओ मे प्रतापसिंह का हस्तक्षेप—

प्रतापसिंह ने अपने साम्राज्य विस्तार के लिए जयपुर के आन्तरिक मामलो मे हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। सर्वप्रथम उसने बैराठ प्रदेश पर आक्रमण कर 1775 मे उस पर अधिकार कर लिया।[9] इससे पूर्व इस प्रदेश पर फतेहअली खा नामक एक मुसलमान का अधिकार था।[10] प्रतापसिंह ने बैराठ प्रदेश पर आक्रमण किया तब फतेहअली खाँ ने उसका बडी बहादुरी से सामना किया फिर भी वह प्रताप सिंह को पीछे नही हटा सका और अन्त म परास्त होकर युद्ध भूमि से भाग निकला अत बैराठ प्रदेश पर प्रताप सिंह का अधिकार हो गया।[11]

कुछ समय पश्चात् प्रतापसिंह ने प्रयागपुरा, ताला, धोला आतेला और मामरू आदि परगनो पर भी अपना अधिकार कर लिया।[12] इस समय प्रतापसिंह के राज्य

---

1. वही, क्रमाक 1589 बस्ता 196 बण्डल 2 पृ० 20।
2. वही, क्रमाक 364, बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 94।
3. वही, क्रमाक 556 बस्ता 82 बन्डल 1 पृ० 3।
4. वही, क्रमाक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 95।
5. वही, क्रमाक 556 बस्ता 82 बन्डल 1 पृ० 3।
6. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 20
7. वही क्रमाक 556 बस्ता 82 बन्डल 1 पृष्ठ 3
8. वही, क्रमाक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 96।
9. वही क्रमाक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 20।
10. वही, क्रमाक 556 बस्ता 82 बन्डल 1 पृ० 4।
11. वही, क्रमाक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 96।
12. वही क्रमाक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 21

की सीमाएँ अलवर से लेकर सीकर तक फैल गयी थी।[1] प्रतापसिंह ने जयपुर की राजनीति मे दुबारा हस्तक्षेप उस समय किया जबकि शेखावाटी[2] पर नजफकुली खाँ ने आक्रमण किया उस समय शेखावाटी के सरदारो ने प्रतापसिंह से सहायता की प्रार्थना की। उसने उनकी सहायता की और नजफकुली खाँ को लडाई मे पराजित कर उसे उक्त स्थान से मार भगाया।[3]

इस समय प्रतापसिंह की राज्य की सीमाए सीकर तक पहुँच गयी थी लेकिन सीकर[4] के देवीसिंह और कासली के सरदार पूरणमल दोनो के बीच कटु सम्बन्ध थे।[5] इसका परिणाम यह हुआ कि कासली के सरदार पूरणमल ने सीकर राज्य मे लूटमार मचाकर बडा उपद्रव खडा कर दिया और उसके अत्याचार से सीकर का देवीसिंह परेशान हो गया।[6] इस समय पूरणमल ने कासली के पाँच गाँवो पर अधिकार कर लिया।[7] देवीसिंह ने अकेले सामना करने मे अपनी सामर्थ्यहीनता को समझ कर प्रतापसिंह से सहायता मागी।[8] जिस पर प्रतापसिंह ने ससैन्य रवाना हो दोनो के बीच मे समझौता कराने की चेष्टा की लेकिन जब पूरणमल किसी प्रकार की सन्धि के लिये सहमत नही हुआ। तब प्रतापसिंह देवीसिंह के साथ सीकर चला गया।[9] वहाँ जाकर उसने सीकर के देवीसिंह की बहुत सहायता की।[10] प्रतापसिंह सीकर मे कुछ दिनो तक ठहर कर अलवर लौटा।[11] और देवीसिंह ने कासली पर अपना अधिकार कर लिया।[12] इस प्रकार प्रतापसिंह ने सीकर के देवीसिंह की सहायता की जिससे दोनो के बीच मैत्री दृढ हुई।

---

1 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 21।

2 (अ) वही।

(ब) रामगढ चुरु, सीकर, लक्ष्मणगढ रतनगढ, आदि क्षेत्रो को शेखावाटी क्षेत्र के नाम से पुकारा जाता है।

3 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 97।

4 सीकर कस्बा जयपुर के पश्चिम मे 72 मील की दूरी पर स्थित है।

5 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 556 बस्ता 82 बन्डल 1 पृ० 4।

6 वही, क्रमाक 364,1589 बस्ता 52, 196 बन्डल 10, 2 पृ० 98, 21।

7 वही, क्रमाक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 21।

8 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 364, 52 बन्डल 10 पृ० 9, 8

9 वही क्रमाक 556 बस्ता 82 बन्डल 1 पृ० 5।

10 वही, क्रमाक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 99।

11 वही, क्रमाक 566 बस्ता 82 बन्डल 1 पृ० 5।

12 वही, क्रमाक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 21।

इसी समय मुहम्मद वेग हमदानी ने प्रतापसिंह पर आक्रमण किया।[1] *जिसम* प्रतापसिंह को विजय प्राप्त नही हुई लेकिन उसे कोई विशेष क्षति भी नही हुई।[2]

इस प्रकार प्रतापसिंह के सामने जितनी भी प्रारम्भिक आन्तरिक समस्यायें आई थी उन सबका उसने साहस के साथ समाधान किया। मुगल सेनापति मिर्जा नजफ खाँ ने जब जब भरतपुर पर आक्रमण किया तब-तब प्रतापसिंह ने उसकी सहायता कर उससे मित्रता के सम्बन्ध स्थापित किये। इसका परिणाम यह हुआ कि उसे एक स्थायी मित्र मिल गया जो आगे चलकर कभी भी जयपुर और भरतपुर के शासकों से उसकी रक्षा कर सकता था।

---

1 वही क्रमाक 556 बस्ता 82 बन्डल 1 पृ० 5।

2 वही, क्रमाक 364, 1589 बस्ता 52, 196 बन्डल 10, 2 पृ० 99, 21।

4
प्रतापसिंह और अर्न्तराज्यीय राजनीति

जयपुर नरेश माधवसिंह की मृत्यु के पश्चात् उसका बडा पुत्र पृथ्वीसिंह 1768 ई० मे जयपुर राज्य की गद्दी पर बैठा । उस समय उसकी आयु 5 वर्ष थी ।[1]

जयपुर राज्य की शोचनीय राजनीतिक स्थिति—

राज्य का सारा प्रबन्ध पृथ्वीसिंह की माता, चुण्डावत रानी और उसका नाना जसवन्तसिंह चला रहे थे । फिरोज प्रधानमन्त्री के पद पर नियुक्त था तथा खुशालीराम बोहरा जो माचेडी के प्रतापसिंह का समर्थक था उसको मुख्य परिषद् मे सम्मिलित कर लिया गया था ।[2]

परन्तु चुण्डावत रानी द्वारा फिरोज को प्रधानमन्त्री के पद पर तथा खुशालीराम बोहरा को मुख्य परिषद् मे सम्मिलित करने से उसके व्यक्तिगत सम्बन्धो का रहस्य खुल गया । ऐसा कहा जाता है कि उसके प्रधानमन्त्री खुशालीराम बोहरा और फिरोज के साथ राजमाता का अनुचित सम्बन्ध था ।[3] इससे सभी सरदार उनसे नाराज हो गये । फिरोज के सामने किसी की नही चलती थी । इसलिये सब सामन्त राजधानी छोडकर अपने अपने प्रान्तो मे चले गये । क्योंकि वे एक स्त्री के शासन मे रहना पसन्द नही करते थे ।[4]

---

1 राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, क्रमाक 364 1589 बस्ता 52, 196 बन्डल 10 2, पृ० 67, 2 ।

2 वही क्रमाक 1589, 403, बस्ता 196, 62 बन्डल 2, 1 पृ० 2, 11 ।

3 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1260 बस्ता 175 बन्डल 1 पृ० 1 ।
(ब) भण्डारी सुख सम्पतिराज—भारत के देशी राज्य जयपुर राज्य खण्ड पृ० 13 ।
(स) बुक—पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ दी जयपुर पृ० 16 ।
(द) कर्नल टाड— एनाल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान भाग 2 पृ० 1361

4 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1260 बस्ता 175 बन्डल 1 पृ० 1 ।

मराठों ने अम्बाजी इगले के अधीन एक सेना जयपुर से चौथ संग्रह करने हेतु भेजी।[1] मराठे धन के लालची थे उन्होंने सोचा कि रानी उन सामन्तों से सहायता नहीं लेगी। इसलिये अम्बाजी इगले के नेतृत्व में सेना भेजकर उसके द्वारा राजस्व का संग्रह किया।[2] जयपुर के राज्य में ऐसी विकट परिस्थिति को देखते हुए प्रतापसिंह ने राज्य का सारा नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया और राजमाता के पिता जसवन्तसिंह को जयपुर राज्य के प्रशासन में हस्तक्षेप करने से इन्कार कर दिया।[3]

प्रतापसिंह ने राजमाता के पक्षधर फिरोज और खुशालीराम बोहरा को कैद कर लिया।[4] और फिरोज से यह कह कर 7 लाख रुपये ले लिये कि तुमको मुक्त कर दिया जायेगा।[5] प्रतापसिंह के इस प्रकार के कार्यों को देखकर जयपुर के अधिकांश सरदार उसके विरुद्ध हो गये।[6] ऐसा प्रतीत होने लगा कि किसी भी समय प्रतापसिंह की हत्या की जा सकती है इसलिये प्रतापसिंह सन् 1777 में जयपुर से अचानक रात को भाग गया।[7]

इस प्रकार 9 वर्ष तक आमेर का राज्य अव्यवस्थित रूप से चलता रहा। 9 वर्ष पश्चात् जयपुर महाराजा पृथ्वीसिंह की 16 अप्रेल 1778 को मृत्यु हो गयी।[8] पृथ्वीसिंह की मृत्यु के पश्चात् 17 अप्रेल 1778 को उसका भाई सवाई प्रतापसिंह जयपुर राज्य गद्दी पर बैठा। उस समय सवाई प्रतापसिंह की आयु केवल 13 वर्ष थी।[9]

सवाई प्रतापसिंह के अल्पायु होने से राज्य में सब जगह अव्यवस्था फैली हुई थी। राज्य का सारा प्रबन्ध सवाई प्रतापसिंह की माता के हाथ में था।[10]

जयपुर राज्य की बिगड़ती हुई दशा तथा बादशाह और प्रतापसिंह के हस्तक्षेप को देखते हुए खुशालीराम बोहरा को कैद से मुक्त कर उसको फिर से प्रधानमन्त्री के

---

1 वही।

2 वही।

3 (अ) सरकार जे० एन०—मुगल साम्राज्य का पतन भाग 3 पृ० 222।
(ब) गहलोत जगदीशसिंह—जयपुर व अलवर राज्यों का इतिहास पृ० 117।

4 शर्मा एम०एल०—जयपुर राज्य का इतिहास पृ० 191।

5 सरकार जे०एन०—मुगल साम्राज्य का पतन, भाग 3 पृ० 222।

6 गहलोत जगदीशसिंह—जयपुर व अलवर राज्यों का इतिहास पृ० 117।

7 डा० रघुवीरसिंह—पूर्व—आधुनिक राजस्थान पृ० 193।

8 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 1260 बस्ता 175 बन्डल 1 पृ० 1।

9 वही।

10 वही।

पद पर नियुक्त किया गया।[1] खुशालीराम बोहरा ने प्रधानमन्त्री होने के कारण राज्य में धीरे धीरे अपना प्रभाव बढ़ाना प्रारम्भ कर दिया एवं अवसर पाकर दरबार से अपने शत्रु फिरोज की शासन शक्ति को समाप्त करने की चेष्टा करने लगा।[2]

ऐसा प्रतीत होता है कि खुशालीराम ने फिरोज की शक्ति को समाप्त करने की इच्छा से राज्य में विप्लव उपस्थित कर दिया था और अपने सामन्तों से गुप्त रूप से अनुरोध किया था कि वे आम सभा में न आवें।[3] दूसरी ओर उसने गुप्त रूप से राज्य के जमींदारों से यह अनुरोध किया कि वे राजा को कर नहीं दें।[4] इस प्रकार जयपुर दरबार में खुशालीराम और फिरोज के बीच अनबन होने से राज्य में पहले से अधिक अव्यवस्था फैल गयी चूंकि राजा सवाई प्रतापसिंह अल्पायु था इसलिए राज्य में चारों ओर षड्यन्त्र रचे जा रहे थे और प्रत्येक सरदार अपना स्वार्थ पूरा करने की कोशिश कर रहा था।[5]

इस समय में अलवर का प्रतापसिंह अपने सरदार खुशालीराम बोहरा की सहायता से जयपुर राज्य की राजनीति में हमेशा हस्तक्षेप करता रहता था।[6] इतना होने पर भी खुशालीराम को सन्तोष नहीं हुआ। माचेड़ी के प्रतापसिंह ने खुशालीराम के साथ परामर्श करके फिरोज के साथ मित्रता कर ली।[7]

1778 ई० के अन्त में जब मुगल बादशाह जयपुर में आया हुआ था उस समय जयपुर राज्य की ओर से फिरोज बहुमूल्य भेंट और खिराज लेकर नजफखाँ के कैम्प में उपस्थित हुआ था ताकि सन्धि की शर्तें तय की जा सकें।[8] उस समय प्रतापसिंह नजफ खाँ की सेवा में था उसने नजफ खाँ से फिरोज का परिचय करवाया और अपने मित्र खुशालीराम बोहरा का प्रतिद्वन्द्वी होने के कारण उसे विष देकर मरवा डाला।[9] इस प्रकार खुशालीराम के प्रतिद्वन्द्वी को प्रतापसिंह ने मरवा दिया और कुछ समय पश्चात् सवाई प्रतापसिंह की माता का भी देहान्त हो गया।[10] जयपुर नरेश सवाई

1 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 1260 बस्ता 175 बण्डल 1 पृ० 1।
2 वही क्रमांक 120 बस्ता 175 बण्डल 1 पृ० 1 2।
3 वही क्रमांक 1260 बस्ता 1 पृ० 1 2।
4 वही।
5 वही।
6 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 1260 बस्ता 175 बण्डल 1 पृ० 2।
7 वही।
8 सरकार ज० एन०—मुगल साम्राज्य का पतन, भाग 3 पृ० 223।
9 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 1260 बस्ता 175 बण्डल 1 पृ० 2।
10 (अ) वही।
(ब) मिश्रण सूर्यमल—वंश भास्कर पृ० 3886।

प्रतापसिंह के वयस्क होने तक प्रतापसिंह और खुशालीराम दोनों जयपुर पर शासन करते रहे।[1]

नजफ खाँ ने जयपुर की बिगड़ती हुई आन्तरिक दशा का लाभ उठाना चाहा। वह चाहता था कि ऐसे समय जयपुर राज्य पर जितना मुगल बादशाह का खिराज चढ़ा हुआ था वह वसूल कर लिया जाय। इसलिए उसने जयपुर राज्य पर आक्रमण करने का निश्चय किया।[2] नजफ खाँ ने जयपुर पर आक्रमण करने के लिए सन्देश भेजा परन्तु प्रतापसिंह ने सहायता देने से इन्कार कर दिया।[3]

प्रतापसिंह और नजफ खाँ के बढ़ते हुए मतभेद

यद्यपि प्रतापसिंह और नजफ खाँ के बीच अच्छे सम्बन्ध थे इसलिए प्रतापसिंह ने भरतपुर और डीग पर नजफ खाँ को अधिकार दिलाने में बहुत सहायता दी थी।[4] लेकिन भरतपुर और डीग हस्तगत करने से नजफ खाँ की लालसा बहुत बढ़ गयी थी। अब उसने जयपुर तथा अलवर पर भी अपनी दृष्टि डाली।[5]

जब यह समाचार प्रतापसिंह को मिला तब उसने नजफ खाँ को कहला भेजा कि यदि जयपुर और अलवर पर अधिकार करने की चेष्टा की तो उसका बुरा परिणाम होगा। प्रतापसिंह की इस धमकी का नजफ खाँ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। जब प्रतापसिंह ने देखा कि उसके समझाने बुझाने का नजफ खाँ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा तब उसने होशदार खाँ को उसे समझाने के लिये भेजा।[6] होशदार खाँ ने नजफ खाँ को बहुत समझाया लेकिन दुराग्रही नजफ खाँ अपने संकल्प पर डटा रहा।[7] क्योंकि वह यह चाहता था कि प्रतापसिंह ने जिन इलाकों पर हाल ही में अधिकार कर लिया था वे इलाके वापस उससे छीन लिये जायें।[8] नजफ खाँ आगे बढ़ता रहा। उस समय प्रतापसिंह ने जाटों की शक्ति की कमजोरी का फायदा उठाकर लक्ष्मणगढ़[9] के दुर्ग पर अधिकार कर लिया था।[10]

---

1 क्रमांक 1260 बस्ता 175 बन्डल 1 पृ॰ 2 (रा॰ रा॰ अभि॰ बीकानेर)
2 सरकार जे॰ एन॰ *मुगल साम्राज्य का पतन भाग 3 पृ॰ 225*
3 रा॰ रा॰ अभि॰ बीकानेर क्रमांक 364, 1589 बस्ता 52 196 बन्डल 10 2
  8 पृ॰ 100, 22
4 *वही, क्रमांक 556 बस्ता 82 बन्डल 1 पृ॰ 3*
5 वही, क्रमांक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ॰ 100
6 रा॰ रा॰ अभि॰ बीकानेर, क्रमांक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ॰ 100
7 वही क्रमांक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2 पृ॰ 22
8 (अ) शर्मा एम॰ एल॰—जयपुर राज्य का इतिहास, पृ॰ 190
  (ब) राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली—फोरिन डिपार्टमेन्ट सीक्रेट ब्रान्च, 15 जून 1778 फाईल न॰ 1
9 लक्ष्मणगढ़ अलवर के दक्षिण पश्चिम में 20 मील की दूरी पर स्थित है।
10 (अ) गुलाम अली—शाह आलमनामा भाग 3 पृ॰ 123
  (ब) *टिक्कीवाल एच॰ सी॰—जयपुर एण्ड दी लेटर मुगल्स पृ॰ 146*

ज्योंहि प्रतापसिंह को नजफ खाँ के समीप आने का समाचार ज्ञात हुआ वैसे ही वह सन् 1778 ई० में मगलसिंह नरूका शिवासहाय तथा छाजूराम मन्त्री के साथ उसका सामना करने के लिये लक्ष्मणगढ़ जा पहुँचा उस समय मिर्जा नजफ खाँ ने लक्ष्मणगढ पर आक्रमण के लिए 20 मई 1778 ई० को वहाँ अपना घेरा डाल दिया।[1] जब नजफ खाँ ने प्रतापसिंह को लक्ष्मणगढ में घेर लिया तब नजफ खाँ को हराने के लिये मराठों ने भी प्रतापसिंह का साथ दिया।[2]

लक्ष्मणगढ का युद्ध, 20 मई 1778 ई०

यह युद्ध सन् 1778 ई० में हुआ था।[4] दोनों पक्षों में दो महीने तक निरन्तर युद्ध होता रहा।[5] लेकिन युद्ध का कोई परिणाम नहीं निकला। अब नजफ खाँ ने कूटनीतिक चाल से विजय प्राप्त करनी चाही। उसके अनुसार वह दुर्ग से अपनी सेना हटाकर मैदान में ला डटा।[6] इसमें उसका उद्देश्य यह था कि जब प्रतापसिंह की सेना किले से बाहर निकल कर युद्ध में प्रवृत्त हो तब वह अचानक दुर्ग पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लेगा। इसके लिये वह अपनी सेना को दुर्ग से हटाकर मैदान में ले आया। परन्तु चतुर और कूटनीतिज्ञ प्रतापसिंह उसके विचार और कपट भाव को पहचान गया।[7] जब नजफ खाँ ने देखा कि दुर्ग हस्तगत करने की कोई आशा नहीं है तब उसने गोस्वामी अनूपगिरी तथा उमरावगिरी को भेजकर प्रतापसिंह से सन्धि के लिये प्रार्थना की।[8] जब उसका पत्र प्रतापसिंह को मिला तब उसने यह निश्चय किया कि किसी भी विश्वसनीय व्यक्ति को नजफ खाँ के पास भेजकर सन्धि के सम्बन्ध में निश्चय कर लेना चाहिये। इस विषय में उसने सभी सरदारों की सलाह भी ली। सभी सरदारों ने उसके उक्त विचार का समर्थन किया।[9]

---

1 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 364, 746, 747 बस्ता 52, 107, 107 बन्डल 10 4, 5, पृ० 101, 1-4, 5-6

2. सरकार जे, एन०—मुगल साम्राज्य का पतन भाग 3 पृ० 112

3 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 364, बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 101
(ब) राष्ट्रीय अभि० नई दिल्ली, फौरन सीक्रेट डिपार्टमेन्ट 15 जून 1778 फाइल।

4 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 746-47 बस्ता 107 बन्डल 4, 5 पृ० 14, 5-6

5 वही, क्रमांक 1586 बस्ता 196 बन्डल 2, पृ० 23

6 वही, क्रमांक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 102

7 वही, क्रमांक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 23

8 वही, क्रमांक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 102-103

9 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 364, 1589 बस्ता 52, 196 बन्डल 10, 2 पृ० 103, 24

जब नजफ खाँ और प्रतापसिंह के बीच संधि वार्ता चल रही थी, उस समय मुगल दरबार मे एक विचित्र घटना घटी। सम्राट का कृपा पात्र अब्दुल अहद जो मुगल दरबार मे मीरबक्शी था और नजफ खाँ का प्रतिद्वन्द्वी होने से उसकी सफलता से ईर्ष्या करता था। उसने मुगल सम्राट के सामने यह प्रस्ताव रखा कि वह स्वय चलकर जयपुर और माचेडी से खिराज वसूल करे ताकि नजफ खाँ को उसका हिस्सा नही देना पडे। मुगल सम्राट ने इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया और उसने जयपुर की ओर आक्रमण करने की घोषणा की।[1]

जब इसका पता जयपुर और माचेडी के राजाओ को लगा तो उन्होने नजफ खाँ के बजाय मुगल सम्राट के दरबार मे अपने-अपने दूत भेजे। जयपुर और माचेडी के दूतो का दिल्ली म अच्छा स्वागत किया गया और मुगल सम्राट ने यह घोषणा कर दी कि नजफ खाँ ने जो कार्यवाही की थी उसे रद्द समझी जाये और अब्दुल अहद के कहने पर सम्राट 24 मई 1778 ई० को दिल्ली से रवाना होकर तालकटोरा पहुँचा। जब जयपुर और माचेडी के राजाओ को मुगल सम्राट के आने का समाचार ज्ञात हुआ तो उन्होने नजफ खाँ को खिराज देने म अपना स्व कडा कर लिया।[2]

नजफ खाँ ने अब्दुल अहद को पदच्युत करने के लिए तथा सम्राट को भयभीत करने के लिए अपन सहयोगी नजफ कुली और अफरासियाब को सेना के साथ दिल्ली पर आक्रमण करने हेतु भेजा। जब अब्दुल अहद को नजफखाँ के आक्रमण का समाचार ज्ञात हुआ तो उसने माचेडी और जयपुर के दूतो को खाली हाथ वापस लौटा दिया।[3] अब प्रतापसिंह ने उक्त कार्य के लिए खुशालीराम को मिर्जा नफज खाँ के पास सन्धि की शर्तो को निश्चित करने के लिए भेजा।[4]

नजफ खाँ और प्रतापसिंह के बीच समझौता (6 जुलाई 1778 ई०)

नजफ खाँ और प्रतापसिंह के बीच 6 जुलाई 1778 को एक समझौता हुआ जिसमे निम्न शर्तें तय की गयी।[5]

इस सन्धि के अनुसार प्रतापसिंह ने 33 लाख रुपये नजफ खाँ को युद्ध हरजाने के रूप मे देना स्वीकार कर लिया और यह निश्चय किया गया कि सारी

---

1 राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली—फोरिन डिपार्टमेन्ट सीक्रेट ट्रान्सलेशन 15 जून 1778 फाइल।
2 वही।
3 सरकार जे० एन०—मुगल साम्राज्य का पतन, भाग 3 पृ० 112
4 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 364 1589, 403 बस्ता 52, 196, 62 बण्डल 10 2, 1 पृ० 104, 24, 19।
5 (अ) खेरउद्दीन—इबरातनामा भाग 1 पृ० 244।
(ब) सरकार जे० एन०—मुगल साम्राज्य का पतन, भाग 3 पृ० 113।

राशि 3 वर्ष में अदा कर दी जायेगी । इस राशि में से तीन लाख रुपया तो प्रतापसिंह को उसी क्षण देना होगा और बाकी पहली किस्त की बची हुई राशि की जमानत दिलवानी पड़ेगी ।[1] जयपुर के राजा ने प्रतापसिंह को पहली किस्त चुकाने के लिए तीन लाख रुपये उधार दिये जिसे उसने नजफ खाँ को भुगतान कर अपनी जान बचायी ।[2]

सन्धि के पश्चात नजफ खाँ लक्ष्मणगढ़ के आसपास फैली हुई सेना को एकत्रित कर डीग[3] की ओर चला गया ।[4] इस युद्ध में खेड़ा के ठाकुर मगलसिंह नरूका ने अदभुत् वीरता और पराक्रम का परिचय दिया था । इस युद्ध के कारण सन्धि के पश्चात् हल्दिया वंश के तीन बनिये दौलतराम खुशालीराम[5] नन्दराम जो जयपुर राज्य के अन्तर्गत खण्डेला में रहते थे, जयपुर छोड़कर माचेड़ी चले गये और खुशालीराम हल्दिया जो माचेड़ी का दीवान था, उसने प्रतापसिंह को यह परामर्श दिया कि जयपुर से तीन लाख रुपया ऋण लिया था वह नहीं चुकाया जावे ।[6]

खुशालीराम हल्दिया को वकील बनाकर नजफ खाँ के पास डीग भेजना—

इस घटना के पश्चात् प्रतापसिंह ने खुशालीराम हल्दिया को वकील बनाकर नजफ खाँ के पास डीग भेज दिया ।[7] वहाँ पहुचने पर नजफ खाँ ने उससे प्रतापसिंह से भेंट करने की अपनी इच्छा प्रकट की ।[8] नजफ खाँ ने प्रतिज्ञा की कि यदि वह प्रतापसिंह से मिला देगा तो वह इसके बदले उसको रामगढ़ का परगना दे देगा ।[9]

---

1 गुलामअली—शाह आलमनामा, भाग 3 पृ० 123 ।

2 खेरउद्दीन—इबरातनामा, भाग 1 पृ० 244 ए ।

3 डीग भरतपुर के उत्तरपूर्व में 34 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है ।

4 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 1589, 403, बस्ता 196, 62 बण्डल 2, 1, पृ० 24, 19 ।
(क) खेड़ा लक्ष्मणगढ़ के दक्षिण में 15 मील की दूरी पर स्थित है ।

5 खुशालीराम जाति का खण्डेलवाल वैश्य था, हल्दी का व्यापार से वह हल्दिया कहलाया । जयपुर में उसका जन्म हुआ था । पहले वह जयपुर का वकील नियुक्त हुआ । इसके पश्चात् उसने दिल्ली के बादशाह की अच्छी सेवा की । जिसके प्रतिकार में उसे शाहजहाँपुर (जो अब रेवाड़ी में) की जागीर मिली । जयपुर में उसने अच्छी प्रसिद्धी प्राप्त की जयपुर राज्य का वह ताजिमी सरदार हुआ ।

6 खेरउद्दीन—इबरातनामा, भाग 1 पृ० 347 ।

7 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 1589, 403 बस्ता 196, 62 बण्डल 2, 1 पृ० 25, 19 ।

8 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 364, बस्ता 52, बण्डल 10 पृ० 105

9 वही, क्रमांक 1589, बस्ता 196 बण्डल 2 पृ० 25 ।

खुशालीराम ने उसी समय इस विषय में प्रतापसिंह को पत्र लिखा।[1] प्रतापसिंह ने नजफ खाँ की प्रार्थना स्वीकार करली और अपने सम्बन्धियों तथा मित्रों[2] एवं अपनी सारी सेना सहित नजफ खाँ से मिलने के लिए डीग की ओर प्रस्थान किया।[3] जब नजफ खाँ को प्रतापसिंह के आगमन का समाचार ज्ञात हुआ तब वह उससे आगे बढ़कर मिला और उसे सम्मानपूर्वक अपने दुर्ग में ले गया।[4] इसके पश्चात् नजफ खाँ प्रतापसिंह से पगड़ी बदल कर उसका घनिष्ठ मित्र बन गया।[5]

दूसरे दिन प्रातःकाल दोनों ने राजा महाराजाओं की भाँति एक दूसरे के सैनिकों को अनेक प्रकार के बहुमूल्य वस्त्राभूषण तथा द्रव्य देकर प्रसन्न और सन्तुष्ट किया। नजफ खाँ ने प्रतापसिंह को सिरपेच, दुशाला कलंगी इत्यादि तथा उसके साथ आये हुए सरदारों को उनके वंश तथा पद के अनुसार सिरोपाव इत्यादि प्रदान किए।[6] अगले दिन नजफ खाँ ने खुशालीराम से अलवर के दुर्ग मांगा जिसके उत्तर में उसने कहा कि जब तक प्रतापसिंह जीवित है तब तक दुर्ग पर अधिकार करना नितान्त असम्भव है। इस पर नजफ खाँ अनेक प्रकार के प्रलोभन देकर अपनी ओर मिलाने की चेष्टा करने लगा।[8] स्वामी भक्ति की भावना के कारण आरम्भ में तो उसे खुशालीराम को प्रतापसिंह की ओर से हटाने में असफलता हुई परन्तु जब उसने उसे सेनापति के पद पर नियुक्ति कर दिया।[9] तब खुशालीराम ने अलवर के दुर्ग पर आक्रमण करने में नजफ खाँ को सहायता देने का वचन दिया।[10]

---

1 वही, क्रमांक 403 बस्ता 62 बण्डल 1 पृ० 20।

2 दौला नन्दराम शिवजीराम, जीवन खाँ, होशदार खाँ विष्णुसिंह भगवन्तसिंह, शिवदानसिंह जगतसिंह कुँवर मंगलसिंह विक्रमसिंह मानसिंह, सपापसिंह झाला, नाहरसिंह शेरसिंह मानसिंह दुर्जनसिंह आदि पिचणोत कल्याणोत शेखावत, राजावत पवार, निर्वाण तथा जःकारोत शाखाओं के राजपूत लोग राव राजा प्रतापसिंह के सरदार थे।

3 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 1589 बस्ता 196 बण्डल 2 पृ० 25।

4 वही क्रमांक 364 बस्ता 52 बण्डल 10 पृ० 106।

5 *वही क्रमांक 403, बस्ता 62 बण्डल 1 पृ० 20।*

6 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2 पृष्ठ 26।

7 वही क्रमांक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 107।

8 *वही क्रमांक 403 बस्ता 62 बन्डल 1 पृ० 20।*

9 वही, क्रमांक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2 पृष्ठ 26-27।

10 (अ) वही, क्रमांक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 108।
(ब) वही क्रमांक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2 पृष्ठ 27।

खुशालीराम हल्दिया के द्वारा प्रतापसिंह का साथ छोडने का कारण —

खुशालीराम हल्दिया जो प्रतापसिंह का दीवान था नजफ खाँ के साथ जाकर मिल गया। इसके मुख्य दो कारण थे —

(1) खुशालीराम को नजफ खाँ ने सेनापति के पद नियुक्त कर दिया था।[1]

(2) पूर्व मे लक्ष्मणगढ तहसील का प्रबन्ध दौलतराम और खुशालीराम हल्दिया के हाथ मे था उन्होने तहसील के आय व्यय के लेखे मे कुछ गडबड की थी। इस पर प्रतापसिंह ने दौलतराम को बहुत डाँटा था और आवेश मे आकर उनके साथ दुर्व्यवहार किया।[2]

उक्त अपमान का बदला खुशालीराम ने इस समय नजफ खाँ की ओर मिल कर ले लिया।[3]

हल्दिया बन्धुओ ने नजफ खाँ से प्रतापसिंह के अशिष्ट व्यवहार के लिए उन्हे उचित दण्ड देने की प्रार्थना की जिसे उसने सहर्ष स्वीकार कर लिया।[4] दोनो भाई मिलकर उसे प्रतापसिंह पर आक्रमण करने के लिए ले आये।[5] जब प्रतापसिंह को जगतसिंह दहीया और केसरसिंह चौहान के द्वारा[6] हल्दिया बन्धुओ के विरोध का पता चला तब पहले तो उसको उक्त सूचना देने वालो पर विश्वास नही हुआ परन्तु जब उसके कई विश्वसनीय व्यक्तियो ने भी हल्दिया बन्धुओ के सम्बन्ध मे इस प्रकार की सूचना दी तब उसने अपने सेनापति को युद्ध के लिये शीघ्र तैयार हो जाने की आज्ञा दी।[7]

जयपुर द्वारा नजफ खाँ की सहायता —

जब खुशालीराम हल्दिया को राव राजा प्रतापसिंह ने दीवान के पद पर नियुक्त किया था तब उसने प्रतापसिंह को यह परामर्श दिया था कि नजफ खाँ के साथ हुए समझौते के समय जयपुर राज्य ने उसे पहली किस्त चुकाने के लिए तीन लाख रुपया ऋण दिया था उसे नही चुकाया जाए।[8]

जब नजफ खाँ को सन्धि के अनुसार प्रतापसिंह ने कर का भुगतान नही

---

1 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 403, बस्ता 62, बण्डल 1 पृ० 20।

2 वही, क्रमाक 556, बस्ता 82, बन्डल 1, पृ० 3।

3 वही, क्रमाक 403, बस्ता 62, बन्डल 1, पृ० 20

4 वही पृ० 21।

5 वही, क्रमाक 556, बस्ता 82, बन्डल 1, पृ० 3।

6 ये दोनो सरदार हल्दियो के साथ रहते थे।

7 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 364, 1564 बस्ता 52, 189 बन्डल 10 2 पृ० 110-11, 28।

8 खैरउद्दीन—इबरातनामा भाग 1 पृ० 347।

किया और जयपुर के राजा को 3 लाख रुपये देने से इन्कार कर दिया जिसके परिणामस्वरूप नजफ खाँ ने प्रतापसिंह पर आक्रमण करने हेतु मुगल सेना भेजी। जयपुर के महाराजा ने भी खुशालीराम बोहरा के नेतृत्व में एक सेना नजफ खाँ की सहायता करने हेतु भेजी।[1]

रसिया डूंगरी का युद्ध (8 अगस्त 1778) —

प्रतापसिंह पर नजफ खाँ और जयपुर की सेना के द्वारा अगस्त 8 1778 ई० को रसिया डूंगरी नामक स्थान पर सयुक्त आक्रमण हुआ।[2] इस युद्ध में मराठा जनरल अम्बाजी इगले प्रतापसिंह की तरफ से लड़ रहा था।[3] युद्ध के आरम्भ में प्रतापसिंह को सफलता मिली लेकिन बाद में अम्बाजी इगले की सेना ने मैदान छोड़ दिया। उस दिन (8 अगस्त 1778 का) दोनों सेनाएँ अपने-अपने डेरो पर लौट गयी दूसरे दिन प्रतापसिंह ने मराठो को घूँस देकर अपनी ओर मिला लिया।[4] तब *प्रतापसिंह ने अम्बाजी इगले की सहायता से कोटपुतली*[5] *पर आक्रमण किया।*[6] उसने यह निश्चय किया कि पहले शाही सेना से समझौता कर लिया जाय। फिर बाद में जयपुर के इलाको पर अधिकार कर लिया जाए।

29 नवम्बर 1778 को प्रतापसिंह अपने मराठा सहयोगियों और जयपुर के शेखावत सरदारो को लेकर नजफ खाँ से लोहागढ़ में मिला। और उसके समक्ष अधीनता स्वीकार करने का प्रस्ताव रखा।[7] इस समय जयपुर के दीवान खुशाली-*राम बोहरा ने नजफ खाँ के सामने यह प्रस्ताव रखा कि प्रतापसिंह के इरादे अच्छे* नही हैं इसलिए उसका मतक रहना चाहिए।[8] 29 नवम्बर 1778 को प्रतापसिंह नजफ खाँ से मिलने के लिए उपस्थित हुआ। परन्तु खिराज के मामले को लेकर समझौता नही हो सका। क्योंकि प्रतापसिंह ने खिराज देने से इन्कार कर दिया था।[9]

---

1 वही पृ० 269।

2 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 746 47 बस्ता 107 बन्डल 4 5 पृ० 1-4, 5 6।

(ब) *रसिया डूंगरी डीग के 7 मील दक्षिण पश्चिम में स्थित है।*

3 खेरउद्दीन—इबरातनामा भाग 2 पृ 269 ए।

4 खैरउद्दीन—इबरातनामा भाग 1 पृ० 269 ए।

5 कोटपुतली जयपुर उत्तर पूर्व में 67 मील की दूरी पर स्थित है।

6 खेरउद्दीन इबरातनामा भाग *1 पृ० 269 बी।*

7 वही।

(ब) स्किर्कोयान, एच० सी० जयपुर एन्ड लेटर मुगल्स पृ०147

8 खेरउद्दीन इबरातनामा भाग 1 पृ० 269 बी।

9 वही।

ऐसी परिस्थितियों में नजफ खाँ ने हिम्मत बहादुर को भेजा उसने अम्बाजी इगले के सामने यह प्रस्ताव रखा कि वह प्रतापसिंह की सहायता न करे। हिम्मतसिंह बहादुर को अपने उद्देश्य में सफलता मिली। उसने अम्बाजी इगले को 4 लाख रुपया देकर नजफ खाँ की ओर मिला लिया।[1] दूसरे दिन सुबह नजफखाँ ने अचानक प्रतापसिंह पर आक्रमण कर दिया। उस समय प्रतापसिंह प्रार्थना आदि से निवृत्त हुआ ही था कि नवाब की सेना ने उसे डूँगरी में चारों ओर से घेर लिया।[2] प्रतापसिंह इस अचानक आक्रमण से तनिक भी विचलित नहीं हुआ। उसने बड़े उत्साह और उमंग के साथ मुगल सेना का मुकाबला किया। तीन दिन तक युद्ध हुआ जिसमें दोनों ओर के अनेक योद्धा काम आये।[3] चौथे दिन रसद सामग्री की कमी होते हुए भी सैनिकों ने उस दिन लड़ने से मुँह नहीं मोड़ा। पाँचवें दिन प्रतापसिंह को विवश होकर अपने बचे हुए सैनिकों के साथ लक्ष्मणगढ़ की ओर जाना पड़ा क्योंकि मुट्ठी भर राजपूत सैनिकों की सहायता से असंख्य सैनिकों पर विजय प्राप्त करना उसे असम्भव सा प्रतीत हो रहा था।[4] उसके चले जाने पर उसका सारा सामान जो लगभग 20 लाख रुपये के मूल्य का था। मुगल सेना ने लूट लिया।[5] उसने अपने पाँच सौ घुड़सवारों और अनुचरों के साथ दिन को लगभग 11 बजे लक्ष्मणगढ़ में शरण ली और शाम होते-होते राजगढ़ जा पहुँचा।[6]

नजफखाँ की सेना ने अब माचेड़ी राज्य में प्रवेश किया और वहाँ पर लूटमार आरम्भ कर दी। प्रतापसिंह के गाँवों पर अधिकार कर लिया तथा दुर्ग छीन लिये। उस समय ऐसा प्रतीत हो रहा था कि प्रतापसिंह पर मुगलों का पूर्णरूप से अधिकार हो जायेगा।[7] इसी समय नजफखाँ को यह समाचार मिला कि उसका प्रतिद्वन्द्वी

---

1 खैरउद्दीन इबरातनामा भाग 1 पृ० 269 बी।
2 (अ) वही, पृ० 271 बी।
(ब) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 364, 1589 बस्ता 52, 196 बन्डल 10 2 पृ० 111, 29।
3 वही, क्रमांक 403 बस्ता 62 बन्डल 1 पृ० 20।
4 वही, क्रमांक 364, बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 111-12।
5 (अ) वही, क्रमांक 1589, बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 29
(ब) श्यामलदास, वीर विनोद भाग 4 पृ० 1378।
(स) खैरउद्दीन—इबरातनामा, भाग 1 पृ० 271 बी।
6 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 364, 403 बस्ता 52, 62 बन्डल 10, 1 पृ० 113, 20।
7 (अ) खैरउद्दीन—इबरातनामा, भाग 1 पृ० 273 बी।
(ब) माचेड़ी के राव राजा प्रतापसिंह का उत्थान और नजफखाँ के साथ उसके युद्ध देहली क्रोनिकल।
(स) गुलामअली, शाह आलमनामा, भाग 3 पृ० 118-20, 25।

अब्दुल अहद के परामर्श पर मुगल सम्राट राजपूताने मे आने की तैयारी कर रहा रहा है और उसके विरुद्ध मुगल दरबार म षडयन्त्र रचे जा रहे हैं। ऐसा समाचार पाकर उसने प्रतापसिंह स सन्धि कर ली और युद्ध हरजाने के रूप मे प्रतापसिंह स 2 लाख रुपया देना को तैयार हो गया।[1] और वह अपने विरुद्ध अब्दुल अहद द्वारा रचे जा रहे षडयन्त्रो का सामना करने के लिये तथा बादशाह स मिलने के लिए रवाना हो गया।[2]

इस युद्ध म माहनपुर के जागीरदार के पुत्र शेरसिंह तथा अकमालसिंह, पलवा के सगतसिंह और अनायसिंह तथा उदयसिंह आदि सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए। इन्द्रसिंह तथा सन्तोषसिंह आदि सैनिक वीर गति को प्राप्त हुए। इन्द्रसिंह तथा सन्तोषसिंह आदि सैनिक घायल हुए।[3] युद्ध के कुछ दिन पश्चात होशदारखाँ मावेडी लौट आया।[4] उसके आने का समाचार मिलने पर प्रतापसिंह को बडी प्रसन्नता हुई क्योंकि उस होशदारखाँ की स्वामी भक्ति का परिचय रसिया की डूँगरी के युद्ध म पूर्णरूप स मिल चुका था। अत प्रतापसिंह ने बडी धूमधाम के साथ उसका स्वागत कर उस माचाडी के दुग म ठहराया।[5]

मुगल सम्राट का जयपुर के लिए प्रस्थान—

अब्दुल अहदखाँ ने सम्राट को समझाया कि नजफखाँ न राव राजा के विरुद्ध अब तक सफलता प्राप्त नही की है और न ही उसने राज्य कोष म खिराज का एक पैसा भी जमा कराया है। जयपुर नरेश ने गद्दी पर बैठने का नजराना भी नही भेजा है।[6] अब्दुल अहद ने मुगल बादशाह को कछवाहा राज्य पर आक्रमण करने की सलाह दी।[7] मुगल सम्राट शाह आलम ने 10 नवम्बर

---

1 (अ) खेरउद्दीन इबारतनामा भाग 1 पृ० 313 21।
  (ब) मिश्रण सूयमल—वंश भास्कर सजिल्द 5।
2 गुलामअली शाह आलम नामा भाग 3 पृ० 118-20 125।
3 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 1589, बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 20।
  (ब) श्यामलदास—वीर विनोद भाग 4 पृ० 1378।
4 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 364, बस्ता 52 वन्डल 10 पृ० 113-14।
5 वही, क्रमाक 1589 403 बस्ता 196, 62 बन्डल 2, 1 पृ० 30, 21।
6 (अ) खेरउद्दीन इबरात नामा जिल्द 1 पृ० 274 ए।
  (ब) राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली फोरिन सीक्रेट डिपार्टमेन्ट 28 दिसम्बर, फा० 2।
7 (अ) खरेउद्दीन, इबारतनामा, जिल्द 1 पृ० 274 ए
  (ब) राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली, फोरिन सिक्रेट डिपार्टमन्ट 28 दिसम्बर 1778 फा० 2

1778 को दिल्ली से 50 हजार सैनिकों के साथ राजपुताने की ओर कूच किया।[1]

मुगल बादशाह के आगमन का समाचार सुनकर नजफ खाँ उससे मिलने के लिए रवाना हो गया और 19 जनवरी 1779 को बादशाह से जयपुर के निकट अमीनपुर गाँव में जा मिला तथा उसके साथ 26 जनवरी 1779 को जयपुर के लिए प्रस्थान किया।[2] सम्राट के आने का समाचार ज्ञात होने पर खुशालीराम बोहरा ने अनुभव किया कि राज्य की आर्थिक स्थिति को देखते हुए अभी खिराज देना सभव नहीं है। मुगल सम्राट 19 फरवरी 1779 को जयपुर महाराजा सवाई प्रतापसिंह से मिला।[3] खिराज वसूल करने का कार्य करने के लिए नजफ खा और हिम्मत बहादुर को अपने प्रतिनिधि के रूप में जयपुर छोड़कर मुगल सम्राट ने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। इसी समय समाचार मिला कि प्रतापसिंह ने विद्रोह कर दिया है। इसलिए मुगल सम्राट ने 25 मार्च 1779 को नजफ खाँ को विद्रोह को दबाने के लिए भेजा।[4] उस समय प्रतापसिंह थानागाजी में लूटमार कर रहा था।

प्रतापसिंह का सीमान्त प्रदेशों पर आक्रमण—

प्रतापसिंह ने जयपुर के सीमात प्रदेशों पर आक्रमण करना शुरू किया। सर्वप्रथम उसने थानागाजी[5] प्रदेश जो जयपुर राज्य के अन्तर्गत था वहाँ के नवाब फतेहअली खाँ ने छ हजार सवार और बहुत से पैदल सिपाही तथा बहुत सा धन संचय कर रखा था। प्रतापसिंह ने अपने दीवान रामसेवक को इस पर चढाई करने की आज्ञा दी।[6] उसकी आज्ञा मिलते ही दीवान अपने साथ कुछ सेना लेकर थानागाजी की ओर बढा और आधी रात को नवाब की सेना पर सहसा टूट पडा। नवाब

---

1 (अ) केलेन्डर ओफ पर्शियन कोरस्पोन्डेन्स, पृ० 25
(ब) फोरिन सिक्रेट डिपार्टमेन्ट 28 दिसम्बर 1778 फा० 2 रा० अभि० दिल्ली।

2 सरकार जे० एन०—मुगल साम्राज्य का पतन, भाग 3 पृ० 1, 5

3 (अ) राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली, सीक्रेट कन्सलटेशन्स, 19 अप्रैल 1779 फा० 1।
(ब) खेरउद्दीन, इबरातनामा, भाग 1 पृ० 276 बी

4 (अ) खेरउद्दीन, इबरातनामा, भाग 1 पृ० 316 19, 319 21 353-57
(ब) गुलामअली, शाह आलम नामा भाग 3 पृ० 121-23
(स) मुन्नालाल, तारीख ए शाह अलाम, पृ० 207-215

5 थानागाजी—अलवर से 28 मील की दूरी पर अलवर जयपुर रोड पर स्थित है।

6 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 133, 741 बस्ता 18, 107 बन्डल 10, 5 पृ० 7, 1-5

की सेना इस अचानक आक्रमण से घबरा कर तितर-बितर हो गई।[1] नवाब ने शत्रुओं को हटाने का पूरा प्रयत्न किया लेकिन जब उसका कुछ वश न चला तब वह अपना दुर्ग शत्रुओं के हाथ छोड़कर वहीं भाग गया।[1] नवाब के भाग जाने पर प्रताप सिंह के दीवान और सैनिकों ने उसका सारा सामान लूट लिया। रसिया की डूगरी के युद्ध में उनकी जो आर्थिक हानि हुई थी उसकी पूर्ति इस लूट से हो गयी थी।[2]

प्रतापसिंह की लूटमार से जयपुर नरेश सवाई प्रतापसिंह ऐसा भयभीत हुआ कि जयपुर नगर के दरवाजे दिन में भी बन्द रखे जाने लगे।[4]

उसका नाम सुनते ही जयपुर की जनता काँप उठती थी। यद्यपि जयपुर नरेश और प्रतापसिंह के बीच मित्रता थी फिर भी वह उससे शंकित और चौकन्ना रहते थे।[5] उसके पश्चात् सन् 1781 में प्रतापसिंह ने जयपुर राज्य के अन्तर्गत बसवा नामक प्रदेश को लूट लिया। इस लूट में 20 लाख रुपये की सम्पत्ति उसके हाथ लगी।[6]

जयपुर द्वारा नजफ खां से सहायता की मांग—

इसलिये जयपुर के महाराजा ने अपने दीवान खुशालीराम बोहरा को नजफ खाँ के पास खिराज के सम्बन्ध में बातचीत करने के लिये भेजा और बोहरा को जयपुर महाराजा ने यह भी निर्देश दिया कि नजफ खाँ से प्रतापसिंह के आक्रमणों को रोकने के सम्बन्ध में बातचीत करे।[7]

खुशालीराम बोहरा को अपने उद्देश्य में सफलता नहीं मिली। नजफ खाँ ने यह उपयुक्त अवसर समझ कर जयपुर पर आक्रमण करने का निश्चय किया क्योंकि वह जयपुर के महाराजा सवाई प्रतापसिंह से चिढ़ा हुआ था और उससे खिराज

---

1 (अ) वही, क्रमांक 403, बस्ता 62 बन्डल 1 पृ० 26
(ब) मुरक्का ए अलवर पृ० 160
2 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 364, 1589 बस्ता 52, 196 बन्डल 10, 2 पृ० 115 16, 31
3 (अ) वही, क्रमांक 133 403 बस्ता 18, 62 बन्डल 10, 1 पृ० 7, 26
(ब) मुरक्का ए अलवर पृ० 160
4 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 364, 1589 बस्ता 52, 196 बन्डल 10, पृ० 114-31
5 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 747, 403 बस्ता 107, 62 बन्डल 5, 1 पृ० 1-5, 26
6 वही, क्रमांक 417, 747 बस्ता 62, 107 बन्डल 14 5 पृ० 2, 1-5
7 राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली, फोरेन डिपार्टमेन्ट सीक्रेट कन्सलटेशन 19 अप्रेल 1779 फाइल 1।

वसूल करना चाहता था। मुगल सम्राट ने जयपुर पर आक्रमण करने के लिये दोना तरफ से सेना भेजी। मुर्तजा खाँ उत्तर पश्चिम और महबूबअली तथा हिम्मत बहादुर ने दक्षिण पूर्व मे 1780 मे आक्रमण किया।[1] जब नजफ खाँ के नेतृत्व म महबूबअली विजय प्राप्त करता हुआ जयपुर राज्य की सीमा म बढता आ रहा था, उस समय खुशालीराम बोहरा ने प्रतापसिंह से प्रार्थना की कि वह जयपुर राज्य के अपने जाति मुखिया को बचाये।[2] लेकिन प्रतापसिंह न जयपुर महाराज का निम्न दो कारणो स सहायता देने से इन्कार कर दिया

1 प्रतापसिंह का यह कहना था कि जयपुर महाराजा पर विश्वास नही है क्योकि एक बार जयपुर महाराजा ने उसकी हत्या के लिये षडयन्त्र रचा था और उस पर गोली चलाई थी।
2 जयपुर महाराजा के कहने स नजफ खाँ ने उसके इलाका पर अधिकार कर लिया था।[3]

प्रतापसिंह के इन्कार करने पर खुशालीराम बोहरा न महबूबअली स सन्धि करने के लिये प्रयास शुरू किय उसने महबूबअली म कहा कि प्रतापसिंह न जयपुर के कुछ इलाको पर अधिकार कर लिया था इसलिय उन पर वापस अधिकार करने के लिये वह उसकी सेना को अपने यहाँ किराय पर रख लेगा।[4] इस समय प्रतापसिंह जयपुर राज्य मे शेखावटी की सीमा पर लूटमार करने म व्यस्त था और जयपुर के कुछ इलाको पर अपना अधिकार कर चुका था।[5]

इसी समय जयपुर क दीवान खुशालीराम बोहरा ने अलवर के प्रतापसिंह को जयपुर की सीमा मे स बाहर निकालने के लिए एक सेना माच 1781 म भेजी लेकिन इस सेना को भी असफलता मिली।[6] धन की कमी के कारण महबूबअली की सेना बिखर गई इसलिए उसने खिराज वसूल करने का काम हिम्मत बहादुर को सौंप दिया। इस प्रकार जब जयपुर के महाराजा और प्रतापसिंह के बीच कटु सम्बन्ध होते जा रहे थे उस समय प्रतापसिंह ने मोहम्मद बेग हमदानी को घूँस देकर अपना समर्थक बना लिया।[7]

---

1 सरकार जे० एन०—मुगल साम्राज्य का पतन, भाग 3 पृ० 225
2 सरकार जे० एन०—मुगल साम्राज्य का पतन, भाग 3 पृ० 225
3 वही।
4 वही।
5 वही।
6 (अ) सरकार जे० एन०—मुगल साम्राज्य का पतन, जिल्द 3 पृ० 225।
(ब) गहलोत सुखवीरसिंह—राजस्थान के इतिहास का तिथि क्रम पृ० 72
7, सरकार जे० एन०—मुगल साम्राज्य का पतन, भाग 3 पृ० 226।

नजफ खाँ ने अपनी पहली जीत की उमग मे प्रतापसिंह पर फिर आक्रमण किया। इस बार हमदानी ने भी उसका साथ दिया।[1] नजफ खाँ ने अपने सेनापति खुशालीराम को प्रतापसिंह पर चढाई करने की आज्ञा दी और उसके अधीन एक बहुत बडी सेना भेजी।[2] खुशालीराम लक्ष्मणगढ तहसील मे घाट[3] नामक स्थान पर आकर ठहरा। इधर खुशालीराम तो अलवर पर आक्रमण करने की तैयारी मे लगा हुआ था और शाह अलम ने जयपुर नरेश महाराजा सवाई प्रतापसिंह पर चढाई करने मे नजफ खाँ से सहायता माँगी।[4]

बादशाह शाह आलम ने नजफ खाँ को सहायता देने के लिए उसे अपने पास बुलाया लेकिन नजफ खाँ ने बादशाह के उक्त प्रस्ताव का विरोध किया और वह (नजफ खाँ) जयपुर नरेश स मिल गया।[5] जयपुर नरेश ने नजफ खाँ का अपने यहाँ बडा आदर सत्कार किया।[6] जयपुर नरेश से विदा होकर नवाब नजफ खाँ थानागाजी[7] की ओर बढा जहाँ चडीदास चारण ने एक मास तक उसका बडी वीरता से समाना किया।[8] जब प्रतापसिंह ने चण्डीदास को अपने पास अलवर बुला लिया तब थानागाजी मे नजफ खाँ की सेना का सामना करने वाला कोई नही होने से थानागाजी पर उसका अधिकार हो गया।[9]

नजफ खाँ की जयपुर को सहायता और प्रतापसिंह पर आक्रमण—

इसके पश्चात् खुशालीराम की सलाह के अनुसार नजफ खाँ ने अपनी सना के साथ अलवर की ओर प्रस्थान किया।[10] मुस्लिम सेना मार्ग मे दो दिन ठहर कर तीसरे दिन अलवर स बाबोली[11] नामक स्थान पर आ पहुँची।[12] जब नजफ खाँ के

---

1 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 364 बस्ता 52 बण्डल 10 पृ० 117।
2 वही, क्रमाक 1589 बस्ता 196 बण्डल 2 पृ० 32।
3 घाट—अलवर से लगभग 12 मील की दूरी पर स्थित है।
4 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 364 बस्ता 52 बण्डल 10 पृ० 117।
5 रा० रा० अभि० बीकानर, क्रमाक 403, बस्ता 62 बन्डल 1 पृ० 21
6 वही, क्रमाक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 18
7 थानागाजी, अलवर से 28 मील की दूरी पर अलवर जयपुर रोड पर स्थित है।
8 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1589 बस्ता 196 बण्डल 2 पृ० 33।
9 वही क्रमाक 1589, 403 बस्ता 196, 62 बण्डल 2, 1 पृ० 33 पृ० 21
10 वही, क्रमाक 364 बस्ता 52 बण्डल 10, पृ० 119।
11 बाबोली, अलवर से लगभग 10 मील की दूरी पर दशान कोण मे स्थित है।
12 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 133 बस्ता 18 बन्डल 10 पृ० 7।

सैन्य बल का समाचार प्रतापसिंह को मिला तब उसने पीठ दिखाकर भागने की की अपेक्षा युद्ध भूमि में लड़कर मारा जाना उचित समझा।[1]

इस समय नजफ खाँ के पास 60 हजार सैनिक थे वह हाथी पर सवार था और उसके आगे उसका सेनापति खुशालीराम था।[2] प्रतापसिंह भी अपने दल बल के साथ रणस्थल में आ डटा। इस युद्ध में क्षत्रिय वीरों ने ऐसा उत्साह दिखाया कि मुस्लिम सेना के छक्के छूट गये। खुशालीराम घायल हुआ और नजफ खाँ की सेना के पैर उखड़ गये।[3]

इस युद्ध के अनन्तर बादशाह आलम ने नवाब नजफ खाँ को अपने पास बुला भेजा।[4] नजफ खाँ अपने साथ दौलतराम, नन्दराम और खुशालीराम को लेकर दिल्ली चला गया।[5]

नवाब नजफ खाँ ने प्रतापसिंह के साथ सन्धि कर ली और रमिया की डूंगरी के युद्ध में उनका जो सामान लूट लिया था वह सब उनको वापस लौटा दिया गया।[6]

हल्दिया बन्धु कुछ दिन दिल्ली में रहकर जयपुर चले गये।[7] जयपुर में खुशालीराम तथा उसके भाई दौलतराम का बड़ा आदर सत्कार किया गया और उन्हें क्रमशः मन्त्री और सेनापति बनाया गया।[8]

जयपुर नरेश का राजगढ़ पर आक्रमण (1782)—

खुशालीराम ने अपनी सेना सहित बावड़ी मेड़ा की ओर कूच किया। मार्ग में किलेबन्दी करता हुआ वह गुन्याना जा पहुँचा जहाँ वैशाखी उपज का कर लेकर कस्बे में जयपुर महाराजा से जाकर मिल गया।[9] जयपुर महाराजा ने खुशालीराम के परामर्श के अनुसार प्रतापसिंह पर आक्रमण करने का निश्चय कर करवा जाकर अपना मोर्चा जमाया। उसके साथ नाथावत और दौलतराम हल्दिया भी थे। खुशालीराम भी जयपुर महाराजा से करवा में जाकर मिल गया था।[10]

---

1 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 364, बस्ता 52, बन्डल 10, पृ० 20
2 वही, क्रमांक 1589, बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 34
3 वही, क्रमांक 133 बस्ता 18 बन्डल 10 पृ० 7
4 वही, क्रमांक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 121
5 वही, क्रमांक 133 बस्ता 18 बन्डल 10 पृ० 7
6 वही, क्रमांक 1589 बस्ता 196, बन्डल 2 पृ० 34
7 (अ) वही क्रमांक 133 बन्डल 10 बस्ता 18 पृ० 7
(ब) शर्मा हनु० प्र०—जयपुर राज्य का इतिहास पृ० 195
8 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 364, बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 122
9 वही, क्रमांक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 35
10 वही, क्रमांक 1260 बस्ता 175 बन्डल 1, पृ० 2

प्रतापसिंह को यह समाचार ज्ञात हुआ तो वह रात को पाँच सौ सवारों के साथ जयपुर की सेना में घुस गया और जयपुर नरेश के पास बंधे हुए परचाल के भैंस तथा अनेक नाथ वत ठाकुरों को तलवार के घाट उतार दिया बाद में उसने राजगढ की ओर प्रस्थान किया।[1]

खुशालीराम ने जयपुर की ओर से वीरता का प्रदर्शन किया था। परन्तु प्रतापसिंह की अद्‌भूत वीरता से जयपुर की सारी सेना में खलबली मच गई। दौलतराम हल्दिया के उत्तेजित करने से वह सेना शीघ्र ही पुनः युद्ध के लिये तैय्यार हो गई।[2]

प्रतापसिंह के राजगढ लौटते समय जयपुर की सेना ने उसका पीछा किया।[3] मार्ग में युद्ध हुआ। दोनों ओर के कई सैनिक घायल हुए। इस युद्ध में सामन्तसिंह नरवान नामक प्रतापसिंह के पक्ष का एक यौद्धा वीरता पूर्वक लड़ता हुआ मारा गया।[4] सामन्तसिंह की शक्ल प्रतापसिंह से बहुत कुछ मिलती जुलती थी।[5] स्वयं जयपुर नरेश शव की परीक्षा कर अपना सन्देह दूर करने के लिये उसके निकट आये।[6]

मृतक को ध्यानपूर्वक देखने से जयपुर महाराजा को यह निश्चय हो गया कि यह शव प्रतापसिंह का ही था। अतएव उन्होंने मृत देह की अन्त्येष्टि क्रिया प्रतिष्ठा के साथ करवा दी।[7]

जब प्रतापसिंह को इसकी सूचना मिली तब उन्होंने जयपुर नरेश को लिखा कि जिस प्रतापसिंह की मृत्यु का समाचार पाकर आप फूले नहीं समा रहे हो वह परमात्मा की कृपा से अभी तक जीवित है अतएव आपको सावधान रहना चाहिये और सर्वथा निश्चिन्त न हो जाना चाहिये।[8]

पत्र पाकर जयपुर नरेश को बड़ा दुःख हुआ और क्रोधित होकर उसने अपने सेनानायकों को तत्काल राजगढ पर आक्रमण करने की आज्ञा दी।[9] परन्तु जयपुर के दीवान खुशालीराम बौहरा के समझाने से युद्ध टल गया।[10] जयपुर नरेश ने प्रतापसिंह

---

1 वही, क्रमांक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 125

2 (अ) वही क्रमांक 1260 बस्ता 175 बन्डल 1 पृ० 2
(ब) श्यामलदास—वीर विनोद भाग 4 पृ० 1378

3 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 126

4 इसके वंशज ठाकुर नरवान राजगढ तहसील के मूँडिया गाँव के मुआफीदार थे।

5 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 36
(ब) वही, क्रमांक 1260 बस्ता 175 बन्डल 1 पृ० 2

6 वही, क्रमांक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 126-27

7 वही, क्रमांक 1586 बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 36

8 वही, क्रमांक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 37

9 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 1260 बस्ता 175 बन्डल 1 पृ० 2।

10 वही, क्रमांक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2।

से सन्धि कर ली।[1] राजगढ से लौटते समय जयपुर महाराजा की आज्ञा से उसकी सेना ने मार्ग मे प्रयागपुरा और पावटा आदि कई परगनो पर अधिकार कर लिया।[2] फिर जयपुर महाराज ने अपने मन मे प्रतापसिंह को गद्दी से हटाकर दूसरे को राजा बनाने का दृढ सकल्प कर लिया।[3] उसने इस विषय मे खुशालीराम बोहरा तथा अपने अधीनस्थ सब जागीरदारो और ठाकुरो की सलाह ली।[4]

जयपुर दरबार से ऐसे सरदारो की कमी नही थी जो प्रतापसिंह का अभ्युदय और उत्कर्ष देखकर उनसे द्वेष रखते थ। वे ऐसे अवसर की तलाश मे बहुत दिनो से थे। कुछ सरदारो के सिवाय शेष सब सरदार एव सभासद प्रतापसिंह को नीचा दिखाने के लिए दृढ सकल्प थे।[5]

जयपुर नरेश को जब यह निश्चय हो गया कि उसके प्रधान सरदार और जागीरदारो की उनके उक्त विचार से पूर्ण सहानुभूति है और उनमे से बहुत से सरदार उनके विचार को कार्यरूप मे परिणित करने को उत्सुक हैं तब उसने पुन राजगढ पर आक्रमण करने की तैयारी शुरू कर दी।[6]

प्रतापसिंह ने भी जयपुर के कुछ सरदारो से मिलकर जयपुर नरेश महाराजा सवाई प्रतापसिंह को जयपुर की गद्दी से हटाकर किसी दूसरे को राजा बनाने के लिए सिन्धिया की सेना के साथ जयपुर पर आक्रमण करने के लिए प्रस्थान किया।[7] उसके सिन्धिया से मिल जाने पर जयपुर नरेश ने विवश होकर फिर उससे सन्धि करने के लिए प्रार्थना की।[8] प्रतापसिंह ने सन्धि प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।[9]

दोनो पक्षों के बीच हुई सन्धि की प्रमुख शर्तें निम्नलिखित थीं।

1 खुशालीराम बोहरा को जेल से मुक्त कर दिया जाय।

2 दौलतराम हल्दिया जयपुर राज्य स निकाल दिया जाय।

3 राव राजा प्रतापसिंह के जो परगने जयपुर नरेश ने दबा लिए थे वे उन्हे फिर स लौटा दिये जायें।[10]

---

1 वही, क्रमाक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 37।
2 (अ) वही क्रमाक 364, बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 129।
(ब) श्यामलदास—वीर विनोद, पृ० 1378।
3 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1260 बस्ता 175 बन्डल 1 पृ० 2।
4 वही क्रमाक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 37।
5 वही क्रमाक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 131।
6 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 364, बस्ता 52 बण्डल 10 पृ० 131।
7 वही, क्रमाक 1589, बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 39।
8 वही, क्रमाक 1260 बस्ता 175 बन्डल 1 पृ० 2-3।
9 वही,
10 वही, क्रमाक 364 बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 133।

जयपुर नरेश ने उक्त तीनों शर्तों को स्वीकार कर लिया।[1]

दौलतराम हल्दिया जोधपुर चला गया और सिन्धिया की सेना वापस लौट गई।[2] जिसको जयपुर के सिंहासन पर बिठाने की बात थी उसे प्रतापसिंह ने सिन्धिया से अनुरोध कर माट और महावन आदि कई परगने दिला दिये और उससे अनुरोध कर उसका प्रमाण पत्र भी दिलवा दिया।[3]

मराठों का बढ़ता हुआ प्रभाव

बादशाही सेनाओं के निरन्तर आक्रमणों से इस समय जयपुर की आन्तरिक दशा भी अत्यन्त शोचनीय थी। पृथ्वीसिंह के मानसिंह नामक लड़का था और उसकी मृत्यु के पश्चात् वही राजगद्दी का असली दावेदार था लेकिन पृथ्वीसिंह के छोटे भाई सवाई प्रतापसिंह ने जबरदस्ती जयपुर राज्य की गद्दी पर अधिकार कर लिया था। माचेड़ी का प्रतापसिंह सवाई प्रतापसिंह को हटाकर पृथ्वीसिंह के पुत्र मानसिंह को जयपुर की गद्दी पर बिठाना चाहता था ताकि वह उस बच्चे की ओट में जयपुर राज्य व सत्ता का उपयोग कर सके। प्रतापसिंह को जयपुर के दीवान खुशालीराम बोहरा का इस मामले में सहयोग मिला। जब जयपुर महाराजा सवाई प्रतापसिंह को इस बात का पता चला तो खुशालीराम पर बहुत नाराज हुआ। प्रतापसिंह ने महादजी सिन्धिया को भी सहायता देने के लिए कहा लेकिन सिन्धिया ने मानसिंह को वृन्दावन की जागीर प्रदान कर इस मामले को टाल दिया।[4]

मुगल सम्राट ने एक दिसम्बर 1784 को महादजी सिन्धिया को "वकील ए मुतलक" के पद पर नियुक्त किया।[5] सिन्धिया को जयपुर के महाराजा से चढ़ा हुआ खिराज वसूल करने तथा चौथ वसूल करने का कार्य सौंपा गया। 1779 में जयपुर महाराजा ने खिराज का दो लाख रुपया दिया था और यह वचन दिया था कि बकाया 20 लाख रुपये का भुगतान किश्तों में दे दिया जावेगा।[6] किन्तु जब जयपुर महाराजा ने किश्तों का भुगतान नहीं किया तब नजफ खाँ ने 1780-81 में जयपुर पर आक्रमण करने के लिए दो सेनाएँ भेजी।[7] लेकिन उसका भी कोई परिणाम नहीं

---

1 वही,
2 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक, 364, बस्ता 52 बन्डल 10 पृ० 133।
3. वही, क्रमांक 1589 बस्ता 196 बन्डल 2 पृ० 40।
4 सरकार जे० एन०—मुगल साम्राज्य का पतन जिल्द 3 पृ० 228।
5. (अ) सरकार जे० एन० मुगल साम्राज्य का पतन, जिल्द 3 पृ० 228
   (ब) पूना रेजीडेन्सी कोरसपोन्डेन्स, भाग 1 पृ० 17
   (स) गहलोत सुखवीरसिंह—राजस्थान का संक्षिप्त इतिहास पृ० 118
6 सरकार जे० एन०—मुगल साम्राज्य का पतन जिल्द 3 पृ० 229
7. (अ) गहलोत सुखवीरसिंह—राजस्थान का संक्षिप्त इतिहास पृ० 118
   (ब) शर्मा एम० एल०—जयपुर राज्य का इतिहास पृ० 166

लिखा। 1782 से 1784 तक तीन वर्ष की अवधि में जयपुर महाराजा ने खिराज का एक पैसा भी भुगतान नहीं किया। चूँकि इस समय दिल्ली में बादशाह की स्थिति अत्यन्त शोचनीय थी और आन्तरिक रूप से षड्यन्त्र रचे जा रहे थे। इसलिए जयपुर की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया।[1]

जयपुर महाराजा खिराज देने के लिए टालमटोल करता रहा तब महादजी ने शक्ति का प्रयोग कर जयपुर महाराजा से खिराज की रकम वसूल करने का निश्चय किया। इसलिए महादजी खिराज वसूल करने के लिए 1786 में सेना लेकर जयपुर पर आक्रमण करने के लिए रवाना हो गया। मार्ग में महादजी सिन्धिया ने भरतपुर नरेश रणजीतसिंह तथा माचेड़ी के राव राजा प्रतापसिंह से मित्रता कर ली।[2] महादजी सिन्धिया ने महुवा रायगढ के पास जयपुर राज्य की सीमा पर आक्रमण किया। उस समय जयपुर का दीवान खुशालीराम बोहरा सन्धि का प्रस्ताव लेकर महादजी सिन्धिया को खिराज 21 लाख रुपये देने का वायदा किया।[3]

सिन्धिया का जयपुर पर पहला आक्रमण और समझौता—

महादजी सिन्धिया ने 3 जनवरी 1786 को अपनी सेना के साथ सम्राट को लेकर जयपुर की ओर प्रस्थान किया। 10 जनवरी 1786 को सिन्धिया और मुगल सम्राट डीग पहुँचे।[4] 10 जनवरी 1786 तक डीग में रुककर महादजी सिन्धिया खिराज के बारे में जयपुर महाराजा के जवाब की इन्तजार करता रहा।[5] महादजी सिन्धिया के जयपुर के दीवान खुशालीराम बोहरा और प्रतापसिंह के द्वारा यह प्रयास किया कि शक्ति का प्रयोग किए बिना खिराज वसूल हो जाए परन्तु उसको अपने उद्देश्य में सफलता नहीं मिली। इसलिए महादजी सिन्धिया अपनी सेना के साथ 1 मार्च 1786 को लालसोट तक आ पहुँचा। इस समय प्रतापसिंह[6] जयपुर के दीवान खुशालीराम बोहरा और बालाजी गट्टत को लेकर महादजी के समक्ष उप-

1 सरकार जे० एन०—मुगल साम्राज्य का पतन भाग 3 पृ० 229
2 (अ) खेरउद्दीन, इबरात नामा पृ० 139
(ब) हिस्टोरिकल पेपर्स रिलेटिंग टू महादजी सिन्धिया पृ० 406
(स) दिल्ली येथील मराठा यान्ची राजकारणे पृ० 133
3 (अ) दिल्ली येथील मराठा यान्ची राजकारणे पृ० 133
(ब) हिस्टोरिकल पेपर्स रिलेटिंग टू महादजी सिन्धिया 406
(स) पारसनीस, डी० बी०—महेश्वर दरबाराचीन वतामी पत्रे पृ० 162
(द) खेरउद्दीन, वृत इबरात नामा, पृ० 139
4 खेरउद्दीन, इबरात नामा भाग 2 पृ० 139
5 वही।
6 (अ) दिल्ली येथील मराठा यान्ची राजकारणे, जिल्द 1 पृ० 172
(ब) पारसीनीस डी० बी०, महेश्वर दरबाराचीन वातासी पत्रे भाग 2 पृ० 124

स्थित हुआ। 19 मार्च 1786 को महादजी ने बोहरा और बालाजी से बातचीत शुरू की।

इस पर यह समझौता हुआ कि पिछले वर्ष खिराज के 21 लाख रुपये देने के बारे में जो वायदा किया गया था इसमें 3 लाख रुपये न नकद दिये जाय और हिण्डौन के परगने को सौंप दिया जाय जिसकी आमदनी दस लाख रुपये थी तथा 7 लाख रुपये जागीरदारों से लिया जाय।[1] जो परगने जयपुर नरेश ने महादजी सिन्धिया को खिराज वसूल करने के लिये उन पर पहले से ही सिन्धिया की तरफ से प्रताप सिंह और नजफ कुली खाँ अधिकार कर चुके थे। ऐसी परिस्थिति में खुशालीराम बोहरा ने प्रस्ताव रखा कि इन परगनों पर से प्रतापसिंह व नजफ कुली खाँ का अधिकार हटाया जाये और मुगल सेना ने इन परगनों पर अधिकार करते समय फसल को जो नुकसान पहुँचाया था उतनी राशि खिराज की रकम में से कम की जाय।[2]

ऐसा प्रतीत हो रहा था कि महादजी सिन्धिया और जयपुर के बीच युद्ध प्रारम्भ हो जायेगा क्योंकि प्रतापसिंह अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए दोहरी चाल चल रहा था।[3] वह चाहता था कि खिराज के बारे में जयपुर और सिन्धिया के बीच में समझौता न हो। इसका मुख्य कारण यह था कि यदि समझौता हो जाता तो नारनौल परगना जिस पर उसने अधिकार कर लिया था, उसे वापस देना पड़ता। इसलिए प्रतापसिंह महादजी सिन्धिया को ही परामर्श देता रहा कि वह खिराज की माँग बढ़ाता जाये। इस पर सिन्धिया ने जयपुर से खिराज के 60 लाख रुपये माँगे। इससे यह स्पष्ट था कि इतनी अधिक खिराज की राशि पर दोनों में कोई समझौता नहीं हो सकता था।[4]

प्रतापसिंह के महादजी सिन्धिया को यह परामर्श दिया कि वह सम्राट को अपने साथ लेकर डीग से जयपुर तक आया है इसलिए यदि वह खिराज की बहुत

---

1 (अ) दिल्ली येथील मराठा यान्ची राजकारणे पृ० 133
   (ब) पारसनीस डी० बी० बातामी पत्रे पृ० 162
   (स) हिस्टोरिकल पेपर्स रिगार्डिंग टू महादजी सिन्धिया पृ० 406
   (द) खेरउद्दीन, इबरात नामा पृ० 139

2 पारसनीस डी० बी० बातानी पत्र पृ० 216

3 (अ) पारसनीस डी० बी०—बातामी पत्रे, पृष्ठ 216
   (ब) टिक्कीवाल—एच० सी० जयपुर एण्ड द लेटर मुगल्स, पृ० 161

4 (अ) दिल्ली येथील मराठा यान्ची राजकारणे, भाग 1 पृ० 162
   (ब) पारसनीस डी० बी०—बातामी पत्रे भाग 1, पृ० 116

कम राशि जयपुर से लेगा तो उसकी प्रतिष्ठा को धक्का पहुँचेगा ।[1] यदि जयपुर महाराज खिराज की राशि देने मे असमर्थ हो तो जयपुर महाराजा सवाई प्रताप-सिंह को गद्दी से हटा दिया जाये और उसके बजाय पृथ्वीसिंह के पुत्र मानसिंह को जो कि गद्दी का वास्तविक उत्तराधिकारी था, जयपुर राज्य का शासक बनाकर उसको वहाँ का सरक्षक बना दिया जाय तो वह इसके एवज मे उसको 50 लाख रुपये देगा ।[2]

प्रतापसिंह की इच्छा यही थी कि वह मराठो का प्रतिनिधि बन कर जयपुर राज्य मे अपना हस्तक्षेप और भय बनाये रखे लेकिन कुछ ही समय मे महादजी सिन्धिया को यह पता चल गया कि प्रतापसिंह बडा स्वार्थी और दगाबाज है तथा दोहरी नीति पर चलने वाला है। इसलिए उसने उस पर विश्वास करना छोड दिया ।[3] महादजी सिन्धिया ने जयपुर महाराजा को बकाया खिराज 3 करोड 40 लाख रुपया वसूल करने का निश्चय किया ।[4] अन्त मे महादजी सिन्धिया को जय-पुर के दीवान खुशालीराम बोहरा ने इस बात पर सहमत कर लिया कि जयपुर महाराजा सिर्फ 62 लाख रुपया ही खिराज के रूप मे देंगे ।[5]

खिराज की पहली किश्त 11 लाख रुपया तो तत्काल महादजी सिन्धिया को उसी समय दे दी गयी। महादजी सिन्धिया ने दूसरी किश्त के दस लाख रुपया जागीरदारो से वसूल करने एव जयपुर महाराजा द्वारा किये गये परगनो पर अपना अधिकार बनाये रखने के लिए प्रतापसिंह, नजफ कुली खाँ और रायजी पाटिल को सेना सहित मई 1887 के अन्त मे जयपुर राज्य छोड़ दिया ।[6] महादजी सिन्धिया जयपुर छोडकर मथुरा पहुँचा और मथुरा तथा वृन्दावन मे उसने पाँच महीने आराम से बिताये ।[7]

---

1. (अ) दिल्ली येथील मराठा यान्ची राजकारणे, भाग 1 पृ० 162
   (ब) पारसनीस डी० बी०—बातानी पत्रे, भाग 1 पृ० 116
2. दिल्ली येथील मराठा यान्ची राजकारणे, जिल्द 1 पृ० 133
3. खेरउद्दीन, इबरात नामा, भाग 2 पृ० 156
4. दिल्ली येथील मराठा यान्ची राजकारणे, भाग 1 पृ० 162
5. दिल्ली येथील मराठा यान्ची राजकारणे, भाग 1 पृ० 163
6. (अ) खेरउद्दीन, इबरातनामा भाग 2, पृ० 140-41
   (ब) मुन्नालाल, तारीख ए शाह आलम पृ० 79 ए
   (स) दिल्ली येथील मराठा यान्ची राजकारणे, भाग 1 पृ 163
7. (अ) खेरउद्दीन, इबरातनामा भाग 2 पृ० 140-41
   (ब) मुन्नालाल, तारीख ए शाह आलम पृ० 79 ए

महादजी सिन्धिया बकाया खिराज को वसूल करने के लिए प्रतापसिंह और नजफ कुली खाँ को छोड़कर स्वयं मथुरा की ओर रवाना हो गया था। प्रश्न यह था कि जयपुर महाराजा खिराज का एक भी पैसा नहीं देना चाहता था जब जब भी उसके विरुद्ध सैनिक अभियान किया जाता था तब-तब वह थोड़ा बहुत खिराज दे देता था।[1] महादजी सिन्धिया के जाने के पश्चात् जयपुर महाराजा सवाई प्रतापसिंह ने कर देने से इन्कार कर दिया। ऐसी परिस्थिति में महाराजा सिन्धिया के प्रतिनिधि रायजी पाटिल ने जिसको नजफ कुली खाँ और प्रतापसिंह का सहयोग प्राप्त था उसने खिराज वसूल करने के लिए सेना सहित 4 महीने में जयपुर पर आक्रमण करने के लिए वहाँ पहुंचने का निश्चय किया।[2]

इस समय जयपुर महाराजा ने मई 1786 में दौलतराम हल्दिया को लखनऊ भेज कर अँग्रेजों की मराठों के विरुद्ध सहायता प्राप्त करने का प्रयास किया लेकिन दौलतराम हल्दिया को अपने उद्देश्य में सफलता नहीं मिली क्योंकि उस समय का अँग्रेज गवर्नर चार्ल्स कार्नवालिस राज्य के झगड़ों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहता था।[3]

दौलतराम हल्दिया लखनऊ से असफल होकर जनवरी 1786 में जयपुर पहुँचा, इस समय खुशालीराम बोहरा ने मराठों का समर्थन प्रारम्भ कर दिया था। वह प्रयास कर रहा था कि जयपुर महाराजा सवाई प्रतापसिंह को हटाकर उसके स्थान पर पृथ्वीसिंह के पुत्र मानसिंह को जयपुर राज्य का शासक बनाया जाय।[4]

जब जयपुर महाराजा सवाई प्रतापसिंह को खुशालीराम बोहरा के इस षड्यन्त्र का पता चला तो उन्होंने उसको दीवान पद से हटा दिया और उसके स्थान

---

1 (अ) केलेण्डर ओफ पर्शियन कोरसपोन्डेन्स, भाग 7 पृ० 516
 (ब) खेरउद्दीन इबरातनामा पृ० 162।
 (स) गुलाम अली, शाहआलम नामा, भाग 3 पृ० 231।

2 (अ) दिल्ली येथील मराठा यान्ची राजकारणे, भाग 1 पृ० 173-199।
 (ब) खेरउद्दीन, इबरात नामा, पृ० 219।
 (स) अन्सार मुहम्मदअली खान, तारीख ए मुजफ्फरी, पृ० 267।

3 (अ) पूना रेजीडेन्सी कोरसपोन्डेन्स, भाग 1 पृ० 86।
 (ब) दिल्ली यथील मराठा यान्ची राजकारणे, पृ० 90।
 (स) ग्हलौत जगदीशसिंह जयपुर व अलवर राज्यों के इतिहास के पृ० 221 पर यह लिखा हुआ है कि दौलतराम हल्दिया को अँग्रेजों ने सहायता देने का आश्वासन दे दिया था। यह कथन सही प्रतीत नहीं होता क्योंकि मराठी साधनों से इस बात की पुष्टि नहीं होती।

4 दिल्ली येथील मराठा यान्चो राजकारणे, भाग 1 पृ० 173 220

पर 20 जनवरी 1787 को दौलतराम हल्दिया को दीवान के पद पर नियुक्त किया जो कि मराठों का घोर विरोधी था।[1]

दौलतराम हल्दिया को यह आशा थी कि अंग्रेज मराठों के विरुद्ध भी उसकी सहायता करेंगे। इसलिए उसने मराठो को निश्चित खिराज देने से इन्कार कर दिया और जोधपुर के महाराजा से सहायता माँगी। इस पर जोधपुर महाराजा विजयसिंह ने जयपुर को सहायता देने का आश्वासन दिया। महादजी सिन्धिया की लगभग 50 हजार सेना पहले से ही जयपुर में विद्यमान थी परन्तु जब उसे दौलतराम हल्दिया की गतिविधियों की सूचना मिली तो महादजी सिंधिया 24 मार्च 1787 को अपनी सेना सहित दौसा पहुँचा।[2]

जयपुर महाराजा सवाई प्रतापसिंह ने यह प्रयास किया कि मुगल सम्राट शाह आलम महादजी सिन्धिया को यह आदेश दे दे कि वह जयपुर के विरुद्ध सैनिक कार्य-वाही न करे।[3] उधर शाह आलम को यह डर था कि यदि महादजी सिन्धिया जयपुर में असफल हो गया तो अंग्रेज वहाँ अपना अधिकार कर लेंगे। इसलिए मुगल सम्राट शाह आलम सिन्धिया को दुबारा शान्तिपूर्वक समझौता करने की सलाह दी।[4]

इस प्रकार समझौते की बातचीत प्रारम्भ हुई। सिन्धिया भी राजपूतों से युद्ध नहीं करना चाहता था। केवल कूटनीति से खिराज वसूल करना चाहता था। जब जयपुर के महाराजा सवाई प्रतापसिंह ने खुशालीराम बोहरा को दीवान पद से हटा कर उसके बजाय दौलतराम हल्दिया को दीवान बना दिया तो खुशालीराम बोहरा महादजी सिन्धिया के पास चला गया।[5] लेकिन इस समय प्रतापसिंह यह चाहता था कि सिन्धिया जयपुर पर आक्रमण करे। उसने सिन्धिया को कहा कि यदि पृथ्वीसिंह के लड़के मानसिंह को जयपुर की गद्दी पर सवाई प्रतापसिंह को हटाकर बिठा दिया

---

1. (अ) पारसनीस डी० बी० बातामी पत्र भाग 2 पृ० 110
   (ब) दिल्ली येथील, मराठा यान्ची राजकारणे, भाग 1 पृ० 172-220।
2. (अ) दौसा—जयपुर के पूर्व में 32 मील की दूरी पर स्थित है।
   (ब) दिल्ली येथील मराठा यान्ची राजकारणे, भाग 1 पृ० 199
   (स) पूना रेजीडेन्सी कोरसपोन्डेन्स, भाग 1 पृ० 58, 70, 80, 82।
3. पारसनीस डी० बी० बातामी पत्र, भाग 2 पृ० 110।
4. पूना रेजीडेन्सी कोरसपोन्डेन्स, पृ० 199 भाग 1।
5. (अ) वही, भाग 1 पृ० 86, 175।
   (ब) दिल्ली येथील मराठा यान्ची राजकारणे, भाग 1 पृ० 90।

जाय और देवास[1] का दुर्ग उसे सौंप दिया जाय तो वह जयपुर सरकार पर जितना भी खिराज चढा हुआ है वह सब भुगतान कर देगा।[2]

लेकिन सिन्धिया प्रतापसिंह की राजनैतिक चालो को समझता था। अत उसने उसकी बातो की ओर ध्यान नही दिया। इस समय जयपुर और महादजी सिन्धिया के बीच खिराज के समझौते के बारे मे बातचीत चल रही थी। जब महादजी सिन्धिया ने खिराज की मांग की तब जयपुर के दीवान दौलतराम हल्दिया ने रोड़ा राम को सिन्धिया के पास भेजकर यह कहलवाया कि 4 लाख रुपया तो हम तत्काल और दो लाख रुपया 6 महीने और बकाया 6 लाख रुपये के भुगतान के लिए कुछ परगने दे देंगे लेकिन खुशालीराम बोहरा को हमे सौंप दिया जावे।[3]

प्रतापसिंह और खुशाली राम बोहरा ने सिन्धिया को यह सुझाव दिया कि जयपुर के प्रस्तावो को ठुकरा दिया जाय लेकिन सिन्धिया ने मध्यम नीति का अनुसरण किया।[4] जयपुर की ओर से निवेदन किया गया कि 4 लाख रुपया तो हम तत्काल दे देते हैं बाकी के आठ लाख रुपये बाद मे दे देंगे। इस पर सिन्धिया ने खुशाली राम बोहरा को सौपने की स्वीकृति दे दी।[5]

महादजी सिन्धिया ने जयपुर महाराजा से तुरन्त रुपया मांगा जो कि युद्ध की तैयारी के समय खर्च किया गया था। जयपुर ने अपनी आर्थिक स्थिति के कारण असमर्थता प्रकट की और सिन्धिया को खिराज की रकम मे कुछ कमी करने के लिए कहा। कूच के दौरान फसल को जो नुकसान हुआ था उसकी कीमत खिराज मे कम करने के लिए कहा परन्तु सिन्धिया ने खिराज मे कमी करने से इन्कार कर दिया। अत युद्ध के सिवाय अब अन्य कोई विकल्प नही रह गया था।[6]

---

1. देवास जयपुर के पूर्व मे 32 मील की दूरी पर स्थित है।
2. (अ) पूना रेजीडेन्सी कोरसपोन्डेस, भाग 1 पृ० 169।
   (ब) दिल्ली येथील मराठा यान्ची राजकारणे, भाग 1 पृ० 3201, 211।
   (स) राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली, सीक्रेट कन्सलटेशन्स 18 अप्रैल 1787 फा० 1।
3. (अ) पूना रेजीडेन्सी कोरसपोन्डेन्स, भाग 1 पृ० 169।
   (ब) दिल्ली येथील मराठा यान्ची राजकारणे, जिल्द 1 पृ० 201, 211।
   (स) सरदेसाई, जी. एस. दिल्ली के मराठा दूतों की डाक जिल्द 1 पृ० 220।
4. राष्ट्रीय अभिलेखागार, सीक्रेट कन्सलटेशन्स 20 अप्रैल 1787 फा० 5।
5. दिल्ली येथील मराठा यान्ची राजकारणे, भाग 1 पृ० 210-1, 1-220।
6. (अ) राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली, सीक्रेट कन्सलटेशन्स 30 जून 1787 फा० 22।
   (ब) सरदेसाई, जी० एस० दिल्ली के मराठा दूतो की डाक भाग 1 पृ० 220
   (स) पूना रेजीडेन्सी कोरसपोन्डेन्स, भाग 1 पृ० 169।

लालसोट के युद्ध मे प्रतापसिंह की भूमिका (28 जुलाई 1787)

जयपुर महाराजा और महादजी सिन्धिया ने युद्ध के लिए तैयारियाँ शुरू कर दी। सवाई प्रतापसिंह ने अपने दीवान दौलतराम हल्दिया की सहायता से जागीरदारो की बहुत बडी सेना को एकत्रित करली थी।[1] इस सेना म लगभग 20 हजार सैनिक थे, जोधपुर के महाराजा ने भी 25 मई 1787 को भीमसिंह के अधीन 10 हजार सैनिक जयपुर महाराजा की सहायता करने क लिय भेज दिये थे। 25 मई 1787 को मुगल सेनापति मुहम्मद बेग हमदानी ने भी सिन्धिया का साथ छोड दिया था। और मई 1787 का जयपुर महाराजा स मिल गया। इस पर जयपुर महाराजा ने मोहम्मद बेग हमदानी को 3 हजार रुपया प्रतिदिन दकर उसकी सेवाएँ लेने का निश्चय किया।[2]

इस युद्ध मे प्रतापसिंह महादजी की तरफ स लडने का निश्चय कर चुका था। अत उसने जयपुर राज्य के विरुद्ध सिन्धिया को सहायता दना स्वीकार कर लिया।[3] इस समय प्रतापसिंह ने सिन्धिया को यह सुझाव दिया कि हम लक्ष्मणगढ मे ठहरना चाहिए।[4]

युद्ध के मैदान मे जयपुर की सेना का नेतृत्व सवाई प्रतापसिंह कर रहा था। इस पर महादजी ने यह वह पर पीछे हटना शुरू किया कि सुरक्षित स्थान पहुँच जाने पर वह जयपुर की सेना पर आक्रमण करेगा। राजपूत सरदारो को सिन्धिया की निर्बल स्थिति का पता चल गया। ऐसी विषम परिस्थिति मे बहुत स मुगल तथा मराठा सैनिको ने सिन्धिया का साथ छोड दिया और जयपुर महाराजा से जा मिले ऐसे समय मे सिन्धिया ने मुगल सम्राट को स्वय सेना साथ युद्ध के मैदान मे जाने

---

1. (अ) पूना रेजीडेन्सी कोरसपोन्डेन्स, भाग 1 पृ० 130-4।
   (ब) पारसनीस डी० बी० बातामी पत्रे, पृ० 113
   (स) मुन्नालाल, तारीखे शाह आलम पृ० 94 बी।
2 (अ) दिल्ली येथील मराठा यान्ची राजकारणे भाग 1 पृ० 229
   (ब) पारसनीस, डी० बी० बातामी पेदन, पृ० 113
   (स) मुन्नालाल, तारीखे शाह आलम पृ० 94 बी।
   (द) राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली, सीक्रेट कन्सलटेशन्स, 3, 15, 1787
   (य) कैलेन्डर ओफ पर्शियन कारसपोन्डेन्स, भाग 7 पृ० 1442।
   (र) सरदेसाई जी० एस० मराठों का नवीन इतिहास भाग 3 पृ० 153।
3 (अ) ग्रान्ड डफ की तवारीख, जिल्द 3 पृ० 15।
   (ब) श्यामलदास—वीर विनोद, भाग 4 पृ० 1308।
   (स) सरकार जे० एन० देहली अफेयर्स, पृ० 157
4 (अ) कैलेन्डर आफ पर्शियन कोरसपोन्डेन्स वा० 7 पत्र सख्या 1454, पृ० 394।
   (ब) मुन्नालाल, तारीखे ए शाह आलम पृ० 49 ए।
   (स) खैरउद्दीन, इबरातनामा, भाग 2 पृ० 12 बी।

के लिए निवेदन किया। इस प्रकार सिन्धिया ने पीछे हटते हुए लालसोट[1] मे अपना डेरा डाला। दूसरी तरफ जयपुर की सेना ने तुगा[2] के मैदान मे अपना मोर्चा जमाया।[3]

सिन्धिया ने जयपुर की सना से तुगा के मैदान मे ही लडने का निश्चय किया। सिन्धिया का विश्वास था कि मुगल सम्राट उसकी सहायता के लिए सेना भेज देगा।

28 जुलाई 1787 को महादजी सिन्धिया और जयपुर महाराजा की सेना के बीच तुगा के मैदान मे प्रात 9 बजे घमासान युद्ध प्रारम्भ हो गया। युद्ध का प्रारम्भ महादजी सिन्धिया के द्वारा किया गया। जयपुर की सेना ने मराठो की सेना पर बहुत गोले बरसाये जिससे मराठो की सेना को काफी नुकसान पहुँचा[4] दोनो पक्षो के अनेको सैनिक युद्ध मे काम आए। अगले दिन जयपुर की सेना अपने खेमे मे ही थी लेकिन महादजी सिन्धिया जयपुर की सेना पर आक्रमण करने का साहस नही कर सका। इस प्रकार यह युद्ध अनिर्णायक रहा।[5]

कर्नल जेम्स टाड का मानना कि लालसोट युद्ध मे जयपुर महाराजा विजयी हुआ था। यह कथन सही प्रतीत नही होता है क्योकि राजपूत इस युद्ध मे न तो मराठो की एक भी तोप पर अधिकार करने म सफल हुए और न ही मराठो के किसी भी सैनिक को गिरफ्तार करने मे उन्हे सफलता मिली। युद्ध के अगले दिन जब सिन्धियाँ ने डीग की ओर प्रस्थान किया तब महादजी सिन्धिया विषम परिस्थिति मे था। लेकिन राजपूतो ने लौटती हुई महादजी की सेना का न तो पीछा किया और न ही उसको रोकने मे सफल हुए। युद्ध के दौरान मोहमद बेग हमदानी की अचानक

---

1 लालसोट—जयपुर के दक्षिण पूर्व मे 30 मील की दूरी पर स्थित है।

2. तुगा नामक स्थान लालसोट के उत्तर पश्चिम मे 14 मील की दूरी पर स्थित है।

3 (अ) मुन्नालाल, तारीख ए शाह आलम, पृ० 49 ए।
(ब) खैरउद्दीन, इबारत नामा, भाग 2 पृ० 12 बी।

4 (अ) दिल्ली येथील मराठा यान्ची राजकारणे, जिल्द 1 पृ० 224।
(ब) हिस्टोरिकल पेपर्स रिगार्डिंग महादजी सिन्धिया पृ० 503।
(स) पूना रेजीडेन्सी कोरसपोन्डेन्स, जिल्द 1 पृ० 133, 136, 137।

5 (अ) सरदेसाई, जी० एस० मराठो का नवीन इतिहास, जिल्द 3 पृ० 155।
(ब) पूना रेजीडेन्सी कोरसपोन्डेन्स, जिल्द 1 पृ० 135-137।
(स) दिल्ली येथील मराठा यान्ची राजकारणे, जिल्द 1 पृ० 224।
(द) कैलेन्डर ओफ पिशियन कोरसपोन्डेन्स, भाग 7 पृ० 1544, 45 1551-53।

मृत्यु हो जो जाने से राजपूत निराश हो गये थे। जब महादजी सिन्धिया लालसोट से डीग की ओर रवाना हुआ तो राजपूतो ने महादजी सिन्धिया के चले जाने के एवज मे काफी खुशी प्रकट की और उसे ईश्वर की कृपा ही समझी।[1] जहाँ तक महादजी सिन्धिया का प्रश्न है उसने जयपुर पर खिराज वसूल करने के लिए आक्रमण किया था लेकिन उसको अपने उद्देश्य मे सफलता नही मिली यद्यपि वह युद्ध क्षेत्र से अपनी सेना की रक्षा करके डीग की ओर ले जाने म सफल हो गया।[2]

उपरोक्त तर्कों से यह निष्कर्ष निकलता है कि इस युद्ध का कोई विशेष परिणाम नही निकला। कोई भी पक्ष विजयी नही हुआ। युद्ध अनिर्णित ही रहा। चूंकि यह युद्ध सिन्धिया और जयपुर महाराजा के बीच तूंगा के मैदान मे लडा गया था लेकिन इसे लालसोट युद्ध के नाम से पुकारा जाता है।[3] युद्ध के अन्त तक प्रतापसिंह ने महादजी सिन्धिया का साथ दिया। लालसोट के युद्ध से आई हुई महादजी सिन्धिया की सेना जब अलवर पहुँची तब प्रतापसिंह ने उसका बहुत अच्छा स्वागत किया। इसलिए महादजी सिन्धिया 25 अगस्त 1787 से 2 नवम्बर 1787 तक करीब सवा दो महीने तक प्रतापसिंह के पास अलवर मे ठहरा।[4]

महादजी सिन्धिया की आर्थिक स्थिति इस समय बडी गोपनीय थी इसलिए प्रतापसिंह ने मित्र होने के नाते उसे सात लाख रुपये ऋण दिया।[5] कुछ समय पश्चात् सिंधिया ने फिर से अपनी आर्थिक स्थिति म सुधार कर लिया। प्रतापसिंह ने सिन्धिया को ऐसे समय मे आर्थिक सहायता की जबकि उसे सहायता की अत्यन्त आवश्यकता थी।

पाटन का युद्ध (20 जून 1790)

जब सिन्धिया की आर्थिक स्थिति अच्छी हो गयी तब उसने फिर से युद्ध के लिए तैयारी शुरू कर दी। 20 जून 1790 को महादजी सिंधिया का जयपुर और जोधपुर की सेनाओ से पाटन[6] नामक स्थान पर घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध मे महादजी सिन्धिया विजयी हुआ और जयपुर तथा जोधपुर की सम्मिलित सनायें पराजित हुई।[7] युद्ध के पश्चात् जयपुर राज्य पूर्ण रूप से कमजोर हो गया था

1. सरदेसाई, जी० एस० मराठो का नवीन इतिहास, भाग 3 पृ० 154।
2 (अ) सरदेसाई, जी० एस० मराठो का नवीन इतिहास, भाग 3 पृ० 154।
   (ब) कैलेण्डर ऑफ पर्शियन कोरसपोन्डेन्स, पत्र संख्या 1575 पृ० 401-2।
   (स) पर्शियन ओरिजनल आफ रिसप्ट न० 404।
3 (अ) पूना रेजीडेन्सी, भाग 1 पृ० 135-37।
   (ब) हिस्टोरिकल पेपर्स रिगार्डिंग महादजी सिन्धिया, पृ० 503।
   (स) कैलेन्डर ऑफ पर्शियन कोरसपोन्डेन्स वा० 7, पृ० 1544 45, 1551-53
4 (अ) पूना रेजीडेन्सी कोरसपोन्डेन्स, भाग 1 पृ० 240
   (ब) गैरउद्दीन, इबरातनामा जिल्द 2 पृ० 23 बी।
   (स) सरदेसाई जी० एस० मराठो का नवीन इतिहास भाग 3 पृ० 117।
5. (अ) कैलेन्डर ऑफ पर्शियन कोरसपोन्डेन्स, भाग 7 पत्र 62 पृ० 415।
   (ब) गैरउद्दीन, इबरातनामा, जिल्द 2 पृ० 23 [व]
6. पाटन— जयपुर क उत्तर मे 72 मील की दूरी पर स्थित है।
7. कैलेन्डर ऑफ पर्शियन कोरसपोन्डेन्स, जिल्द 9 पृ० 471

इसलिए अब अलवर के प्रतापसिंह को जयपुर की तरफ से किसी प्रकार की चिन्ता नही रही ।[1]

प्रतापसिंह के जीवनकाल की अन्तिम वर्षों की घटनायें—

27 जनवरी 1790 तक प्रतापसिंह बहुत बडा शक्तिशाली शासक बन चुका था । उसकी गिनती जयपुर और जोधपुर के शासको के बराबर मानी जाती थी। उसने अंग्रेजो के साथ भी अच्छे सम्बन्ध थे। उसने अंग्रेजो के साथ अपना अस्तित्व तथा अपने राज्य को बनाये रखने के लिए पत्र व्यवहार भी किया ।[2]

प्रतापसिंह के कोई पुत्र नही था इसलिए उसने 1790 ई० मे थाना[3] के ठाकुर धीरसिंह के छोटे पुत्र बख्तावरसिंह को गोद लिया और उसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया ।[4]

प्रतापसिंह की मृत्यु [24 जनवरी 1791]

प्रतापसिंह की मृत्यु 51 वर्ष की उम्र मे 25 जनवरी 1791 ई० सोमवार [पोष वदी 6 सवत 1847] को अलवर दुर्ग मे हुई थी ।[5]

---

1. खैरउद्दीन, इबरातनामा, जिल्द 3 पृ० 250-54
2. (अ) कैलेन्डर ऑफ पर्शियन कोरसपोन्डेन्स जिल्द 9, पत्र सख्या 65-66 पृ० 16
   (ब) पर्शियन ओरिजनल ऑफ रिसिप्ट न० 34 पृ० 28-30
   (स) पर्शियन ट्रासलेशन ऑफ रिसिप्ट न० 30 पृ० 39
3. थाना—राजगढ के उत्तर पश्चिम मे दो मील की दूरी पर स्थित है ।
4. (अ) राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, क्रमाक 2590, 3, 70, 373, बस्ता 196, 55 बण्डल 3, 45 पृ० 3, 3, 4
   (ब) श्यामलदास—वीर विनोद, भाग 4 पृ० 1379
5. राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, क्रमाक 746, 747 364 बस्ता, 107, 52 बण्डल 4, 5, 10 पृ० 1-4, 5-6, 135-36
   (ब) श्यामलदास ने वीर विनोद भाग 4 पृ० 1379 पर प्रतापसिंह की मृत्यु तिथि पोष कृष्ण 5 सवत् 1847 की अंग्रेजी तारीख 26 दिसम्बर 1790 दी है जो कि सही प्रतीत नही होती है, क्योकि पोष बदी पाँच सवत् 1867 की अंग्रेजी तारीख, इण्डियन एफेमेरीज, जिल्द 6 की पृ० सख्या 384 के अनुसार 24 जनवरी 1791 आती है। इसलिए मेरा यह मानना है कि श्यामलदास के द्वारा दी गयी अंग्रेजी की तारीख सही नहीं है ।

   इसी तरह से जगदीशसिंह गहलोत ने जयपुर व अलवर राज्यो के इतिहास भाग 3 पृ० 262 पर प्रतापसिंह की मृत्यु की तारीख 26 दिसम्बर 1790 दी है जो कि सही प्रतीत नही होती है । इसका मुख्य कारण यह है कि प्रतापसिंह की मृत्यु के पश्चात् बख्तावरसिंह 1791 मे अलवर की गद्दी पर बैठा चूँकि बख्तावरसिंह 1791 मे अलवर की गद्दी पर बैठा था इसलिए यह मत निश्चित है कि प्रतापसिंह की मृत्यु 24 जनवरी 1791 को ही हुई थी ।

5
बख्तावर सिंह (1791-1815)

बख्तावर सिंह का जन्म 20 नवम्बर 1776 को हुआ था। इसका पिता धीरसिंह थाने[1] का ठाकुर था। महाराव राजा प्रतापसिंह के कोई पुत्र नही था। इसलिए सन् 1790 मे प्रतापसिंह ने बख्तावर सिंह की योग्यता से प्रभावित होकर उसे अपना उत्तराधिकारी घोषित किया।[2] 1791 ई० मे जब प्रतापसिंह की मृत्यु हो गई तब सभी सरदारों ने एक मत होकर प्रतापसिंह के दत्तक पुत्र बख्तावरसिंह को अलवर की राजगद्दी पर बिठाया। उस समय उसकी आयु केवल 15 वर्ष की थी।[3]

प्रतापसिंह के दीवान रामसेवक को बख्तावरसिंह ने अपना प्रधान मन्त्री बनाया।[4] जिसको राज्य प्रबन्ध का सारा भार सौंपा गया। शेखो की मान-

---

1. थाना राजगढ के उत्तर पश्चिम मे 2 मील की दूरी पर स्थित है।
2. (अ) राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, क्रमाक 746, 747 बस्ता 107 बन्डल 4, 5 पृ० 1-4, 5-6
   (ब) वही, क्रमाक 1590 बस्ता 196 बण्डल 3 पृ० 1
   (स) वही, क्रमाक 414, 370, 405 बस्ता 62, 55, 62 बन्डल 11, 2, 3 पृ० 1, 3, 2
3. (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 746 747 1590 बस्ता 107, 196 बन्डल 4, 5, 4 पृ० 1-4, 5-6, 3
   (ब) मायाराम ने राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर अलवर के पृ० स० 63 पर यह लिखा है कि बख्तावरसिंह 12 वर्ष की आयु मे राजगद्दी पर बैठा यह कथन सही नही प्रतीत होता है क्योंकि बख्तावरसिंह का जन्म 1776 मे हुआ था और 12 वर्ष की आयु 1788 मे गद्दी पर बैठने की तिथि निकलती है जो निश्चित रूप मे गलत है, क्योंकि प्रतापसिंह की मृत्यु 1791 मे हुई थी इसलिए 1791 मे ही बख्तावरसिंह अलवर राज्य की गद्दी पर बैठा था।
4. रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1591, 370 बस्ता 196, 54 बन्डल 4, 2 पृ० 4, 3-4

मर्यादा पहले स भी अधिक बढाई गई। और उनकी प्रतिष्ठा की रक्षा का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया।[1]

आन्तरिक समस्याएँ—

बख्तावरसिंह के समक्ष कई आन्तरिक समस्याएँ आईं जिनका हल उसने बडी बुद्धिमता और साहस के साथ किया। सर्व प्रथम बख्तावरसिंह के दीवान रामसेवक की शक्ति का दमन करने का निश्चय किया क्योंकि वह राज्य का वास्तविक शासक बनना चाहता था। रामसेवक बख्तावरसिंह से अप्रसन्न होकर मराठों से जाकर मिल गया और उनसे राजगढ पर घेरा डलवा दिया[2] वह केवल इतने से ही सन्तुष्ट नहीं हुआ अपितु उसने बख्तावरसिंह तथा राजमाता महारानी गौड के बीच परस्पर मनोमालिन्य भी उत्पन्न करा दिया।[3]

बख्तावरसिंह को जब रामसेवक के इस षडयन्त्र का पता चला तब उसने उसे यथोचित दण्ड देने का सकल्प कर अपने चुने हुए साथियों के साथ राजगढ से अलवर लौट आया।[4] उसने दीवान को कहला भेजा कि राज्य प्रबन्ध सम्बन्धी कुछ *विचारणीय मामलों म तुम्हारी सम्मति अपेक्षित है* इसके *अतिरिक्त इस समय कुछ ऐसे* कार्य मेरे सामने उपस्थित किये गए हैं कि जिनके यथोचित सम्पादन के लिए तुम्हारा योगदान आवश्यक है।[5] यद्यपि दीवान रामसेवक बख्तावरसिंह के व्यवहार स पहले ही समझ गया था कि वह उसे दण्ड देना चाहता है फिर भी राजाज्ञा की अवहेलना करने का उसका साहस नहीं हुआ। अत वह विवश होकर बख्तावरसिंह के सामने उसी समय उपस्थित हो गया।[6] बख्तावरसिंह ने उसको मृत्यु दण्ड दिया और मराठों से राजगढ मुक्त करवा दिया।[7] 18 जनवरी 1792 जयपुर महाराजा ने दौसा[8] म तुकोजी होल्कर स बातचीत की। इस समय जयपुर महाराजा और होल्कर के बीच मे समझौता हो गया। जयपुर महाराजा ने होल्कर को सैनिक सहायता देने के लिए

---

1. वही, क्रमांक 1058 1236 बस्ता 244 172 बन्डल 2, 8 पृष्ठ 1-4, 1
2. वही क्रमांक 373 बस्ता 55 बन्डल 5 पृ० 5
3. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 370, 1058 बस्ता 55, 244 बन्डल 3-4, पृष्ठ 3-4, 1-4
4. वही, क्रमांक 1058, 373 बस्ता 244, 55 बन्डल 2, 5 पृ० 1-4, 5
5. वही, क्रमांक 370, 1236 बस्ता 55 172 बन्डल 2, 8 पृ० 3-4, 1
6. वही, क्रमांक 1591, 1058 बस्ता 196, 224 बन्डल 4 5 पृ० 6, 1-4
7. वही, क्रमांक 1591, 373, बस्ता 196, 55 बन्डल 4, 5 पृ० 7, 5
8. दौसा जयपुर के दक्षिण पूर्व मे 32 मील की दूरी पर स्थित है।

कहा तथा उससे वायदा किया कि बख्तावरसिंह के जितने भी इलाकों पर वह अधि-कार करेगा उसमें से आधा भाग उसे दे दिया जायेगा।[1]

जयपुर महाराजा के प्रलोभन में आकर होल्कर ने बापूराव होल्कर के नेतृत्व में मराठा सेना जयपुर की सहायता के लिए भेजी। इस सेना को अलवर राज्य के अनेक स्थानों को छीनने में सफलता प्राप्त हुई।[2]

बख्तावरसिंह ने सन् 1793 में मारवाड़ जाकर कूचामन[3] के ठाकुर सूर्यमल की पुत्री से विवाह किया।[4] परन्तु कासली[5] के जागीरदार बख्तावरसिंह के कूचामन ठाकुर की पुत्री के साथ होने वाले विवाह का विरोध किया। उसके सीकर के राव के साथ भी सम्बन्ध अच्छे नहीं थे।[6] कासली के जागीरदार का स्वभाव बड़ा ही उग्र व उदण्ड था उसकी उद्‌दण्डता से सीकर वाले बहुत परेशान थे।[7] अतः विवाह के पश्चात् बख्तावरसिंह ने अलवर लौटते समय कासली पर अधिकार कर लिया[8] तथा उसे सीकर[9] के लक्ष्मणसिंह को दे दिया।[10] जब बख्तावरसिंह ने कासली से जयपुर की ओर प्रस्थान किया तब जयपुर महाराजा सवाई प्रतापसिंह ने उसका बड़ा आदर सत्कार किया और प्रतापसिंह की मृत्यु पर शोक और सहानुभूति प्रकट की।[11] परन्तु इसके पश्चात् जयपुर महाराजा ने बख्तावरसिंह को बन्दी बना लिया और

---

1 (अ) दिल्ली येथील मराठा यान्ची राजकारणे, जिल्द 2 पृ० 9
  (ब) श्यामलदास—वीर विनोद भाग 4 पृ० 1379
  (स) गहलोत सुखवीरसिंह—राजस्थान के इतिहास का तिथि क्रम पृ० 75

2 दिल्ली येथील मराठा यान्ची राजकारणे, जिल्द 2 पृ० 9

3. कूचामन मेड़ता और फूलेरा रेल्वे लाइन पर नारायणपुरा स्टेशन के उत्तर में 8 मील की दूरी पर स्थित है।

4 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 764, 747 बस्ता 107 बन्डल 1-4 5 6 पृ० 1 4, 5-6

5. कासली—सीकर से 14 किलोमीटर दूरी पर स्थित है।

6 वही, क्रमांक 1591, 370 बस्ता 196, 55 बन्डल 3, 4 पृ० 8, 4

7. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 1690, 373 बस्ता 196, 55 बन्डल 3, 5 पृ० 6, 8

8 वही, क्रमांक 1591, 413, बस्ता 196, 62 बन्डल 4910 पृ० 8,1

9 सीकर, जयपुर के पश्चिम में 72 मील दूरी पर स्थित है।

10 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 1590 123 बस्ता 196 172 बन्डल 3, 8 पृ० 6 1
  (ब) श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 4 पृ० 1379

11 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 1591, 413 बस्ता 196, 62 बन्डल 4,10 पृ० 9, 1

गुढा, सैथल बावडी खेडा, दुब्बी सिकराय आदि परगने जयपुर महाराजा को देने पर ही उसको मुक्त किया गया।[1]

बख्तावरसिंह द्वारा शेखों का दमन

प्रतापसिंह के समय से अलवर राज्य का प्रबन्ध नबी बख्श खाँ और होशदारखाँ आदि शेखो के हाथ मे था जो राज्य के प्रभावशाली और शक्तिशाली अधिकारी थे।[2] बख्तावरसिंह के समय मे इनका प्रभुत्व ज्यो का त्यो रहा जिसका परिणाम यह हुआ कि ये शेख उसके आदेशो की अवहेलना करने लगे। वास्तव मे अलवर राज्य मे विशेषत[3] प्रतापसिंह के समय मे इनकी अच्छी प्रतिष्ठा थी इसलिए बख्तावरसिंह भी इनका बडा आदर सम्मान करता था। जिससे ये अपनी प्रतिष्ठा और शक्ति के मद मे चूर हो गए थे। उनकी यह निरकुशता और स्वेच्छाचारिता बख्तावरसिंह को बहुत खटकती थी परन्तु कुछ समय तक उन्होने इनके दुर्व्यवहार पर कोई ध्यान नही दिया।[4]

किन्तु एक दिन शेख इलाही बख्श की गर्वोक्तियो से बख्तावरसिंह इतना अप्रसन्न हुआ कि वह राज सभा से उठकर अकेले अलवर से देसूला-बहाला[5] की ओर निकल गया। तब कई सरदार उसे समझा बुझाकर वापस लाये।[6] परन्तु यह अपमान बख्तावरसिंह के हृदय म खटकता रहा। धीरे धीरे उन्होने राज्य प्रबन्ध का भार अपने हाथ मे लिया और राज्य के सब कार्यकर्त्ताओ को भी अपनी मुट्ठी मे कर लिया जब सभी पदाधिकारियो एव कार्यकर्त्ताओ ने अपना समर्थन बख्तावरसिंह को दिया तब उसने अलवर मे मौजूद शेखो के प्रभाव को समाप्त कर दिया।[7]

शेख इलाही बख्श उस समय अलवर मे नही था वह अलवर राज्य की तरफ से वकील नियुक्त होकर अग्रेजों के साथ रहता था।[8] जब उसे अपने भाईयो की मृत्यु का समाचार ज्ञात हुआ तब वह हाथ मलकर रह गया। इस घटना से उसके हृदय पर ऐसी चोट लगी कि वह भी बहुत काल तक जीवित नही रह सका।

---

1. वही, क्रमांक 1590, 1236 बस्ता 196, 172 बन्डल 3 8 पृ० 6-7, 1
2. वही, क्रमाक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 9
3. रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 370, 413 बस्ता 55, 62 बन्डल 2, 10 पृ० 4।
4. वही, क्रमाक 1591, 373 बस्ता 196, 55 बन्डल 4 5 पृ० 10, 9।
5. देसूला—बहाला अलवर के पूर्व मे 4 मील की दूरी पर स्थित है।
6. रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1590, 370 बस्ता 196, 62, 55 बन्डल 3, 2, 10, पृ० 10, 4, 4।
7. वही, क्रमाक 1591, 373 बस्ता 196 55 बन्डल 4, 5 पृ० 10, 9।
8. वही, क्रमाक 1590, 413 बस्ता 196, 62 बन्डल 3, 10 पृ० 11, 4।

और तिजारा[1] मे उसकी भी मृत्यु हो गई ।[2] इस प्रकार शेष भाइयो के बढते हुए प्रभाव को बख्तावरसिंह ने समाप्त कर दिया और सब कार्य उसकी इच्छानुसार होने लगा । इस घटना के पश्चात् उसका ध्यान राज्य विस्तार की ओर गया ।[3]

बख्तावरसिंह की प्रारम्भिक गतिविधियाँ—

बख्तावरसिंह ने भरतपुर नरेश से अपने पूर्वज प्रतापसिंह की जागीर के के गाँव कामा, सोहरी, पहाडी नगर और गोपाल गढ आदि छीन लिए और बाबुल, काटी, फिरोजपुर तथा कोटपुतली आदि पर अधिकार कर लिया ।[4] भरतपुर के सीमा प्रान्त की कुछ भूमि खानजादो के अधिकार मे थी जुल्फीकार खाँ उसका मुखिया था और धोसावली[5] का दुर्ग भी उसके अधिकार म था ।[6]

सन् 1800 ई० मे बख्तावरसिंह और जुल्फीकार खाँ के बीच मुठभेड हुई जिसमे बख्तावरसिंह ने मराठो की सहायता से उसे धोसावली से मार भगाया और उसका दुर्ग नष्ट कर उसके समीप गोविन्दगढ का निर्माण करवाया ।[7]

दिल्ली राजनीति के प्रति बख्तावरसिंह का दृष्टिकोण—

पानीपत के युद्ध 1761 ई० मे मराठे अपनी शक्ति बहुत कुछ खो चुके थे तथापि उन्होंने अपनी खोई हुई शक्ति को पुन प्राप्त करने के लिए नए सिरे से प्रयत्न आरम्भ कर दिए थे ।[8] इस समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी की ओर कुछ अंग्रेज व्यापारी भारत मे अँग्रेज सरकार के पैर जमाने की चेष्टा कर रहे थे किन्तु इस समय पिंडारी, मराठे, रूहेले गोरखे और सिक्ख उसके विरुद्ध थे ।[9] इस कारण देश मे चारो ओर अराजकता और अशान्ति फैल रही थी और जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहा-

---

1 तिजारा—अलवर से 30 मील दूरी पर पूर्वोत्तर मे स्थित है ।

2 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1590, 1591 बस्ता 196, 196 बन्डल 3, 4 पृ० 12, 11 ।

3 वही, क्रमाक 370, 373 बस्ता 55 बन्डल 2, 5 पृ० 4, 9 ।

4 वही, क्रमाक 1590 370 374 बस्ता 196 53, 55 बन्डल 3, 2 5 पृ० 13, 14, 11 ।

5. धोसावली, भरतपुर से 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है ।

6 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1591, 413, 181 बस्ता 196, 62, 26 बन्डल 4 10, 2 पृ० 12, 2, 45 ।

7 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1590, 1236 बस्ता 196, 172 बन्डल 3, 8 पृ० 14, 1 ।

(ब) श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 4 पृ० 1379 ।

8 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1591 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 12 ।

9 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1591, बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 15 ।

बत चरितार्थ हो रही थी। एक और अंग्रेज कर्मचारी देश की अराजकता का लाभ उठाकर अपने स्वार्थों की पूर्ति में लगे हुए थे तो दूसरी और यहाँ के राज्य के एक दूसरे पर अधिकार करना की चेष्टा कर रहे थे और उनमें पारस्परिक द्वेष और प्रतिद्वन्दिता थी।[1] 16 अक्टूबर 1788 म महादजी सिन्धिया ने मुगलों की राजधानी दिल्ली को आ घेरा और उस पर अधिकार कर लिया।[2] मराठों की शक्ति में उत्तरोत्तर वृद्धि कम्पनी व अंग्रेज कर्मचारियों को बहुत खटकती थी क्योंकि वे भी भारत में धीरे धीरे प्रभाव जमा रहे थे। दिल्ली हस्तगत करने के अनन्तर महादजी सिन्धिया ने मुगल बादशाह शाहआलम द्वितीय को पाँच लाख रुपया देना स्वीकार कर लिया परन्तु साम्राज्य का प्रबन्ध अपने ही हाथ में रखा।[3] इस प्रकार अंग्रेजो और मराठो से सम्बन्धो मे तनाव उत्पन्न हो गया था। दोनो ही भारत पर शासन करना चाहते थे।

सन् 1803 मे भारत के गवर्नर जनरल लार्ड वैलेजली ने होल्कर और सिन्धिया से मैत्री करनी चाही परन्तु दोनो ने इस बात को अस्वीकार कर दिया तब जनरल वैलेजली ने लार्ड लेक को सिन्धिया और होल्कर के राज्य पर आक्रमण करने की आज्ञा दी।[4]

यह युद्ध दो स्थानो पर लडा गया। पहला दोआब में जहाँ जनरल व पैरो के बीच और दूसरा गोदावरी नदी की घाटी मे जहाँ दौलतराव सिन्धिया का आर्थर वैलेजली से मुकाबला हुआ।[5]

वैलेजली ने खानदेश के बहुत बड़े भाग पर तथा अहमद नगर और असीर गढ के दुर्गों पर भी अधिकार कर लिया। इधर उत्तरी भारत मे अलीगढ के समीप कोईल नामक स्थान पर पैरो के विश्वासघात से सिन्धिया की सेना जनरल लेक से

---

1 वही, क्रमांक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 15।

2 वही, क्रमांक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 22।

3 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 1591 बस्ता 196 बन्डल 4 पृ० 18।
   (ब) पूना रेजीडेन्स कोरसपोन्डेन्स, भाग 1 पृ० 240 41।

4 (अ) मोहनसिंह बकाया ए होल्कर फोलियो 125 बी।
   (ब) खरे जिल्द 14 पृ० 6692।

5 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 23।
   (ब) एशियाटिक पन्चूल रजिस्टर 1803 ई० पृ० 37-39।
   (स) खरे जिल्द 14 पृ० 6678 6692, 6693।

पराजित होकर भाग खड़ी हुई। उस विश्वासघात के कारण दौलतराम सिन्धिया ने उसे पदच्युत कर दिया बाद मे वह फ्रांस चला गया।[1]

पैरो के फ्रांस जाने के बाद दौलतराम सिन्धिया ने अम्बाजी इंग्ले को उत्तरी भारत मे सेनापति बनाकर भेजा।[2] इसके पश्चात् 2 सितम्बर 1803 को मराठी सेना ने शिकोहाबाद की छावनी पर धावा बोल कर अंग्रेजो को परास्त किया और 4 सितम्बर 1803 को कर्नल मान्सन ने अलीगढ दुर्ग पर अधिकार कर लिया।[3] 11 सितम्बर 1803 को जनरल लेक की सेना सिन्धिया की सेना कापीछा करती हुई दिल्ली की ओर बढती चली आ रही थी कि सिन्धिया के फ्रांसीसी सेनापति एम० लमई० बर्क्वायन ने उस पर जेहमल[4] नामक स्थान पर सहसा आक्रमण कर दिया। युद्ध मे अंग्रेज सेना की विजय हुई और फ्रांसीसी जनरल को आत्म समर्पण करना पड़ा।[5]

पराजित होने पर भी मराठी सेना का उत्साह कम नही हुआ। 27 अक्टूबर 1803 को उसने कठूम्बर को तहस नहस करना प्रारम्भ किया।[6] कठूम्बर का

---

1 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक *1591* बस्ता *196* बन्डल *4* पृ० *19*।
 (ब) मार्किस वैलेजली को जनरल लेक का निजी पत्र 19, 8, 1803।
 (स) फ्रेजर जिल्द 1 पृ० 272-274।
 (द) मोहनसिंह, वकाया ए-होल्कर फोलिया 124 बी।
 (क) पूना रेजीडेन्सी कोरसपोन्डेन्स, भाग 1 पृ० 64-65।

2. (अ) वही, क्रमांक *1591* बस्ता *196* बन्डल 4 पृ० *19*।
 (ब) पूना रेजीडेन्सी कोरसपोन्डेन्स, भाग 8 पृ० 37।
 (स) मोन्ट मार्टिन जिल्द 5 पृ० 75-77 जिल्द 3 पृ० 367-368।

3. (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 1179 द ता 162 बन्डल 1 पृ० 41।
 (ब) *मोन्ट मार्टिन जिल्द 3 पृ० 190-93*।
 (स) मार्किस वेलेजली को जनरल लेक का निजी पत्र 1-9-1803।
 (द) खरे जिल्द 14 पृ० 66-95।

4. जेहमल नामक स्थान दिल्ली से 6 मील की दूरी पर स्थित है।

5. (अ) मोहनसिंह, वकाया—ए होल्कर फोलियो।
 (ब) क्रमांक 1591 बस्ता 196 बन्डल 4 पृ० 19-20।
 (स) लेक का पत्र गवर्नर जनरल के नाम 12 सितम्बर 1803 एशियाटिक पच्यूअल रजिस्टर, अपेन्डिक्स, 11।
 (द) खरे पृ० 6734।
 (क) मार्टिन पृ० 373।

6. कठूम्बर भरतपुर से उत्तर पश्चिम मे 27 मील की दूरी पर स्थित है।

परगना बख्तावरसिंह के अधिकार मे था अत बख्तावर सिंह के मराठो से सम्बन्ध बिगड गये और उसने अग्रजो को सहायता देने का निश्चय किया ।[1]

बख्तावरसिंह की अग्रेजों को सहायता देने के कारण—

अलवर के बख्तावरसिंह ने लासवाडी के युद्ध मे अग्रजो की सहायता करने का निश्चय किया उसके प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

1—प्रतापसिंह के समय से ही अलवर राज्य के जयपुर और भरतपुर से सम्बन्ध कटु चल रहे थे ।[2]

2—इस समय मराठों मे आपसी फूट प्रारम्भ हो गई थी वे परस्पर झगडने लग गये थे। उस स्थिति का लाभ अग्रजो ने उठाया और उत्तर भारत मे अपना राजनैतिक हस्तक्षेप मराठो से भी अधिक बढा लिया था। ऐसी स्थिति मे बख्तावरसिंह ने अपनी दूरदर्शी नीति अपनाते हुए अग्रजो को सहायता देने का निश्चय कर लिया ।[3]

3—1803 मे अग्रजो और मराठो के बीच सारे भारत मे सत्ता के लिए सघर्ष चल रहा था उसमे अग्रजो की सफलता की अधिक सम्भावना थी। अतएव बख्तावरसिंह को उस समय अलवर की स्थिति पर विचार कर अग्रजो से मित्रता करने के सिवाय अपने राज्य की रक्षा का अन्य कोई उपाय नहीं दिखाई दे रहा था ।[4]

4—अम्बाजी ईंगले ने अग्रज और मराठा सघर्ष के समय माचेडी मे लूटमार प्रारम्भ कर दी जिसके फलस्वरूप बख्तावरसिंह को अग्रजो की शरण लेनी पडी ।[5]

5—तात्कालीन कारण—बख्तावरसिंह और मराठो मे सघर्ष और मराठों का कठुम्बर पर अधिकार—बख्तावरसिंह के द्वारा अग्रजो को तत्कालीन सहायता देने के कारण यह था कि शेख इलाही बख्श की मृत्यु के बाद उसके स्थान पर जिस वर्ष नवाब अहमदबख्श खा नियुक्त किया गया था उसी वर्ष कठुम्बर नामक स्थान पर बख्तावरसिंह की सिंधिया के सेनापति अम्बाजी ईंगले के नेतृत्व मे मराठी सेना से मुठभेड़ हुई थी ।[6]

मराठो ने इस क्षेत्र मे एक ब्राह्मण को मार दिया था। पितृ वध से दुखी होकर उक्त ब्राह्मण के पुत्र ने बख्तावरसिंह की सभा मे उपस्थित होकर अपने दुख

---

1 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1179 बस्ता 163 बण्डल 1 पृ० 4 ।
2 वही क्रमाक 1590 बस्ता 196 बण्डल 3 पृ० 16 ।
3 रा० रा० अभि बीकानेर क्रमाक 1591 बस्ता 196 बण्डल 4 पृ० 13 ।
4 वही क्रमाक 1590 1179 बस्ता 195 162 बण्डल 2 1 पृ० 16 4 ।
5 अ—सरकार जे० एन०—मुगल साम्राज्य का पतन भाग 4 पृ० 248 ।
ब—राजपूताना गजेटियर 1880 ई० जिल्द 3 पृ० 184 ।
6 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1591 बस्ता 196 बण्डल 4 पृ० 14 ।

के सम्बन्ध मे उससे प्रार्थना की ।[1] उसकी प्रार्थना को स्वीकारते हुए उन्होने तत्क्षण भगवानदास टागडा नामक अपने एक सेनापति को मराठो पर आक्रमण करने की आज्ञा प्रदान की ।[2] उनकी आज्ञा मिलते ही भगवानदास ने कठुम्बर पर चढाई कर उसके सारे दुर्ग रक्षको को युद्ध मे मार डाला और अपने पाँच सौ योद्धाओ को दुर्ग की रक्षार्थ छोडकर स्वय अलवर लौट आया ।[3]

जब यह समाचार सिन्धिया को ज्ञात हुआ तो वह बहुत अधिक क्रोधित हुआ और उसने कठुम्बर के दुर्ग को फिर से अधिकार करने के लिए एक बहुत बडी सेना भेजी ।[4] यद्यपि राजपूत वीरो ने मराठो को पीछे हटाने मे कोई कसर नही उठा रखी परन्तु मुट्ठी भर राजपूत असख्य योद्धाओ का सामना करने मे असफल रहे और दुर्ग पर मराठो का अधिकार हो गया ।[5]

बख्तावरसिंह ने इस समय मराठो के विरुद्ध अग्रेज जनरल लेक से सहायता मागी । इस पर अग्रेज सेनापति लेक अपनी सेना लेकर मराठो का पीछा करता हुआ कठुम्बर आ पहुँचा और उसने मराठो को वहाँ से मार भगाया ।[6]

लासवाडी का युद्ध (नवम्बर 1830 ई०)—बख्तावरसिंह द्वारा अग्रेजों को सहायता—

मराठी सेना ने कठुम्बर मे अग्रेजो से पराजित होने पर रूपारेल नदी के किनारे लासवाडी[7] नामक स्थान पर शरण ली ।[8]

दूसरे दिन जब लार्ड लेक को यह समाचार मिला तब वो फतहपुर से अपनी बडी तोपें तथा सब सैनिक सामग्री छोडकर मराठों का सामना करने के लिए तुरन्त रवाना हुआ तथा 31 अक्टूबर को उसके पास पहुँच गया ।[9]

---

1. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1179, बस्ता 162, बन्डल 1 पृ० 4 ।
2. वही, क्रमाक 1591 बस्ता 196, बन्डल 4 पृ० 14 ।
3. वही, क्रमाक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 17 ख ।
4. वही, क्रमाक 1179 बस्ता 162 बन्डल 1 पृ० 4 ।
5. वही, क्रमाक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 10 ।
6. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1591 बस्ता 196 बन्डल 4 पृ० 15
7. लासवाडी—अलवर के पूर्व मे 20 मील की दूरी पर स्थित है ।
8. (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1179 बस्ता 162 बन्डल 1, पृ० 4 ।
   (ब) सिन्धेशाही भाग 2 पृ 396
9. (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 19
   (ब) फोर्टेस्क्यू, हिस्ट्री ऑफ दि ब्रिटिश आर्मी जिल्द 5 पृ० 60

अग्रेज सेना के पहुँचने पर दौलतराव सिन्धिया की सना ने रूपारेल नदी का बाँध काटकर उसके आगे बढने मे एक बहुत बडी बाधा उपस्थित करदी ।[1] इस समय बख्तावरसिंह ने अग्रेजो की सहायता की क्योकि जब मराठो के विरुद्ध अग्रेजो ने उस वठुम्वर मे सहायता की थी तो बख्तावरसिंह ने अग्रेजो के साथ गुप्त सन्धियाँ कर ली थी ।[2]

ऐसे समय मे वरतावरसिंह ने अपनी सेना को अलवर के वकील अहमद वख्श खाँ[3] क नतृत्व मे भेजी जिसने रूपारल नदी के नदी के पुल का फिर स निर्माण किया । पुल पार कर अग्रेजी सेना मराठो की सेना पर टूट पडी दोनो ओर से घमासान युद्ध प्रारम्भ हो गया ।[4] इस युद्ध मे अलवर के वकील अहमद बख्श खाँ ने लाड लेक का साथ दिया । उसने रूपारेल नदी के बाँध को बधवा कर अग्रेज सेना को खाद्य सामग्री पहुँचाकर उसकी सहायता के लिए अलवर से कुछ सेना भेजकर, और मराठो की युद्ध सम्बन्धी तैयारियो के बारे मे लार्ड लेक को यथा समय सूचना देकर अग्रेजो को अच्छी सहायता पहुँचाई जिसको लाड लेक कही दूसरे तरीके स प्राप्त नही कर सकता था ।[5]

दौलतराम सिन्धिया के नेतृत्व मे मराठी सेना ने इस युद्ध में अच्छी वीरता प्रकट की लेकिन अग्रेजो की और अलवर की सयुक्त सेना के सामने मराठी सना बहुत समय तक नही ठहर सकी । युद्ध मे अग्रेज सेनापति लेक को विजय प्राप्त

---

1 रा० रा० अभि० बीकानेर, 1591 बस्ता 196 बन्डल 4 पृ 20

2 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1179 बस्ता 162 बन्डल 1 पृ० 4

3 लाहौर राज्य के सस्थापक नवाब अहमद बख्श खाँ मिर्जा आरिफ जान बेग वोखारी मोगल का एक मात्र पुत्र था । उक्त मिर्जा शाह नवाब अहमद बख्श खाँ की योग्यता से प्रभावित होकर बख्तावरसिंह ने उसकी दीवान के पद पर नियुक्ति की ।

4 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1591, 373 बस्ता 196, 55 बन्डल 4 5 पृ० 20 21, 15-16
   (ब) फोर्टेस्क्यू हिस्ट्री ऑफ दि ब्रिटिश आर्मी जिल्द 5 पृ० 60

5 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 24
   (ब) वही, क्रमाक 1179, बस्ता 162 बन्डल 1 पृ० 4
   (स) मुरक्का ए अलवर पृ० 122
   (द) सिन्धेशाही भाग 2 पृ० 396
   [illegible] अलवर अग 7 1826 पृ० 140

हुई।[1] इस हार से सारे उत्तर भारत म मराठो के सितारे सदैव क लिए अस्त हो गय। दिल्ली पर अब अग्रेजो ने अधिकार कर लिया।

यह एक विवाद ग्रस्त प्रश्न है कि अलवर की सना ने लासवाडी के युद्ध मे अग्रजो को सहायता पहुँचायी थी या नही क्योकि मैन्युस्क्रिप्ट म लिखा है कि लासवाडी के युद्ध मे जो अलवर की सना भेजी गई थी इस सेना ने अग्रेजो की तरफ मराठो पर कोई आक्रमण नही किया परन्तु इसका अथ यह नही कि इन सनाओ का कोई उपयोग नही था।[2] क्योकि

प्रथम अलवर के सैनिक गुप्त रूप से मराठी सेना के युद्ध सम्बन्धी समाचार प्राप्त कर लाड लेक को यथा समय सूचना दिया करते थे और अलवर क सैनिको को अग्रेजो की सेना मे उपस्थित होने के कारण सिन्धिया के दक्षिणी घुडसवार निराश हो गये थे।

द्वितीय मराठी पत्रो से भी इस बात की पुष्टि होती है कि अलवर की सेना न ही अम्बाजी ईंगले की सेना को नष्ट किया था।[3] इसलिए जब लेक ने मराठी सेना पर आक्रमण किया तो दक्षिणी घुडसवार युद्ध का मैदान छोडकर भाग निकले इसके पश्चात् माचेडी की सना ने मराठी सेना के पिछले भाग पर आक्रमण किया। जब अलवर की सेना डेरा मे लूटमार कर रही थी तब मराठो के हजारो व्यक्ति मृत्यु के घाट उतारे गय।[4]

तृतीय अलवर नरेश क वकील अहमद बख्श द्वारा अग्रेजी सना को सम योचित सहायता दने के बदले मे अग्रेजो ने उस गुडगाँव जिले मे फिरोजपुर तथा राव राजा न उस लोहारू का नवाब बना दिया।[5]

---

1 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1591, बस्ता 196, बन्डल 4, पृ० 15।
  (ब) श्यामलदास—वीर विनोद, भाग 4 पृ० 1379
  (स) सिन्धेशाही भाग 2 पृ० 396

2 (अ) ओरियन्टल मैन्यूस्क्रिप्ट पृ० 190 1699
  (ब) सरकार यदुनाथ, मुगल साम्राज्य का पतन भाग 4 पृ० 288

3 खरे जिल्द 18 स० 6788

4 खरे जिल्द 14 स० 6788

5 फिरोजपुर एव लोहारू—अलवर स 2852 स्क्वायर मील दूर है।
  (ब) रा० रा० अभि० बीकानर क्रमाक 1591 413, 139 बस्ता 196, 62 19 बन्डल 4 10 5।
  (स) मुरक्का ए-अलवर पृ० 122।

चतुर्थ यही नहीं इस युद्ध मे अलवर नरेश द्वारा महत्वपूर्ण सहायता देने के बदले मे अंग्रेजो ने बख्तावरसिंह को 13 परगने प्रदान किये (28 नवम्बर 1803 ई०)[1]

उक्त तथ्यो से स्पष्ट होता है कि लासवाडी के युद्ध मे अंग्रेजो की मराठो पर विजय हुई । विजय मे अलवर का बहुत बडा योगदान था ।

रावराजा बख्तावरसिंह और अंग्रेजों के बीच सन्धि (19 दिसम्बर 1803)

लासवाडी के युद्ध मे अलवर नरेश ने अपने स्वार्थवश ही अंग्रेजो की सहायता की थी । युद्ध मे विजय प्राप्त होने के बाद उसने अंग्रेजो को उसकी सुरक्षा की गारन्टी देने को कहा । अतएव दोनो पक्षो के बीच 14 नवम्बर 1803 ई० को सन्धि हो गई ।[2]

सन्धि की शर्तें—

1. इस सन्धि के द्वारा माननीय ईस्ट इंडिया कम्पनी और महाराव राजा सवाई बख्तावरसिंह बहादुर तथा दोनो के राज्यधिकारियो एव उनके उत्तराधिकारियो के बीच स्थायी रूप से मित्रता स्थापित की जाती है ।[3]
2. दूसरी शर्त के अनुसार ईस्ट इंडिया कम्पनी के मित्र तथा शत्रु महाराव राजा के मित्र तथा शत्रु समझे जायेंगे और महराव राजा के मित्र तथा शत्रु माननीय कम्पनी के मित्र तथा शत्रु माने जायेंगे ।[4]
3. तीसरी शर्त के अनुसार माननीय कम्पनी महाराव राजा के राज्य प्रबन्ध म न तो किसी प्रकार का हस्तक्षेप करेगी और न ही उन्हे किसी प्रकार का कर देने के लिए बाध्य करेगी । लेकिन अंग्रेज सरकार को आवश्यकता होने पर राव राजा बख्तावरसिंह अपनी सम्पूर्ण सेना के द्वारा उनकी सहायता करने का वायदा करते हैं ।[5]

---

1. रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 373, 414 बस्ता 55, 62 बन्डल 5, 11 पृ० 15-16 ।
2. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1590, 746, 747 बस्ता 196, 107 बन्डल 3, 4, 5 पृ० 20, 1-4, 5-6 ।
   (ब) गहलोत सुखवीरसिंह—राजस्थान के इतिहास का तिथि क्रम पृ० 78 ।
3. राजस्थान रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 181 बस्ता 26 बन्डल 2 पृ० 45 ।
4. वही, क्रमाक 1590, 373 बस्ता 196, 55 बन्डल 3, 5 पृ० 65-29 ।
   (ब) श्यामलदास, वीरवि भाग 4 पृ० 13-98 ।
5. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1590, 1591 बस्ता 196 बन्डल 3, 4 पृ० 66-13 ।
   (ब) बनर्जी ए० सी० दि राजपूत एण्ड दी ईस्ट इण्डिया कम्पनी, पृ० 411 ।
   (स) वेब, राजपूताना के सिक्के अनु० डा० मागीलाल व्यास मयक पृ० 142 ।

4. चौथी शर्त के अनुसार माननीय कम्पनी का इस समय जिन देशो पर अधिकार है उन पर तथा हिन्दुस्तान मे उनके मित्रो के हाथ मे जो देश है उन पर यदि किसी शत्रु का आक्रमण होगा तो महाराव राजा इस बात को स्वीकार करते हैं कि वे अपनी सारी सेना भेज कर उनकी सहायता करेंगे और शत्रु को नीचा दिखाने मे यथा शक्ति कुछ कसर नही उठा रखेंगे और अपनी मित्रता प्रमाणित करने का कोई अवसर हाथ से नही जाने देंगे।[1]

5. पाचवी शर्त के अनुसार वर्तमान सन्धि पत्र के दूसरी शर्त के अनुसार ईस्ट इण्डिया कम्पनी और राव राजा बख्तावरसिंह के बीच मित्रता स्थापित हुई है उसके अनुसार माननीय कम्पनी बाहरी शत्रुओ से महाराव राजा के राज्य की रक्षा करने का भार ग्रहण करती है। महाराव राजा बख्तावरसिंह इसे मानते हैं कि यदि उनके तथा किसी दूसरे राज्य के बीच झगडा होगा तो वे विवाद का कारण पहले कम्पनी की गवर्नमेंट के सामने इसलिए उपस्थित करेंगे कि वह उसे मित्र भाव से हल कराने की चेष्टा करे यदि किसी विपक्षी के दुराग्रह से हित की कोई बात स्थिर नही होगी तो महाराव राजा कम्पनी के सहायता माग सकेगें। इस नियम मे जिस घटना का उल्लेख किया गया उसके घटित होने पर महाराव राजा को सहायता दी जायेगी और महाराव राजा को एसी सहायता करने मे कम्पनी की सेना का जो खर्चा होगा उसके चुकाने का भार उसी आधार पर ग्रहण करना स्वीकार करते है कि जो हिन्दुस्तान के दूसरे राजाओ से स्थिर हो चुका है।[2]

उपरोक्त सन्धि की पाचो शर्तों पर अग्रेज और बख्तावरसिंह ने हस्ताक्षर कर कर दिये थे लेकिन अग्रेज गवर्नर जनरल वेलेजली ने 19 दिसम्बर 1803 को इस सन्धि पर अपनी स्वीकृति प्रदान की।[3]

---

1. (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 373, 181 बस्ता न० 55, 26 बन्डल 5, 2।
   (ब) गहलोत जगदीश सिंह—राजस्थान का सक्षिप्त इतिहास पृ० 133।
   (स) एचीसन सी० यू० ट्रीटीज एगेजमेन्टस एण्ड सनदस भाग 3, पृ० 133।
   (द) श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 4 पृ० 1398।
2. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 373, 181 बस्ता 55, 26 बन्डल 5, 2 पृ० 29, 45
3. (अ) वही, क्रमाक 1590-91 बस्ता 196 बन्डल 3-4 पृ69-70, 13
   (ब) एचीसन सी० यू०—ट्रीटीज एगेजमेटस एण्ड सनदस जिल्द 3 पृ० 401 देखिए परिशिष्ट "ए"

राव राजा बख्तावरसिंह का नीमराना पर अधिकार—

अंग्रेज जनरल लेक को यह संदेश था कि नीमराना[1] के राजा चन्द्र भानु ने लासवाडी के युद्ध मे मराठो को सहायता दी थी अत उसको नीचा दिखाने के लिए उसने उक्त परगना बख्तावरसिंह को दे दिया। बख्तावरसिंह ने नीमराना पर चढाई कर अपना अधिकार कर लिया और वहाँ की बस्ती उजडवा दी।[2]

अंग्रेज जनरल लार्ड लेक के द्वारा बख्तावरसिंह को 13 परगने देना (28-11-1803 ई०)—

लासवाडी के युद्ध में बख्तावरसिंह ने जनरल लेक को सहायता पहुँचायी थी इसलिए अंग्रेज जनरल लेक ने बख्तावरसिंह स दोस्ती पक्की करने के लिए 28 नवम्बर 1803 को एक सन्धि पर हस्ताक्षर किये। सन्धि के द्वारा निम्न 13 परगने जनरल लेक ने बख्तावरसिंह को उसके खर्च के लिए प्रदान किये।[3]

1 इस्लामइलपुर	8 सुराई
2 मुडावर	9 दादरी
3 दजबारपुर	10 लोहारू
4 रताई	11 बुद्धवाना
5 नीमराना	12 बुदचल नहर
6 बीजवाडा	13 मडन
7 गुहिलोत	

इस सन्धि पर जनरल लेक के 28 नवम्बर 1703 को हस्ताक्षर हुए।[4]

जयपुर और मारवाड के मामलों मे बख्तावरसिंह का हस्तक्षेप—

सन् 1803 मे जोधपुर के महाराजा भीमसिंह की मृत्यु हो जाने पर उसका

---

1 नीमराना—अलवर नगर के उत्तर पश्चिम मे 33 मील दूरी पर स्थित है।

2 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 746 47 बस्ता 107 बन्डल 4, 5 पृ० 1-4, 5-6

3 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 27, 71-72

(ब) गहलोत सुखवीरसिंह—राजस्थान के इतिहास का तिथि क्रम पृ० 78

(स) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 413, 139 बस्ता 62, 19 बन्डल 10, 5, पृ 2, 10

4 (अ) वही, क्रमाक 413, 139, 373, 414 बस्ता 62, 19, 55, 62 बन्डल 10, 5, 2, 11, पृ० 2, 10, 15, 16, 2

(ब) एचिसन सी० यू०—ट्रीटीज एगेजमेन्टस एण्ड सनदस भाग 3 पृ 401 कृपया देखिए परिशिष्ट बी।

चचेरा भाई मानसिंह नवम्बर 1803 मे जोधपुर राज्य की गद्दी पर बैठा।[1] महाराजा भीमसिंह की मृत्यु के पश्चात् उसकी रानी ने 28 मई 1804 को खेतडी म एक बालक को जन्म दिया जिसका नाम धोकलसिंह रखा गया।[2] पोकरण[3] का ठाकुर सवाईसिंह चाहता था कि मानसिंह को जोधपुर के शासक पद से हटाकर महाराजा भीमसिंह के पुत्र धोकलसिंह को जोधपुर का शासक बना दिया जाय। इस लिए जोधपुर के कुछ सरदारो ने तो सवाईसिंह का समर्थन किया और कुछ ने मान सिंह का समर्थन किया।[4] पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह के षडयन्त्र के कारण जयपुर जोधपुर के बीच युद्ध छिड गया।

कृष्णाकुमारी विवाद मे बख्तावरसिंह की भूमिका—

कृष्णाकुमारी उदयपुर के महाराणा भीमसिंह की पुत्री थी जिसका विवाह जोधपुर के महाराजा भीमसिंह के साथ सन् 1799 मे होना निश्चित हुआ था।[5] क्योकि जोधपुर के महाराजा भीमसिंह की मृत्यु 1803 म ही हो गई थी

---

1 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1591 बस्ता 196 बन्डल 4, पृ० 29
(ब) खरीता बही, न० 12, पृ० 4 रा० रा० अभि० बीकानेर, राज०।

2 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1590, 403 बस्ता 196, 62 बन्डल 3, 10 पृ० 19-213
(ब) हकीकत बही, बीकानेर न० 18, पृ० 307
(स) तवारीख मानसिंह फा० 9,13
(द) ख्यात आफ धोकलसिंह राजपूताना रेजीडेन्सी रेकार्ड लिस्ट 10, 4, 3
(क) रेऊ विश्वेश्वरनाथ—मारवाड का इतिहास भाग 2 पृ० 405

3 पोकरण—जोधपुर से 85 मील की दूरी पर स्थित है।

4 (अ) रा० रा० अभि बीकानेर क्रमाक 1591, 493 बस्ता 196, 62 बन्डल 40, 10 पृ० 29, 3
(ब) खरीता बही, न० 12 फा० 4
(स) रेऊ—मारवाड का इतिहास भाग 2 पृ० 405

5. (अ) खरीता बही न० 12, फा० 4
(ब) श्यामलदास—वीर विनोद, भाग 2 पृ० 2736 मे विवाह निश्चित होने की तारीख 1798 देता है।
(स) मारवाड—ख्यात भाग 4 पृ० 27
(द) मल्कम ममोयर्स आफ सेन्ट्रल इण्डिया भाग 1 पृ० 330
(क) परिहार जी० आर०—मारमाड एण्ड दी मराठाज पृ० 144
(ख) दाधीच रामप्रसाद, महाराजा मानसिंह जोधपुर का व्यक्तित्व एव कृतीत्व पृ० 35

इसलिए शादी सम्पन्न नही हो सकी। नवम्बर 1803 मे मानसिंह जोधपुर का शासक बना। उधर उदयपुर के महाराणा भीमसिंह ने जोधपुर के महाराजा भीमसिंह की मृत्यु होने पर अपनी पुत्री कृष्णाकुमारी का विवाह 1805 मे जयपुर के महाराजा जगतसिंह से करना निश्चय किया।[1] जून 1804 म जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने घानेराव के ठाकुर के विरुद्ध सेना भेजी। चूंकि घानेराव का ठाकुर उदयपुर के के महाराणा भीमसिंह का रिश्तेदार था इसलिए महाराणा भीमसिंह मानसिंह से बहुत नाराज हो गया।[2] महाराजा मानसिंह ने इस विवाह का विरोध किया और उदयपुर महाराणा भीमसिंह को पत्र लिखा कि जोधपुर के राज घराने मे विवाह निश्चत हुआ था। इसलिए भीमसिंह के उत्तराधिकारी होने के नाते कृष्णा कुमारी से विवाह मैं करूँगा।[3]

जयपुर के महाराजा जगतसिंह ने भी कृष्णाकुमारी की सुन्दरता के बारे मे सुन रखा था। जब उदयपुर के महाराणा ने जगतसिंह के विवाह का प्रस्ताव किया तो उसने सहर्ष स्वीकार कर लिया और अपने दरोगा खुशाल सिंह को 3 हजार सैनिको के साथ टीके का प्रबन्ध करने क लिए भेजा।[4]

पोकरण का ठाकुर सवाईसिंह जो जोधपुर के महाराजा मानसिंह को हटाकर उसके स्थान पर स्वर्गीय महाराजा भीमसिंह के पुत्र धोकलसिंह को मारवाड का शासक बनाना चाहता था। उसने जगतसिंह और मानसिंह के बीच मतभेद को बढ़ाने का प्रयास किया। ताकि दोनो झगडो से लाभ उठाकर धोकल सिंह को मारवाड का

---

1 (क) खरीता बही न० 12, फा० 4
   (ख) दाधीच रामप्रसाद, महाराजा मानसिंह जोधपुर व्यक्तित्व एव कृतीत्व पृ० 35
   (ग) मेमोयर्स आफ अमीर खाँ पृ० 296

2 (अ) तवारीख मानसिंह पृ० 24 25
   (ब) मानसिंह ने भीमसिंह को चेत 1 माघ सम्वत् 1860 को पत्र लिखा। खास रुक्का खरीता बही न० 9 पृ० 4

3 मानसिंह ने भीमसिंह को चेत 1 माघ सम्वत् 1860 को पत्र लिखा खास रुक्का खरीता बही न० 9 पृ० 4

4 (अ) महाराणा जगतसिंह का महाराणा भीमसिंह को पत्र श्रावण 9 विक्रम सम्वत् 1862 खरीता जात हिन्दी रियासत जयपुर न० 1231 बन्डल 7
   (ब) पूना रजीडन्सी कोरसपोन्डेन्स भाग 11 पृ० 136
   (स) परिहार बी० आर० मारवाड एण्ड दी मराठाज पृ० 144

शासक बनाया जा सके।[1] कृष्णाकुमारी के विवाह के मामले का उसने कूटनैतिक लाभ उठाते हुए जयपुर महाराजा जगतसिंह को इस शर्त पर सहायता देना स्वीकार कर लिया कि मानसिंह को हटकर धोकलसिंह को जोधपुर का शासक बनाया जायेगा।[2]

इसी समय मानसिंह को यह पता चला कि उदयपुर की कृष्णाकुमारी का टीका जयपुर के महाराजा जगतसिंह को भेजा जा रहा है तब जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने अपना अपमान समझा।[3] इसलिये उसने 50 हजार सैनिकों को एकत्रित कर लिया और होल्कर को भी सहायता के लिए बुला लिया।[4]

महाराजा मानसिंह अपनी सेना के साथ 19 जनवरी 1806 को उदयपुर से जयपुर के लिए भेजे जा रहे टीके को लेने के लिए मेड़ता[5] रवाना हुआ।[6] महाराणा भीमसिंह के द्वारा कृष्णाकुमारी का जो टीका जयपुर महाराजा जगतसिंह को भेजा गया था वह मानसिंह के हस्तक्षेप करने के कारण शाहपुरा से वापस उदयपुर लौट आया।[7] परन्तु ओझा का यह मानना है कि टीका मानसिंह की सेना ने लूट लिया था।[8]

---

1. (अ) पूना रेजीडेन्सी कारेसपोन्डेन्स भाग 11 पृ० 136
   (ब) हकीकत बही बीकानेर, वि० स० 1862
   (स) ख्यात भाटी, भाग 3 पृ० 23, फो० 288
   (द) मारवाड़ की ख्यात भाग 4 पृ० 31
2. हकीकत बही, सम्वत् 1862 फो० 84-86
3. (अ) तवारीख मानसिंह फो० 31।
   (ब) ओझा, हिस्ट्री आफ राजपूताना, भाग 4 पार्ट 2 पृ० 788
   (स) मेमोयर्स ऑफ अमीर खाँ पृ० 298
4. (अ) तवारीख मानसिंह फो० 33।
   (ब) मारवाड की ख्यात भाग 3 पृ० 27।
   (स) हकीकत बही (जोधपुर सम्वत् 1862-70) न० 1 फो० 47, 49, 50
   (द) पूना रेजीडेन्स कोरपोन्डेन्स भाग 9 पृ० 13।
5. मेड़ता—नागौर के दक्षिण मे 82 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।
6. (अ) तवारीख मानसिंह फो० 32।
   (ब) मारवाड़ की ख्यात भाग 3 फो० 27।
   (स) रेऊ विश्वेश्वर नाथ, मारवाड़ राज्य का इतिहास भाग 2 पृ० 406।
   (द) हकीकत बही न० 9 पृ० 48
7. (अ) तवारीख मानसिंह फो० 33।
   (ब) मुडियात ख्यात बस्ता न० 58 फो० 80।
   (स) परिहार जी० आर० मारवाड़ एण्ड दी मराठाज (1724-1843) पृ० 145
8. ओझा, जोधपुर राज्य का इतिहास पृ० 825

जयपुर के दीवान रामचन्द्र और जोधपुर के इन्द्रराज सिंघवी के प्रयत्नों से युद्ध टल गया और 8 जून 1806 को जयपुर और जोधपुर के महाराजा के बीच संधि हो गई और दोनों राज्यों की सेनाएँ वापस लौट गई।[1] ठाकुर सवाईसिंह कृष्णाकुमारी के प्रश्न को लेकर जयपुर और जोधपुर के बीच सन्धि हो जाने से बड़ा निराश हुआ। सन्धि दोनों ने ही परिस्थितियों से बाध्य होकर की थी। संधि करने से मानसिंह की प्रतिष्ठा वही और जयपुर महाराजा की प्रतिष्ठा को धक्का पहुँचा था।[2] जयपुर महाराजा ने सन्धि इसलिए की क्योंकि वह युद्ध के लिए तैयार नहीं था। जगतसिंह इस बात के लिए भी कष्ट में था कि उनका टीका मानसिंह के हस्तक्षेप के कारण ही वापस लौट गया था। सन्धि हो जाने के पश्चात् भी महाराजा जगतसिंह कृष्णाकुमारी के साथ विवाह करना चाहता था, इसलिए जयपुर और जोधपुर दोनों आन्तरिक रूप से युद्ध की तैयारी करने लगे।[3]

11 दिसम्बर 1806 को मानसिंह ने अलवर के रावराजा और बीकानेर के सूरतसिंह से जयपुर के विरुद्ध सहायता मांगी। परन्तु उसे कोई सहायता नहीं मिली।[4] मानसिंह ने होल्कर से भी सहायता माँगी।[5] इस पर वह किशनगढ़[6] तक अपनी सेना लेकर आया। उसने महाराजा मानसिंह से सेना खर्च के लिए धन की माग की। धनाभाव के कारण मानसिंह होल्कर को अधिक धन नहीं दे सका। इसी समय जयपुर महाराजा द्वारा बड़ी राशि जसवन्तराव होल्कर को भिजवाने के कारण उसने

---

1. (अ) खरीता बही 12 फो० 48 49।
(ब) खरीता बही 9 फो० 53।
(स) तवारीख मानसिंह फो० 34
2. (अ) पूना रेजीडेन्सी कोरसपोन्डेन्स भाग 11 पृ० 204, 208।
(ब) शर्मा पद्मजा—महाराजा मानसिंह ऑफ जोधपुर एण्ड हिज टाइम्स पृ० 6
(स) खरीता बही 9 फो० 194-227।
3. पूना रेजीडेन्सी कोरसपान्डेन्स भाग 11 पृ० 204-8 जिसके द्वारा जगतसिंह का कृष्णाकुमारी से विवाह करने का इरादा प्रकट होता है और इसी उद्देश्य हेतु उदयपुर महाराजा को नवम्बर 1805 में रुपया भेजा।
4. खरीता बही न० 9 फो 128, 194 227
5. (अ) पूना रेजीडेन्सी कोरसपोडेन्स भाग 11 पृ० 298 209 215
(ब) मुड़ियार की ख्यात बस्ता न० 40 फो० 95।
(स) दाधीच रामप्रसाद—महाराजा मानसिंह जोधपुर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व पृ० 36
6. किशनगढ़ अजमेर के पूर्व में 17 मील की दूरी पर स्थित है। वर्तमान में जयपुर और अजमेर के बीच रेलवे स्टेशन है।

जयपुर महाराजा की सहायता करना स्वीकार कर लिया ।[1] बीकानेर के महाराजा सूरतसिंह ने धोकलसिंह के पक्ष मे जयपुर महाराजा की सहायता देना स्वीकार कर लिया ।[2] जयपुर महाराजा जगतसिंह ने पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह के प्रयत्नो से एक लाख रुपये अमीरखाँ को देकर उसे भी अपने पक्ष म कर लिया ।[3] इस प्रकार की तैयारी हो जाने के पश्चात ठाकुर सवाईसिंह ने जयपुर नरश जगतसिंह से जोधपुर पर आक्रमण करने का अनुरोध किया परन्तु इस समय जगतसिंह का अलवर के बख्तावरसिंह से वैर चल रहा था और जयपुर मे भी चारो और अशान्ति फैल रही थी ।[4] किन्तु उसी समय छीतरमल जोशी[5] ने जयपुर महाराजा जगतसिंह का अलवर राज्य के साथ जो मोमालिन्य था उसे मिटाकर पुन उच्छे सम्बन्ध स्थापित करा दिये ।[6]

अतएव जयपुर ने बख्तावरसिंह को यह सदेह कहला भेजा कि यदि आप मेरी अनुपस्थिति मे जयपुर राज्य प्रबन्ध का भार अपने ऊपर लेकर सेना द्वारा सहायता करें तो मैं धोकलसिंह की सहायता के लिए जोधपुर पर चढाई कर दूं ।[7]

बख्तावरसिंह ने इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया और उसने खोहरा के ठाकुर प्रेमसिंह को सेना सहित उक्त कार्य हेतु जयपुर भेज दिया । इसके जगतसिंह जोधपुर पर आक्रमण करने के लिए रवाना हो गया ।[8]

महाराजा मानसिंह ने 25 फरवरी 1807 को 50 हजार सैनिको के साथ महाराजा जगतसिंह का सामना करने के लिए गीगोली[9] की घाटी मे अपना मोर्चा

---

1 (अ) पूना रेजीडेन्सी कोरसपोन्डेन्स भाग 11 पृ 208 209, 216
(ब) मुडियार की ख्यात, बस्ता 40 फो० 95 ।

2 (अ) हकीकत बही, बीकानेर स० 1863 फो० 170 ।
(ब) राठोडा री ख्यात भाग 2 पृ० 316

3 (अ) रा० रा० अभि बीकानेर, क्रमाक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 20-21
(ब) प्रिन्सेप एच० टी० मेमोयर्स ऑफ अमीर खाँ पृ० 307 ।

4. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1591 बस्ता 196 बन्डल 4 पृ० 29

5 छीतरमल जोशी, जिसकी सन्तान कानेडी गाँव के माफीदार ताजीमी सरदार है ।

6. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 29

7 वही, क्रमाक 1591 बस्ता 196 बन्डल 4 पृ० 29-30 ।

8 वही, क्रमाक 403, बस्ता 62 बन्डल 10 पृ० 3 ।

9 गीगोली की घाटी परबतसर से दो मील की दूरी पर स्थित है ।

जमाया। जयपुर महाराजा ने युद्ध का दायित्व अमीर खाँ[1] और पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह को सौंपा।[2]

13 मार्च 1807 को गींगाली की घाटी में जयपुर और जोधपुर दोनों सेनाएँ एक दूसरे के आमने सामने आ गईं।[3] दोनों सेनाओं के बीच में गींगोली की घाटी में युद्ध हुआ। युद्ध के दौरान मानराजा की सेना में जाकर मिल गये।[4] अतः इस युद्ध में मानसिंह की सेना की पराजय हुई और उसने युद्ध का मैदान छोड़कर जोधपुर की ओर प्रस्थान किया जयपुर महाराजा की अनुपस्थिति में बख्तावरसिंह ने उसके राज्य में अपने उत्तम प्रबन्ध द्वारा सुख और शान्ति स्थापित करने में कोई कसर नहीं उठा रखी।[5]

जब जोधपुर महाराजा मानसिंह रण क्षेत्र छोड़कर भाग गया तब उसके शिविर को महाराजा जगतसिंह और उसके साथियों ने लूट लिया। ठाकुर सवाईसिंह के परामर्श पर महाराजा जगतसिंह ने जोधपुर तक मानसिंह का पीछा किया और नगर पर अधिकार कर धोंकलसिंह को राजा बनाया गया और समस्त राठौड़ सरदारों ने उसे अपना राजा स्वीकार कर लिया।[6]

लेकिन मानसिंह के साथियों का उत्साह कम नहीं हुआ। उन्होंने अपने शत्रुओं

---

1 (अ) अमीर खाँ जसवन्तराव होल्कर का सेनापति था जो राजपूत राज्यों से कर की रकम वसूल करता था।
(ब) मेहता पृथ्वीसिंह—हमारा राजस्थान पृ० 202।

2 (अ) पूना रेजीडेन्सी कोरसपोन्डेंस भाग 2 पृ० 225।
(ब) रेऊ विश्वेश्वरनाथ मारवाड़ का इतिहास भाग 2 पृ० 408।
(स) सवाईसिंह के अधीन 60 हजार सेना हैदराबाद रिसाला तथा अमीर खाँ के अधीन 20 हजार सेना थी। मुड़ियार की ख्यात बस्ता 40 पृ० 17।

3 (अ) हकीकत बही बीकानेर वि० सं० 1863 फो० 174।
(ब) हाल बही (1848 1865) नं० 92 फो० 45

4 जोधपुर स्टेट्स रेकार्ड्स खास रुक्का परवाना बही नं० 2 पृ० 3 7 137।

5 (अ) वही
(ब) रा० रा० अभि बीकानेर क्रमांक 403 1591 बस्ता 92 196 बण्डल 10 4 पृ० 3 4 30।

6 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 1590 बस्ता 196 बण्डल 3 पृ० 20 21
(ब) पूना रेजीडेन्सी कारेसपोन्डेन्स भाग 1 पृ० 228।
(स) तवारीख मानसिंह पृ० 49।
(द) रेऊ विश्वेश्वरनाथ मारवाड़ का इतिहास भाग 2 पृ० 409।

मे भेद नीति का बीज बो दिया था। जोधपुर के इन्द्रराज सिंघवी तथा गंगाराम भण्डारी के प्रयासों से अमीर खाँ जयपुर की सेना छोड़कर वेतन न मिलने का बहाना बनाकर जोधपुर की सेना मे आकर मिल गया। जिससे जोधपुर की सेना मे एक नया उत्साह पैदा हुआ। और अमीरखाँ के नेतृत्व मे जोधपुर की सेना ने जयपुर पर आक्रमण करने के लिए प्रस्थान किया।[1] अमीरखा ने 18 अगस्त 1807 को जयपुर की सेना को बुरी तरह लूटना शुरू किया जयपुर की सेना ने अमीरखाँ का फागी के युद्ध मे बहुत बहादुरी के साथ सामना किया।[2]

जब अमीर खाँ ने जयपुर के प्रत्येक सरदार की भूमि पर लूट मचा दी तब विवश होकर महाराजा जगतसिंह ने कुछ सेना अमीर खाँ को दण्ड देने के लिए भेजी तो वह टोंक[3] की ओर भाग गया। जोधपुर की सेना और तोपों की सहायता पाकर वह पुनः लौट आया और जयपुर की सेना को उसने परास्त किया। इस समाचार के पहुँचने पर महाराजा जगतसिंह ने जोधपुर का घेरा उठाकर जयपुर की ओर प्रस्थान किया।[4]

पहली लड़ाई मे जो तोपे और सैनिक सामग्री लूटी थी उसे आगे भेज दी गयी। उधर फागी के युद्ध के बाद अमीर खाँ शिवनाथसिंह और पृथ्वीराज भन्डारी सहित जोटवारा रवाना हुआ। उस समय जोधपुर महाराजा मानसिंह के जो सरदार पहले उसका साथ छोड़कर जोधपुर से चले गये थे उन्होंने इस अवसर पर अपनी स्वामी भक्ति प्रमाणित करने के लिए जयपुर की लौटती हुई सेना पर धावा कर उसे परास्त किया तथा 40 तोपें तथा रसद का सामान लूट लिया।[5] दूसरी तरफ

---

1 (अ) खास रुक्का, वही, न० 2 पृ० 7 (जोधपुर स्टेट्स)।
(ब) मैल्कम, तवारीख जिल्द 1 पृ० 267।
(स) कर्नल टाड, एनाल्स एण्ड एन्टीक्यूटीज आफ, राजस्थान भाग 2 पृ० 114।
(द) प्रिन्सेप एच० टी० मैमोयर्स ऑफ अमीरखाँ पृ० 320 324।

2 (अ) प्रिन्सेप एच० टी०—मैमोयर्स ऑफ अमीरखाँ पृ० 336।
(ब) तवारीख मानसिंह पृ० 66।

3 टोंक—जयपुर के दक्षिण मे 60 मील की दूरी पर स्थित है।

4 (अ) प्रिन्सेप एच० टी०—मेमायर्स ऑफ अमीर खाँ पृ० 330 तवारीख मानसिंह पृ० 66।
(ब) कर्नल टाड, एनाल्स एण्ड एन्टीक्यूटीज आफ राजस्थान भाग 2 पृ० 112।
(स) जोधपुर स्टेट खास रुक्का परवाना वही न० 4 पृ० 6।
(द) जोधपुर स्टेट्स खरीता वही न० 9 पृ० 130।
(क) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 20, 21।

5 (अ) वही, क्रमाक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 20-21।
(ब) प्रिन्सेप एच० टी० मैमोयर्स ऑफ अमीर खाँ पृ० 339।

अमीर खाँ ने जयपुर राज्य पर 24 घन्टे तक बम्बारी की। इसलिए जयपुर के दरवाजे बन्द कर दिए गए। उस समय जयपुर ने अलवर के बख्तावरसिंह से सहायता मांगी परन्तु उसको अंग्रेजी रजीडेन्ट ने सहायता देने के लिए मना कर दिया। बख्तावरसिंह पूर्व में अंग्रेजो के साथ हुई सन्धि के कारण जयपुर महाराजा की कुछ भी मदद नही कर सका।[1]

महाराजा मानसिंह ने 25 अक्टूबर 1807 को अमीर खाँ की अमूल्य सेवाओं के बदले में उसे अपने साथ सिंहासन पर बिठा कर नवाब की उपाधि से विभूषित किया एवं उसको नावा की जागीर प्रदान की। इसके अलावा कुछ रकम उसके खर्च के लिए देना स्वीकार कर लिया।[2] इसके पश्चात् अमीरखाँ ने जोधपुर महाराजा मानसिंह के परामर्श पर नागौर[3] को घेर लिया और अमीरखाँ ने पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह को धोखा देकर मुन्डवा[4] बुलाया और वहाँ पर उसे महमान बना कर बहुत अच्छा स्वागत किया बाद में उसे 30 मार्च 1808 को मरवा डाला।[5]

सवाईसिंह के मारे जाने पर धोकलसिंह अंग्रेजी राज्य में चला गया।[6] पोकरण के ठाकुर सवाईसिंह के मारे जाने का समाचार अमीर खाँ ने अपने व्यक्तियों द्वारा जोधपुर के महाराजा मानसिंह को भेजा।[7] इसके पश्चात् 31 मार्च 1808 को अमीरखाँ ने नागौर पर अपना अधिकार कर लिया और 15 मई 1808 को नागौर

---

1 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 20 21।

2 (अ) मैमोयर्स ऑफ अमीर खाँ पृ० 344।
  (ब) तवारीख मानसिंह पृ० 168।
  (स) श्यामलदास—वीर विनोद भाग 3 पृ० 864।

3 नागौर—जोधपुर के उत्तर में 90 मील की दूरी पर जोधपुर बीकानेर लाइन पर रेलवे स्टेशन है।

4 मुन्डवा—नागौर से 10 मील की दूरी पर स्थित है।

5 (अ) हकीकत बही जोधपुर भाग 1862-70 न० 1 फो० 101।
  (ब) प्रिन्सेप एच० टी० मैमोयर्स आफ अमीर खाँ पृ० 359।
  (स) हकीकत बही 6 पृ० 482।
  (द) पूना रेजीडेन्सी कोरसपोन्डेन्स पृ० 236।
  (क) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 19-20।

6 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 19 20।
  (ब) तवारीख मानसिंह पृ० 177।

7 (अ) तवारीख मानसिंह पृ० 177।
  (ब) कर्नल टाड एनाल्स एण्ड एन्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान भाग 2 पृ० 11।

से जोधपुर के लिए रवाना हुआ। वहाँ मानसिंह ने उसका स्वागत किया और उसे परवतसर, नावा, डीडवाना साभर आदि परगने उसको खर्चे के लिए दिए।[1]

जोधपुर महाराजा के साथ लड़े गये युद्धो मे जयपुर महाराजा का कम से कम एक करोड 20 लाख रुपया खर्च हुआ परन्तु उसका कोई परिणाम नही निकला।[2] सन् 1801 मे अमीर खा लगभग 30 40 हजार सैनिकों के साथ मानसिंह के परामर्श पर उदयपुर की ओर रवाना हुआ। उदयपुर पहुँचने पर अमीरखाँ ने महाराणा के वकील अजीतसिंह चूण्डावत के साथ महाराणा को कहलवाया कि या तो कृष्णा कुमारी का विवाह जोधपुर के महाराजा मानसिंह के साथ कर दे नही तो मै सारे मेवाड को आग लगाकर खाक कर दूंगा।[3] कृष्णा कुमारी ने मेवाड पर आयी हुई विपत्ति को बचाने के लिए 21 जुलाई 1810 को स्वय ने जहर खाकर आत्म हत्या कर ली उस समय उसकी आयु 16 वर्ष की थी।[4]

इसके पश्चात् महाराजा मानसिंह ने पूर्व मे की गई सन्धि के अनुसार जगतसिंह की बहिन से 3 सितम्बर 1813 को और जगतसिंह ने मानसिंह की लडकी से 4 सितम्बर 1813 को विवाह कर लिया। इस प्रकार दोनो ने वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर बिगडते हुए सम्बन्धो को सुधार लिया और दोनो फिर से मित्र बन गये।[5]

---

1 (अ) हकीकत वही जोधपुर 1862 70 न 1 पृ० 104।
(ब) तवारीख मानसिंह पृ० 186।
(स) प्रिन्सप एच० टी०—मैमोयर्स आफ अमीरखाँ पृ० 360।
(द) जोधपुर स्टेट रेकार्डस हकीकत वही न० 6 पृ० 482 83।

जबकि कर्नल टाड ने यह लिखा है कि जब अमीर खाँ जोधपुर लौटा तब जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने उसे दस लाख रुपये दिए और दो बडे गाँव मुन्डवा और कुचालीवास तथा 100 रुपये प्रतिदिन खर्च के भत्ते के रूप मे देना स्वीकार कर लिया।

कर्नल टाड, एनाल्स एण्ड एन्टीक्विटीज आफ राजस्थान भाग 2 पृ० 114।

2 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 20-21।
3 (अ) तवारीख मानसिंह पृ० 189।
(ब) रेउ विश्वेश्वरनाथ, मारवाड का इतिहास भाग 2 पृ० 415।
(स) श्यामलदास—वीर विनोद, भाग 2 पृ० 1728।
(द) मेल्कम दी मैमायर्स ऑफ सैन्ट्रल इण्डिया भाग 1 पृ० 340।
4. (अ) पूना रेजीडेन्सी कोरसपोन्डेन्स भाग 14 पृ० 39।
(ब) हकीकत वही, जोधपुर विक्रम स० 1862-70 न० 9 पृ० 266।
(स) कर्नल टॉड, एनाल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान भाग I पृ० 369।
5. (अ) हकीकत वही, जोधपुर वि स० 1862-70 न० 9 पृ० 437।
(ब) प्रिन्सेप एच० टी० मैमायर्स आफ अमीर खाँ पृ० 423-424।
(स) तवारीख मानसिंह पृ० 202।
(द) पूना रेजीडेन्सी कोरसपोन्डेन्स भाग 4 पृ० 30।

बख्तावरसिंह और अंग्रेजों के सम्बन्ध (1805 ई०)—

15 अक्टूबर 1805 को अंग्रेजो और बख्तावरसिंह दोना के बीच सन्धि हुई जिसका इकरारनामा अलवर की ओर से वकील अहमद बक्श खाँ के द्वारा लिखा गया। 15 अक्टूबर 1805 को बख्तावरसिंह ने एक लाख रुपए अंग्रेज सरकार को देकर किशनगढ तथा वहाँ के दुर्ग की सामग्री प्राप्त की।[1] दादरी, बुधवाना और भावना के परगने अंग्रेज सरकार के द्वारा महाराव राजा बख्तावरसिंह से छीन लिए गए और उसके स्थान पर अंग्रेजा ने बख्तावरसिंह को तिजारा, टपूकडा और कठुम्बर के परगने दिए। साथ ही यह भी निश्चय किया गया कि लासवाडी नदी का बाँध भरतपुर राज्य के लाभ की दृष्टि से सदा के लिए खुला रखा जायगा।[2]

तिजारा मे विद्रोह (1805 ई०) –

सन् 1805 मे तिजारा[3] निवासियो ने बख्तावरसिंह के विरुद्ध विद्रोह किया। वहाँ शाति स्थापित करने के लिए उसने नवाब अहमद खाँ बक्श के भाई नबी बक्श खाँ और दीवान बालमुकुन्द को सेना सहित भेजा।[4]

तिजारा पहुँचते ही दीवान बालमुकुन्द प्रलोभन म आकर उनसे मिल गया। उसके विश्वासघात का समाचार बख्तावरसिंह का प्राप्त हुआ तब उसने बालमुकुन्द को तुरन्त अधिकारी पद से हटा दिया और उसके स्थान पर भगवानदास टोगडा को भेजा। कुछ दिनो बाद टोगडा को भी पद से हटा दिया गया और उसके स्थान पर दीवान रामलाल भेजा गया।[5]

दीवान रामलाल ने मसरा म गढी का निर्माण करवाया और रूपवास पर चढाई कर उसे लूट लिया। इसके पश्चात वह शाहाबाद के समीप पहुंचा तब उसने नवाब फेजुल्लाह खा की अधीनता स्वीकार करने और भेट देने के लिये विवश किया।[6]

---

1 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1590 91 बस्ता 196 बन्डल 3 4 पृ० 35 30 31।
   (ब) एचिसन सी० यू ट्रीटीज एंगेजमेन्टस एण्ड सनदस जिल्द 3 पृ० 402।
2 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 413 139 373, 414-746 747 बस्ता 62 19 55 62 107 बन्डल 10 5 11, 4 5 पृ० 2 10, 16 2 1 4 5 6।
   (ब) देखिए परिशिष्ट 'सी"।
3 तिजारा—अलवर के पूर्वोत्तर म 20 मील की दूरी पर स्थित है।
4 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1591 बस्ता 196 बन्डल 4 पृ० 31।
5 रा० रा० अभि बीकानेर क्रमाक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 32
6 वही क्रमाक 1591 बस्ता 196 बण्डल 4 पृष्ठ 32

सन् 1181 में बख्तावरसिंह ने अपनी सेना सहित गंगा स्नानार्थ रामघाट को प्रस्थान किया। उस समय उसकी सेना मथुरा में ठहरी हुई थी तभी अम्बाजी इंगले के एक हाथी ने उसकी सेना में घुसकर उनके कई घोड़े मार दिये उस पर अलवर के सैनिकों ने उस हाथी को मार दिया। हाथी के मारे जाने का समाचार मराठा सैनिकों को ज्ञात हुआ तो वे अलवर नरेश से युद्ध तैयार करने के लिए तैयार हो गये। उधर अलवर की सेना भी युद्ध के लिए तैयार हो गई। परन्तु अंग्रेजों के हस्तक्षेप से युद्ध टल गया।[1]

1811 में तिजारा के मेवों ने फिर विद्रोह का झण्डा खड़ा कर दिया। तब अंग्रेज जनरल कर्नल मेन सेना सहित तिजारा पहुंचा और वहाँ पर मेवों के विद्रोह को दमन कर शांति व्यवस्था कायम की।[2]

सन् 1811 में बख्तावरसिंह खुशालीराम बोहरा को जयपुर महाराजा का मन्त्री बनाना चाहता था। इसलिए जयपुर राज्य के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करना प्रारम्भ कर दिया और उसने खुशालीराम को मन्त्री बनाने के लिये दो पैदल सैनायें और 300 घुड़सवारों को जयपुर पर आक्रमण करने के लिए रवाना किये। इसके साथ ही मोहम्मदशाह नामक पठान सरदार को सेना के खर्च के लिए डेढ लाख रुपया प्रतिमाह देने का निश्चय किया। जैसे ही यह सेना जयपुर की सीमा में पहुंची वैसे रेजीडेन्ट को इस सम्बन्ध में सूचना प्राप्त हुई। तब अंग्रेज रेजीडण्ट ने बख्तावरसिंह द्वारा बिना उसकी अनुमति के जयपुर के विरुद्ध सेना भेज देने की कार्यवाही का सख्त विरोध किया अंग्रेजों के बढ़ते हुए दबाव के कारण राव राजा बख्तावरसिंह ने अपनी सेना को जयपुर से वापस लौट आने का आदेश दिया।[3]

राव राजा बख्तावरसिंह और अंग्रेजों के बीच द्वितीय सन्धि (16 जोलाई, 1811 ई०)—

16 जुलाई 1811 को बख्तावरसिंह और अंग्रेज सरकार के बीच पुनः एक सन्धि हुई जिसके अनुसार बख्तावरसिंह ने बिना अंग्रेज सरकार की अनुमति से किसी भी अन्य राज्य से किसी प्रकार का राजनीतिक सम्बन्ध या समझौता न करना स्वीकार कर लिया। 1803 की सन्धि के अनुसार शेष मामलों में अंग्रेज

---

1. वही, क्रमांक 746 47 बस्ता 107 खण्ड 4, 5 पृ० 1-4 5 6।
2. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 1591 बस्ता 196 खण्ड 4 पृ० 36
3. (अ) वही, क्रमांक 1590 बस्ता 196 खण्ड 3 पृ० 36।
   (ब) रत्नीगर, सी० यू० ट्रीटीज एनगेजमेन्ट्स एण्ड सनद्स भाग 3 पृ० 346।

सरकार हस्तक्षेप नही कर सकती थी। इस सन्धि के द्वारा अंग्रेजो को हस्तक्षेप करने का अधिकार मिल गया।[1]

सन् 1812 म बख्तावरसिंह ने बिसातियों को उनके स्थान से हटा कर लादिया दरवाजे की ओर बसाया और उनके पुराने घरो को नष्ट करके भवन बनवाया जो पुराने महल के नाम से प्रसिद्ध है। त्रिपोलिया दरवाजा बन्द था उसे खुलवाया। त्रिपोलिया के उपर बल्देवजी का मन्दिर बनवाया। बख्तावरसिंह ने मल फ्रांसीसी को अपनी सेना का अध्यक्ष नियुक्त किया।[2]

बख्तावरसिंह के द्वारा दुब्बी और सिकराय के परगनो पर अधिकार (जून 1811 ई०)—

सन् 1793 म जब बख्तावरसिंह अपना विवाह करने मारवाड गया तब जयपुर महाराजा ने उसके कई दुर्ग छीन लिए थे परन्तु बख्तावरसिंह ने सन् 1812 म दुब्बी[3] और सिकराय पर पुन अपना अधिकार कर लिया।

इसलिए बख्तावरसिंह ने 1812 म पुन राज्य से छीन कर इन परगनो पर अपना अधिकार कर लिया।[4]

अँग्रेज सरकार का असन्तोष और दबाव—

बख्तावरसिंह तथा अंग्रेज सरकार के बीच जब सन्धि स्थापित हुई तब दुब्बी तथा सिकराय के प्रदेशो पर जयपुर महाराजा का अधिकार था। अतः बख्तावरसिंह

---

1 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 1591 बस्ता 196 बण्डल 4, पृ० 37।
   (ब) एचीसन की किताब जिल्द 3 पृ० 346 (देखिये परि० डी)
   (स) एचीसन, सी० यू० ट्रीटीज एगेजमेन्टस एण्ड सनदस भाग 3 पृ० 346 देखिए परिशिष्ट डी।
   (द) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 746-47 बस्ता 107 बण्डल 4 5 पृ० 1-4 5 6
   (क) गहलोत सुखवीरसिंह—राजस्थान के इतिहास का तिथि क्रम पृ० 84।
   (ख) श्यामलदास वीर विनोद भाग 4 पृ० 1401।

2 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 1590 बस्ता 196 बण्डल 3 पृ० 38।

3 दुब्बी राजगढ से 10 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। सिकराय अलवर से 70 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

4 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 414 बस्ता 62 बण्डल 11 पृ० 2।
   (ब) एचीसन सी० यू० ट्रीटीज एगेमेन्टस एण्ड सनदस भाग 3 पृ० 346।
   (स) श्यामलदास वीर विनोद भाग 4 पृ० 1380।
   (द) गहलोत सुखवीरसिंह राजस्थान के इतिहास का तिथि क्रम पृ० 84।

या उन परगनों को जयपुर महाराजा से छीन लेना सन्धि के नियमो के प्रतिकूल था। अतएव दिल्ली के रेजीडेन्ट ने बख्तावरसिंह स उक्त प्रदेशो को जयपुर महाराजा को लौटा देने के लिए अनुरोध किया परन्तु बख्तावरसिंह ने इस प्रस्ताव को स्वीकार नही किया।[1] तब अँग्रेज रेजीडेन्ट ने बख्तावरसिंह पर यह दवाव डाला कि यदि दुब्बी और सिकराय के प्रदेशो पर स उसने अधिकार नही हटाया तो उसके विरुद्ध अंग्रेज सेना भेज दी जायेगी लेकिन उस दबाव का भी बख्तावरसिंह पर कोई प्रभाव नही पडा।[2]

बख्तावरसिंह के विरुद्ध अंग्रेज सेना का प्रस्थान और शान्ति स्थापित होना—

जब अंग्रेज रेजीडेन्ट के दबाव का बख्तावरसिंह पर कोई प्रभाव नही पडा तब उसके विरुद्ध सैनिक कार्यवाही करना आवश्यक हो गया। इसलिए सन् 1812 मे ब्रिटीश सरकार ने जनरल मार्शल के अधीन एक सना भेजी और उस दुब्बी तथा सिकराय के परगने पुन जयपुर को लौटा देने के लिए विवश किया। पहले तो उस यह सूचना मिली की ब्रिटीश जनरल मार्शल सना सहित बहादुरपुर[3] तक आ गया है तब उसने नवाब अहमद बख्श खाँ वकील के अनुरोध करने पर अपनी सैनिक शक्ति को कमजोर देखते हुए दुब्बी और सिकराय आदि दुर्गों पर स अपना अधिकार हटा लिया और फिर से जयपुर राज्य के कब्जे म द दिए और अपनी सना अलवर बुला ली।[4] अंग्रेज सरकार का अलवर पर आक्रमण करने क लिए बहादुरपुर तक सेना भेजने का जो रुपया खर्च हुआ था उसके लिए बख्तावरसिंह को तीन लाख रुपया अँग्रेज सेना के अभियान व्यय क रूप मे देना पडा।[5]

---

1 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1590, 414 बस्ता 196, बन्डल 3 पृ० 40।
   (ब) गहलोत सुखवीरसिंह—राजस्थान का सक्षिप्त इतिहास पृ० 133।

2 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1591, 414 बस्ता 196, 62 बन्डल 4 पृ० 4, 11।
   (ब) श्यामलदास—वीर विनोद भाग 4 पृ० 1380।

3 बहादुरपुर—अलवर से 22 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

4 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1560, 413, 370 बस्ता 196 62, 55 बन्डल 3, 10, 2 पृ० 41, 4, 1।
   (ब) गहलोत सुखवीरसिंह, राजस्थान का सक्षिप्त इतिहास पृ० 133।

5. (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1591, 414 बस्ता 196, 62 बन्डल 4, 11 पृ० 41-2।
   (ब) श्यामलदास, वीर विनोद भाग 4 पृ० 1380।

बख्तावरसिंह के अन्तिम वर्ष और उसकी मृत्यु (11 फरवरी, 1815)—

बख्तावरसिंह ने अलवर नगर के समीप अलावलपुर नामक ग्राम में अपना डेरा डाला और उन्मत्त मल्ल युद्ध देखने की इच्छा से मल्लों के लिए अखाड़ा बनाने की आज्ञा दी।[1]

जिस स्थान पर अखाड़ा बनाया गया उसके निकट किसी मुसलमान फकीर की समाधि (कब्र) थी। नागा ने राव राजा से निवेदन किया कि अखाड़े के समीप मुसलमानों की समाधियाँ हैं। इस पर बख्तावरसिंह ने समाधियों को उखाड़ने की आज्ञा दी। आज्ञा मिलते ही उसके व्यक्तियों ने समाधियों को उखाड़ दिया।[2] ब्रिटिश रेजीडेन्ट ने बख्तावरसिंह से उक्त अनुचित कार्य को रोकने का अनुरोध किया।[3] मियाँ फिदा हुसैन का भाई दिल्ली के बादशाह का प्रधानमंत्री था उसने अलवर में बख्तावरसिंह द्वारा की गई कार्यवाही के बारे में दिल्ली के बादशाह बहादुरशाह को अवगत कर दिया।[4]

बख्तावरसिंह के इन कार्यों का पता लगाने के लिए मुगल सम्राट बहादुरशाह की प्रार्थना पर अंग्रेज सरकार ने तत्काल एक प्रतिष्ठित और उच्च पदाधिकारी को इस मामले की जाँच करने के लिए नियुक्त किया।[5]

अंग्रेज सरकार ने मुगल सम्राट बहादुरशाह की प्रार्थना पर बख्तावरसिंह के वहाँ एक उच्च पदाधिकारी को मुस्लिम विरोधी कार्यवाही के मामले के सम्बन्ध में जाँच करने के लिए भेजा लेकिन बख्तावरसिंह की उन्माद रोग से 11 फरवरी 1815 को मृत्यु हो गयी।[6] उसकी पासवान मूसी नामक एक रानी भी उसके साथ सती हुई।[7] महाराव के स्वर्गवास होने पर कुछ दिनों तक अंग्रेज सरकार से परस्पर इस

---

1 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 42।

2 (अ) वही, क्रमांक 1591 बस्ता 196 बन्डल 4 पृ० 41 42।
(ब) अलवर में ऐसी किवदन्ती प्रचलित है कि उक्त कार्यवाही करने के पश्चात् बख्तावरसिंह बीमार हो गया था परन्तु ऐसी कहानियों पर विश्वास नहीं किया जा सकता।

3 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 413 बस्ता 62 बन्डल 10 पृ० 6।

4 वही, क्रमांक 1590 बस्ता 195 बन्डल 3, पृ० 49।

5 वही क्रमांक 413 बस्ता 62 बन्डल 10 पृ० 6

6 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 746, 47 916 1648 बस्ता 107, 127, 214 बन्डल 4, 5, 2 19 पृ० 1 4, 5-6 2, 11।
(ब) श्यामलदास वीर विनोद भाग 4 पृ० 1380।

7 रा० रा० अभि बीकानेर, क्रमांक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 51।

प्रश्न पर प्रतिवाद होता रहा कि लार्ड लेक के दिये हुए नये प्रदेश अलवर राज्य से वापस न लिये जायें या नहीं। अन्त में यह निश्चय हुआ कि दिये हुए प्रदेशों को फिर से ले लेना न्याय संगत नहीं है।[1]

बख्तावरसिंह की महारानी से कोई सन्तान पैदा नहीं हुई थी परन्तु उसकी मूसी नामक एक उप पत्नी से एक पुत्र और एक पुत्री उत्पन्न हुई थीं। पुत्री का नाम चाँद बाई और पुत्र का नाम बलवन्तसिंह रखा गया।[2] ततारपुर के जागीरदार ठाकुर कान्हसिंह चौहान से चाँदबाई का और ठाकुर कृष्णसिंह चौहान की पुत्री से राजकुमार बलवन्तसिंह का विवाह हुआ। रानी से उत्पन्न कोई सन्तान न होने के कारण महाराव ने अपने भतीजे विनयसिंह को दत्तक लिया जिससे आगे चलकर विनयसिंह और बलवन्तसिंह में उत्तराधिकार संघर्ष हुआ।[3]

---

1 वही।
2 वही क्रमांक 1591 बस्ता 196 बन्डल 4 पृ० 42।
3 वही।

6

बन्नेसिंह और अलवर राज्य की प्रगति (1815-1857 ई०)

बन्नेसिंह और अलवर राज्य की प्रगति (1815-1857 ई०)

बन्नेसिंह बख्तावरसिंह के भाई थाना[1] के ठाकुर सलेहसिंह का पुत्र था उसका जन्म 16 सितम्बर 1808 को हुआ था[2] बख्तावरसिंह के कोई पुत्र नहीं था। उसकी पासवान मूसी से उत्पन्न एक लड़की चाँदबाई थी जिसकी शादी ततारपुर के ठाकुर कान्हसिंह के साथ हुई थी और एक लड़का बलवन्तसिंह था।[3] बख्तावरसिंह ने अपने भाई थाना के ठाकुर सलेहसिंह के लड़के विनयसिंह को साथ वर्ष की उम्र से ही अपने पास रखा था। रस्म-रिवाज के मुताबिक वह गोद नहीं लिया जा सका क्योंकि रिस्म पूरी होने के पूर्व ही बख्तावरसिंह का देहान्त हो गया था। लेकिन सरदार लोग उसको गोद लिया हुआ ही समझते थे और बख्तावरसिंह के दिल में भी ऐसी ही इच्छा थी। चूंकि बख्तावरसिंह अपनी मृत्यु से पूर्व उत्तराधिकार का निर्णय नहीं कर सका जिसके परिणामस्वरूप उसकी मृत्यु के पश्चात् बन्नेसिंह के बीच उत्तराधिकार संघर्ष प्रारम्भ हो गया।[4]

---

1. थाना राजगढ के उत्तर पश्चिम में 2 मील की दूरी पर स्थित है।
2. राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर क्रमांक 746, 747 बस्ता 107 बन्डल 4, 5 पृ० 1-4, 5-6।
3. (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 350, 402 बस्ता 51, 61 बन्डल 8, 6 पृ० 6, 77।
   (ब) राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली, फोरिन पोलिटिकल डिपार्टमेन्ट 17-8-1840 फाइल न० 23।
4. (अ) राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, क्रमांक 1591, 144 बस्ता 196, 19 बन्डल 3, 10 पृ० 43, 30।
   (ब) एचीसन सी० यू० ट्रीटीज एंगेजमेन्टस एण्ड सनदस वा० 3 पृ० 346
   (स) श्यामलदास : वीर विनोद, भाग 4 पृ० 1381।

उत्तराधिकार का संघर्ष और बन्नेसिंह का राज्याभिषेक—

हरनारायण हल्दिया व दीवान नोनिद्धराम सहित अनेक सरदारों ने बन्नेसिंह को ही शासक बनाने के लिए जोरदार समर्थन किया।[1] दूसरा उम्मीदवार बख्तावर सिंह की पासवान मूसी जो कि एक मुसलमान वेश्या थी उससे उत्पन्न पुत्र बलवन्तसिंह था। बलवन्तसिंह की आयु उस समय लगभग 6 वर्ष की थी। कुछ मुसलमान सरदार बलवन्तसिंह को गद्दी पर बिठाने के पक्ष में थे। शालिगराम और लोहारू के नवाब अहमद बख्शखाँ ने बलवन्तसिंह का पैदाइश मुसलमान होने के कारण व बख्तावरसिंह की पासवान से उत्पन्न होने के कारण उसको राजगद्दी पर बिठाना चाहते थे उनका कहना था कि बलवन्तसिंह बख्तावरसिंह की पासवान का बेटा होने से विनयसिंह का हिस्सेदार था। दूसरी तरफ वाकावत अक्षयसिंह व रामु दरोगा आदि जिन्होंने विनयसिंह को गद्दी पर बिठाने के लिए भरसक प्रयास किया था।[2] 12 फरवरी 1815 को बन्नेसिंह को गद्दी पर बिठा दिया और दोनों के बीच वैमनस्य दूर करने के लिए बन्नेसिंह को गद्दी की बायीं तरफ बलवन्तसिंह को भी बिठाया गया और यह निश्चय किया गया कि दोनों ही बराबरी में राजगद्दी के हिस्सेदार माने जायें।[3]

जब रामू खवास ठाकुर अक्षयसिंह तथा दीवान शालिगराम ने दिल्ली पहुँच कर मटकाफ रेजीडेन्ट से राजगद्दी की दो खिल्लअत बराबर देने की प्रार्थना की तो रेजीडेन्ट ने उन्हें समझाया कि एक राज्य में दो शासक कैसे राज्य कर सकते हैं। यह नियमों के प्रतिकूल है।[4] किन्तु उक्त दोनों की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए अंग्रेज सरकार ने दोनों के लिए बराबर खिल्लअत भेजी और यह समझौता हुआ कि महाराव राजा का करार दिया जा कर बन्नेसिंह के नाम से होगा लेकिन सारा काम काज बलवन्तसिंह करेगा। तथा एक दूसरे की राय लेकर शासन करेंगे आपस में

---

1 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 144 बस्ता 21 बण्डल 1 पृ० 23।
(ब) एचीसन सी० यू० ट्रीटीज एगजमेन्टस एण्ड सनद्स वा० 3 पृ० 346।

2 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 144 1621 बस्ता 19 105 बण्डल 10 3 पृ० 30 124।

3 (अ) राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली फॉरिन पॉलिटिकल कन्सलटेशन 17 8 1840 फाइल न 23।
(ब) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 746 747 248 बस्ता 107 21 बण्डल 4 5 1 पृ० 1 4 5 6 23।

4 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 144 148 बस्ता 19 21 बण्डल 10 1 पृ० 30 23।

कभी वाद विवाद नहीं होगा। इस पर अंग्रेज सरकार ने अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी तथा दो उपरोक्त व्यक्ति दोनों को दे दिए गए।[1]

नवाव अहमद बख्श खाँ रामू ख्वास व ठाकुर अक्षयसिंह की प्रार्थना पर गवर्नमेंट की स्वीकृति से रियासत के बन्दोबस्त के लिए नवाव अहमद बख्श खाँ वकील अक्षयसिंह मुसाहिब राज दीवान नानकराम व मोतीराम को फौज बख्शी दीवान बालमुकुन्द को रियासत का प्रधान और ठाकुर सम्भूसिंह नरूका को अलवर का जिम्मेदार बनाया गया। 30 जनवरी 1817 को नवाव अहमद बख्श खाँ ने परगना तिजारा तथा टपूकड़ा का ठेका लिया।[2] सन् 1824 तक पदाधिकारी विकट परिस्थितियों में राज्य का काम चलाते रहे। दोनों ही दावेदारों के अल्पवयस्क होने तक उनके समर्थक अपनी अपनी मनमानी करते रहे राज्य हित के बजाय अपने दावेदार के हित का अधिक ध्यान रखते रहे। लेकिन दोनों के वयस्क होने पर अपने हाथ में सारी शासन सत्ता लेने की इच्छायें जागरूक हुई। इसका परिणाम यह हुआ कि उन्होंने एक दूसरे के विरुद्ध षडयन्त्र रचना प्रारम्भ कर दिया।[3]

दोनों के सम्बन्ध बिगड़ने की शुरुआत होने का मुख्य कारण यह था कि अंग्रेज रेजीडेन्ट जनरल अक्टरलोनी ने एक जोड़ी पिस्तौल और एक पेशकब्ज ईनाम के रूप में बन्नेसिंह के पास भेजा था जिसमें से पेशकब्ज और पिस्तौल तो बन्नेसिंह ने अपने पास रख लिया और बनयवन्तसिंह को सिर्फ पिस्तौल ही दिया पेशकब्ज नहीं दिया। जब बनयवन्तसिंह को इसका पता लगा तो दोनों के बीच सम्बन्ध कटु हो गए।[4]

अन्त में अलवर राज्य में दो दल बन गये। एक दल बनयवन्तसिंह का समर्थन करता था तो दूसरा बन्नेसिंह का। नवाब अहमद बख्श खाँ अलवर राज्य का वकील था जिसने लासवाड़ी के युद्ध में अंग्रेजों की अच्छी सहायता की थी उसके प्रतिकार में उसे अंग्रेज गवर्नर जनरल ने फिरोजपुर का नवाब बना दिया था। उसने शुरू से ही बनयवन्तसिंह का जोरों से समर्थन करना प्रारम्भ कर दिया था दूसरा दल

---

1 (अ) रा० रा० अभिलेखागार, बीकानेर क्रमांक 1621 बस्ता 205, बन्डल 3 पृ० 124।
(ब) एचिसन सी० यू० ट्रीटीज एंगेजमेन्टस एन्ड सनदस वा० 3 पृ० 346।

2 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 144 बस्ता 19 बन्डल 10 पृ० 31।

3 वही, क्रमांक 1621 बस्ता 205 बन्डल 3 पृ० 124।

4 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 1621 बस्ता 205 बन्डल 3 पृ० 124।
(ब) श्यामलदास वीर विनोद भाग 4 पृ० 1382।

जिसमें मन्ना सुनार व नगर तथा नंदराम दीवान आदि रावराजा बन्नेसिंह का समर्थक था ।[1]

अहमद बख्श खाँ के विरुद्ध षडयन्त्र –

सन् 1824 में बन्नेसिंह के समर्थकों ने बलवन्तसिंह के प्रबल समर्थक नवाब अहमदबख्श खाँ को मारने के लिए षडयन्त्र रचा और एक मेव को 6 हजार रुपया नकद व गाँव इनाम में देने का प्रलोभन देकर नवाब अहमद बख्श खाँ को हत्या करने के लिए तैयार किया ।[2]

इस प्रकार उक्त मेव दिल्ली पहुँचा और दिल्ली में अवसर पाकर रात के समय जब अहमदबख्श खाँ तम्बू के अन्दर सो रहा था तब उसने उस पर तलवार से वार किया जिससे वह जख्मी हो गया गया । उस समय वह दिल्ली में रेजीडेन्ट का मेहमान था । कुछ समय बाद नवाब स्वस्थ हो गया । उस मेव को दिल्ली में ही गिरफ्तार कर लिया गया और उसने सारा भेद खोल दिया कि बन्नेसिंह के समर्थक लोगों की साजिश से ही यह षडयन्त्र रचा गया था । बलवन्तसिंह ने मेव को गिरफ्तार कर लिया तथा मन्ना और नंदराम दीवान जो कि बन्नेसिंह के समर्थक थे उनको भी गिरफ्तार कर लिया । बलवन्तसिंह ने उन तीन व्यक्तियों का तुरन्त वध करवा दिया जिनका इस षडयन्त्र में हाथ था ।[3]

इसी समय रामू ख्वास तथा अहमदबख्श खाँ ने दिल्ली जाकर अंग्रेज रेजीडेन्ट अक्टरलोनी के पास अपने अपने पक्ष का समर्थन कराने का प्रयास लेकिन रामू ख्वास व मुन्शी करम अहमद दोनों ही जनरल अक्टरलोनी से अपनी माग मनवाने में सफल हो गए और उसने इस बात की स्वीकृति दे दी कि बलवन्तसिंह के समर्थकों को अलवर राज्य से बाहर निकाल दिया जावे ।[4]

रामू ख्वास की इस प्रकार की सूचना के बाद बन्नेसिंह के समर्थक राजपूत सरदारों ने अलवर शहर के दरवाजों की रक्षा की व्यवस्था करने के बाद बलवन्त सिंह के महल पर हमला किया ।[5]

---

1. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 148 बस्ता 21 बन्डल 1 पृ० 24 ।
2. (अ) वही क्रमांक 746, 747, 350, 1621 बस्ता 107, 51, 205 बन्डल 4, 5, 8, 3 पृ० 1-4 5-7, 7, 124 ।
   (ब) एचीसन सी० यू० ट्रीटीज एंगेजमेन्टस एण्ड सनदस वा० 3 पृ० 346 ।
3. (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 350 बस्ता 51 बन्डल 8 पृ० 7 ।
   (ब) श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 4 पृष्ठ 1382 ।
4. (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 144 बस्ता 19 बन्डल 10 पृष्ठ 31 ।
5. वही क्रमांक 350 बस्ता 51 बन्डल 8 पृ० 7 ।

इस समय बन्नेसिंह को वाकावत अक्षयसिंह के मकान में रखा गया। आधी रात से एक पहर दिन चढ़ने तक बराबर लड़ाई चलती रही जिसमे बलवन्तसिंह की ओर से 10 व्यक्ति मारे गए बाकी के लोगों ने बन्नेसिंह के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।[1] बलवन्तसिंह ने जनाना महल मे छिपकर अपनी जान बचाई लेकिन उसको गिरफ्तार कर लिया गया और दो वर्ष तक कैद मे रखा गया। बलवन्तसिंह के समर्थक ठाकुर बली कप्तान फास्ट व टामी को भी कैद लिया गया। इस लड़ाई मे वाकावत अक्षयसिंह की सहायता से ही बन्नेसिंह को विजय प्राप्त हुई। इस घटना को महल राग' के नाम से जाना जाता है।[2]

जब अंग्रेज रजीडेन्ट अक्टरलोनी को अहमदबख्श खां ने इस लड़ाई की सूचना भेजी तो अंग्रेज रजीडेन्ट ने इस मामले की जाँच कराई और दोनो ही पक्षो को आपस मे समझौता करने की सलाह दी लेकिन उस समय कलकत्ते के किसी झगड़े मे अंग्रेज सरकार ने अपनी सेना भेज रखी थी इसीलिए अलवर के इस मामले मे कोई कार्यवाही नही की सकी थी।[3]

जनरल अक्टरलोनी ने यह प्रयास किया कि बन्नेसिंह के द्वारा बलवन्तसिंह के हिमायतियो को 15 हजार रुपये की वार्षिक आय की जागीर अलवर के द्वारा दिलाकर दोनो के बीच समझौता करा दिया जावे। लेकिन बन्नेसिंह ने इस शर्त को मानने से इन्कार कर दिया।[4] कुछ समय पश्चात् अंग्रेज रेजीडेन्ट ने बन्नेसिंह को लिखा कि बलवन्तसिंह को कैद से मुक्त कर दिया जाय तथा उसे आधा राज्य दे दिया जाय या फिर युद्ध के लिए तैयार हो जाये परन्तु बन्नेसिंह ने अंग्रेज रेजीडेन्ट के इस आदेश को मानने से इन्कार कर दिया।[5]

ऐसे समय मे अंग्रेज रेजीडेन्ट ने भरतपुर की लड़ाई समाप्त होने के पश्चात् लार्ड केम्बर मअर के अधीन अपनी सेना को अलवर पर आक्रमण करने के लिए

---

1. रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 144 148 बस्ता 19, 21 बन्डल 10, 1 पृ० 31, 24।
2. (अ) वही, क्रमाक 144, 350 बस्ता 19 51 बन्डल 10, 8 पृ० 31, 7।
   (ब) श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 4 पृ० 1383।
3. (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1621 148 बस्ता 205, 21 बन्डल 391 पृ० 12, 125, 24।
4. रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 144, 148 350 बस्ता 19 21, 51 बन्डल 10, 1, 8, पृ० 31, 25, 7।
5. (अ) वही, क्रमाक 1621, बस्ता 205, बण्डल 3 पृ० 125।
   (ब) राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली, फोरिन पोलिटिकल कन्सलटेशन्स 14 अप्रेल 1826 फाइल 33।

भेजी। अंग्रेजों की सैनिक कार्यवाही के कारण बन्नेसिंह को मजबूर होकर अंग्रेजों की सलाह को मानना पड़ा और बलवन्तसिंह को कैद से रिहा कर दिया।[1] बन्नेसिंह ने अंग्रेजों को यह स्पष्ट किया कि हमारे यहाँ की रियासतों में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है कि पासवान के लड़के को दत्तक पुत्र के बराबर राज्य का आधा भाग दिया जाय। उसे अधिक से अधिक अपने जीवन निर्वाह के लिए कुछ रुपया प्रतिमाह दिया जा सकता है परन्तु अंग्रेजों के दवाव के कारण बन्नेसिंह को कुछ परगने देने पड़े।[1]

बन्नेसिंह के द्वारा बलवन्तसिंह को जागीर प्रदान करना (21 फरवरी, 1826)—

अन्त में बन्नेसिंह ने 21 फरवरी 1826 को बलवन्तसिंह के नाम एक इकरार नामा लिखा। बख्तावरसिंह को अँग्रेज सरकार ने लार्ड लेक की सिफारिश पर लासवाड़ी के युद्ध में सहायता करने के फलस्वरूप तिजारा, टपूकड़ा कताय व मुंडावर आदि जो परगने अलवर को दिये गये थे वो परगने बन्नेसिंह बलवन्तसिंह तथा उसके उत्तराधिकारियों को हमेशा के लिए आधा नकद और आधा इलाका अँग्रेज सरकार के निर्देश के अनुसार देते हैं बलवन्तसिंह इलाका और रुपये का मालिक रहेगा लेकिन यदि बलवन्तसिंह की नि सन्तान मृत्यु हो जायेगी तो यह दिया हुआ सारा क्षेत्र फिर से अलवर राज्य में सम्मिलित कर दिया जायेगा। बन्नेसिंह ने 21 फरवरी 1826 को इकरारनामा लिखा और अँग्रेज जनरल ने 14 अप्रेल को इस समझौते की गारन्टी के साथ पुष्टि की।[3]

---

1 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 144, 350 बस्ता 19 51 बण्डल 10, 8 पृ० 31 7।

2 (अ) वही क्रमांक 1621 बस्ता 204, बण्डल 3 पृ० 125।
 (ब) राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली फोरेन पोलिटिकल कन्सलटेशन्स, 14 अप्रेल 1826 फाइल 33।

3 (अ) राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली, फोरेन पोलिटिकल कन्सलटेशन्स 14-4-1826 फा० 33।
 (ब) वही, दिनांक 17 8-1840 फा० 23-24।
 (ग) एचीसन सी० यू० ट्रीटीज एगेजमन्टस एण्ड सनदस जिल्द 3, पृ० 403।
 (द) रा रा० अभि० बीकानेर क्रमांक 144, 249, 350, 162, 1, बस्ता 19, 30, 51, 205 बण्डल 10, 1998, 3, पृ० 32, 11, 7, 125।
 (य) श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 4 पृ० 1382-84।
 (र) गहलोत सुखवीरसिंह राजस्थान के इतिहास का तिथि क्रम पृ० 90 पर बन्नेसिंह के द्वारा इकरारनामा लिखने की तारीख 21 जनवरी, 1826 दी है जो सही प्रतीत नहीं होती है। इकरारनामा 21 फरवरी, 1826 को ही लिखा गया था जिसकी पुष्टि उपरोक्त साधनों से होती है। कृपया देखिये परिशिष्ट (ई)।

1 अक्टूबर 1826 को गर मटवाफ त उन्नसिंह स तिजारा क राजा बलवन्तसिंह को 16 000 रुपया प्रतिमाह भुगतान कर दने के लिए इकरारनामा पर हस्ताक्षर करवाय और वह पत्र तिजारा के राजा के पास 19 अक्टूबर 1826 को भिजवा दिया गया ताकि वह उस इकरारनाम के अनुसार बन्नसिंह स प्रतिमाह किस्त की रकम प्राप्त कर सके। बन्नसिंह न किशनगढ और कठुम्बर क परगने के बजाय 16 000 रुपया प्रतिमाह तिजारा के राजा का दना स्वीकार किया था।[1] इसके पश्चात बलवन्तसिंह ने तिजारा को अपनी राजधानी बनाया और वही पर रहने लगा।

इकरारनामा लिख दने पर बन्नेसिंह का बलवन्तसिंह क झगडा स मुक्ति मिली। और उस शासन करने क पूरे अधिकार मिल गय।[2] लकिन अंग्रेजा स बन्नेसिंह के सम्बन्ध खराब ही रह थे। अंग्रेजो न उस लिखा था कि उन लोगों को राज्य म पृथक किया जाय जिन लोगा का अहमद बख्श की हत्या क षडयन्त्र म हाथ था लेकिन उसने अंग्रेजा की इस बात पर कोई ध्यान नही दिया और उसन उक्त षडयन्त्र स सम्बन्धित लोगो को सजा दने के स्थान पर उनको राज्य सेवा मे म बडे-बडे पदो पर नियुक्त किया।[3] जब अंग्रेज रेजीडेन्ट को बन्नेसिंह की उक्त कार्यवाही का पता चला तो उसन उसको कहला दिया कि न तो वो मर म मिलने क लिए आये और न ही अपना वकील मरे दरबार मे भजे।[4]

बन्नेसिंह ने अंग्रेजो क साथ बिगडत हुए सम्बन्धो के कारण जयपुर महाराजा की अधीनता स्वीकार करना ही ठीक समझा। सन् 1831 मे उसने जयपुर महाराजा को काफी धन दिया और उससे खिलअत लेन का प्रयास किया।[5] सन् 1831 म जब अंग्रेज रेजीडेन्ट को यह पता चला तो वह बन्नेसिंह पर बहुत नाराज हुआ और उसन कहला भेजा कि उसके द्वारा जयपुर महाराजा से जो सम्बन्ध बनाय गय है वो अंग्रेज स की गई सन्धियो के खिलाफ है। इसलिए अंग्रेज रेजीडेन्ट न उस पर यह दबाव डाला कि यदि उसने बिना अंग्रेज रेजीडेन्ट की अनुमति के कोई भी सधि किसी भी

1 राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली फौरिन पोलिटिकल कन्सलटेशन्स 17 8 1840 फा० 23 24।
2 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 144, 350 बस्ता 19 51, बण्डल 10 8 पृ० 32 7।
(ब) गहलोत सुखवीरसिंह राजस्थान के इतिहास का तिथि क्रम पृ० 90
3 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 144 बस्ता 19 बण्डल 10 पृ० 32।
4 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 340 बस्ता 51 बन्डल 8 पृ० 7
5 (अ) वही, क्रमाक 144 बस्ता 19 बन्डल 10 पृ० 32
(ब) श्यामलदास, वीर विनोद भाग 4 पृ० 1384

राज्य के साथ की तो उसके विरुद्ध अंग्रेज सेना भेज दी जायेगी अतः विवश होकर बन्नेसिंह को चुप बैठना पड़ा ।[1]

बन्नेसिंह की आन्तरिक समस्याएँ—

उसके शासन काल में राज्य में आन्तरिक समस्याएँ उत्पन्न हो गयी थीं जिनको हल करने का उसने सफलतापूर्वक प्रयास किया बन्नेसिंह के शासनकाल में मेवों ने बहुत उत्पात मचाया था । जो लुटेरे थे जब कोलोनी[2] में मेवों ने विद्रोह किये तब सन् 1826 में बन्नेसिंह ने उनके विद्रोह को बुरी तरह कुचला और उनके गांवों को जला देने तथा पशुओं को छीन लेने के आदेश दिया । मेवों को आदेश दिया गया कि वे अपने गांवों में मकान बनाकर रहें ताकि ये लोग न तो सगठित हो सकें और न ही विद्रोह कर सकें । सन 1826 में कोलोनी गाव में एक किला बनाया गया जिसका नाम रघुनाथगढ़ रखा गया और 1835 में ही मेवों पर नियन्त्रण रखने के लिए इसी उद्देश्य से बजरगढ में एक और किले का निर्माण करवाया गया ।[3] 14 अप्रैल, 1826 को बन्नेसिंह और बलवन्तसिंह के बीच अंग्रेजी सरकार के समक्ष एक समझौता हुआ था जिसमें बन्नेसिंह ने किशनगढ और फतुम्बर के परगने के बजाय तिजारा के राजा बलवन्तसिंह को 16000 रुपया प्रतिमाह किश्त के रूप में देने का वायदा किया था ।[4] लेकिन वह उसे किश्तों का समय पर भुगतान नहीं करता था इसलिए तिजारा के राजा ने 18 फरवरी, 1832 को अपने वकील को अंग्रेज रेजीडेन्ट के पास भेजा और बन्नेसिंह से समय पर किश्तें दिलवाने की प्रार्थना की ।[5]

इसलिए ब्रिटिश रेजीडेन्ट ने 17 अप्रेल, 1833 को उस पर यह दबाव डाला कि वह बकाया किश्तों का भुगतान 12 प्रतिशत ब्याज की दर से बलवन्तसिंह को करे और भविष्य में किश्तों का भुगतान समय पर करता रहे । फिर भी उसने न तो किश्तों का भुगतान किया और न ही अपना वकील अंग्रेज रेजीडेन्ट के पास भेजा ।[6]

---

1 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 350, 1621 बस्ता 51, 205 बन्डल, 8 3 पृ० 7, 125

2 कोलोनी—अलवर 58 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है ।

3 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 746, 47, 148 बस्ता 107, 21 बन्डल 4, 5, 1 पृ० 1-4, 5-6, 26

(ब) गहलोत सुखवीरसिंह, राजस्थान के इतिहास का तिथि क्रम पृ० 90

4 राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली—फौरिन पोलिटिकल कन्सलटेशन्स 17-8-1840 फो० 23

5 वही, फा० 13, 16, 5, 1833

6 (अ) राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली, फौरिन पोलिटिकल कन्सलटेशन्स 17-7-1840 पृ०|23

इसलिए 16 मई 1833 को ब्रिटिश रजाडेन्ट ने उस पर बकाया किश्तो का भुगतान करने के लिए दवाव डाला लकिन बन्नेसिंह ने उसके आदेश पर कोई ध्यान नही दिया ।[1]

ब्रिटिश रजीडेन्ट क आदेश का पालन नही करने पर गवनर जनरल ने 16 मई 1833 के पत्र के द्वारा वलवन्तसिंह की बकाया किश्ता का भुगतान रेजीडेन्ट के माध्यम स करने के लिए बन्नेसिंह पर दवाव डाला और यह चतावनी दी गई कि यदि उसने किश्तो का भुगतान नही किया तो उसके विरद्ध कठार कार्यवाही की जायगी । इसलिए उसने 10 जून 1834 को उसकी सभी बकाया किश्तो का भुगतान कर दिया ।[2] फिर भी वह उसको समय पर किश्ता का भुगतान नही करता था इस लिए तिजारा के राजा बलवन्तसिंह ने 1 दिसम्बर, 1838 को गवनर जनरल से किश्तो के बजाय कठुम्बर और बिशनगढ का परगना बन्नेसिंह से दिलाने की माग की ।[3]

इस पर गवर्नर जनरल बन्नेसिंह को समय पर किश्त भुगतान करन के लिए आदेश दिये तथा परगने दिलाने स इन्कार कर दिया उसके पश्चात् वह उस नियमित रूप से प्रतिमाह किश्तो का भुगतान करता रहा ।[4]

अलवर और भरतपुर के बीच सीमा विवाद (19 मई 1833)—

इस समय भरतपुर और अलवर के बीच जीलालपुर और छुमरवाना गाँवा के प्रश्न को लेकर सीमा विवद हुआ जिसकी सूचना भरतपुर रजीडेन्ट ने अँग्रेज सरकार को दी । इस पर अँग्रेज सरकार न 1 जुलाई 1833 को ब्लैक को इस घटना की जाँच करने के लिए नियुक्त किया ।[5] ब्लैक ने अपनी जाँच रिपोट म अलवर को दोषी ठहराया । उसके अनुसार अलवर के घुडसवार और पैदल सिपाहियो के द्वारा भरतपुर क्षेत्र मे सैनिक कार्यवाही की गई थी । इसलिए अँग्रेज सरकार न बन्नेसिंह पर 8 हजार रुपया जुर्माना किया और इस राशि को ब्रिटिश रेजीडेन्ट अजमेर के पास जमा कराने के आदेश दिय गय ।[6] लेकिन उसने 13 सितम्बर, 1833 को एक पत्र के द्वारा अंग्रेज गवनर जनरल के निर्णय क विरुद्ध अपना असन्तोष प्रकट किया । अन्त म बन्नेसिंह को बाध्य होकर अंग्रेज गवनर जनरल के निर्णय को

---

1 वही, 16 5 1833 फा० 14

2 वही ।

3 वही, 17-8 1840 फा० 23

4 राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली, फोरिन पोलिटिकल कन्सलटेशन्स 3-4-1833 फा० 13, 44 ।

5 वही, 16-5-1833 पृ० 13-14 ।

6 वही, 17-10 1833 पृ० 16 ।

स्वीकार करना पड़ा और उसने 23 सितम्बर, 1833 को ब्रिटिश रेजीडेन्ट अजमेर के वहाँ 8 हजार रुपया जुर्माने के जमा करवा दिये।[1]

तोरावाटी की समस्या—

तोरावाटी के मीने अँग्रेज सरकार के आदेशों का पालन नहीं करते थे और वहाँ की फसल चुराकर ले जाते थे जिससे वहाँ का राजस्व जमा नहीं होता था इसलिए अँग्रेज सरकार ने उनकी डकैतियों को समाप्त करने के लिए तथा फसल पकने तक कुछ अंग्रेज सेना को वहाँ रखने का निश्चय किया।[2] इस पर अँग्रेज सरकार के आदेशानुसार राव राजा अलवर ने तोरावाटी में दो रिसाला घोड़ों की सैनिक सहायता भेजी जिसने तोरावटी में मीनों की डकैती को समाप्त कर वहाँ शान्ति व्यवस्था कायम की।[3]

बन्नेसिंह की लोहारू और फिरोजपुर परगने के प्रति नीति—

लासवाड़ी के युद्ध (1 नवम्बर, 1803) में बख्तावरसिंह ने अँग्रेज गवर्नर जनरल लेक की सहायता पहुँचाई थी इसलिए लेक ने 28 नवम्बर, 1803 को उसको 13 परगने उपहार स्वरूप दिए थे जिनमें से लोहारू भी एक था।[4]

इसी युद्ध में बख्तावरसिंह के वकील अहमद बख्श को उत्तम सेवा के बदले में अंग्रेज जनरल लेक ने उसको फिरोजपुर और बख्तावरसिंह ने लोहारू का नवाब बना दिया।[5] अलवर राज्य की तिजारा प्रान्त की वेश्या से अहमद बख्श खाँ के शम्सुद्दीन और इब्राहीम अली दो लड़के और उसकी विवाहिता पत्नी से अमीनुद्दीन और जियाउद्दीन अहमद थे।[6]

---

1 राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली फोरिन पोलिटिकल कन्सलटेशन्स 17 10-1833 फा० 16

2 वही, 6-1-1835 फा० 30।

3 वही, 6-4-1835 फा० 30।

4 (अ) राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, क्रमांक 373, 4 14 बस्ता 52, 62 बन्डल 2, 11 पृ० 15-16; 2।
   (ब) श्यामलदास—वीर विनोद, भाग 4 पृ० 1389।

5 (अ) मुरक्का ए-अलवर पृ० 22।
   (ब) एचीसन सी० यू० ट्रीटीज एंगेजमेंटस एन्ड सनदस भाग 3 पृ० 345।
   (स) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 413, 139 बस्ता 62, 19 बन्डल 105 पृ० 2, 10।

6 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 1591 बस्ता 196 बन्डल 4 पृ० 27।
   (ब) राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली, फोरिन पोलिटिकल कन्सलटेशन्स 5-10-1835 फा० 50।

शम्सुद्दीन अहमद बग्श अलवर राज्य के तिजारा प्रान्त की वेश्या स उत्पन्न हुआ था फिर भी बन्नेसिंह ने उसको फिरोजपुर और लोहारू कर सनद दे दी।[1] किन्तु सन् 1835 म दिल्ली क रजीडेन्ट सर फ्रेजर की हत्या मे शम्सुद्दीन के सम्मिलित होन के *कारण अग्रेज सरकार न उस मृत्यु दण्ड दे दिया*।[2] और उसके साम्राज्य पर अधिकार कर लिया[3] लकिन इसके वश वाले और सजातियो के अनुरोध पर लोहारू उन्हे इस कारण से लौटा दिया गया कि वह अलवर के राव राजा के द्वारा दिया हुआ था।[4]

शम्सुद्दीन की मृत्यु के पश्चात् उसके भाई अमीनुद्दीन खाँ ने लोहारू के परगने पर अधिकार कर लिया।[5] इसलिए बन्नेसिह न 5 अक्टूबर 1835 को अग्रेज सरकार से अलवर राज्य की सीमा सुरक्षा की दृष्टि स लोहारू न बजाय फिरोजपुर का परगना दिलाने की माँग की लेकिन अग्रेज सरकार न उसकी माग को अस्वीकार कर दिया।[6] गवर्नर जनरल ने बन्नेसिंह को लिखा कि यदि लोहारू के परगन की सनद

---

1 (अ) *रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ०* 25-26।

(ब) राष्ट्रीय अभि० बीकानेर क्रमाक 1590 बस्ता 196 बन्डल नई दिल्ली फोरिन पोलिटिकल कन्सलटेशन्स 5 10-1835 फा० 49।

2 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 1591 बस्ता 196 बन्डल 4 पृ० 26।

(ब) श्यामलदास न वीर विनोद के पृ० 1380 पर लिखा है कि शम्सुउद्दीन अहमद खाँ के द्वारा फ्रेजर की हत्या सन् 1857 म की गई थी। लेकिन यह कथन सही प्रतीत नही होता है क्योकि राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली के रेकार्ड फोरिन पोलिटिकल कन्सलटेशन्स 23 11-1835 फा० 16 के अनुसार फ्रेजर की हत्या 1835 ई० म की गई थी और उसके पश्चात् *शम्सुद्दीन को मृत्यु दन्ड दे दिया गया था* और उसके परगने फिरोजपुर को अग्रेज सरकार ने 1835 ई० मे ही छीन लिया था।

3 राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली फोरिन पोलिटिकल कन्सलटेशन्स 5-10-1835 फा० 49।

4 राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर क्रमाक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 25।

5 (अ) वही, क्रमाक 1591 बस्ता 196 बन्डल 4 पृ० 27।

(ब) राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली, फोरिन पोलिटिकल कन्सलटेशन्स 5 10-1835 फा० 49 50।

6 वही।

अहमद बख्श खां और उसके लड़के शम्सुद्दीन को ही दी गई थी तो उस लोहारू का परगना दिला दिया जावेगा और यदि इस परगने को अहमद बख्श खां और उसके परिवार को स्थानान्तरित किया हुआ होगा तो शम्सुद्दीन के छोटे भाइयों का इस परगने पर अधिकार उचित समझा जायेगा इसलिए बन्नेसिंह को उस सनद के प्रति जिसके द्वारा लोहारू का परगना अहमद बख्श खां और शम्सुद्दीन को दिया गया था उसकी प्रति भेजने को कहा गया।[1]

बन्नेसिंह ने दोनों[2] सनद की प्रतियां ब्रिटिश रेजीडेन्ट को 1 नवम्बर, 1835 को भेजी। ब्रिटिश रेजीडेन्ट जानवेस ने उसके द्वारा भेजी गई सनद की दोनों प्रतियों को अंग्रेज गवर्नर जनरल के पास भेज दी।[3] अंग्रेज गवर्नर जनरल ने सनद की शर्तों का अवलोकन करने के बाद लोहारू का परगना अमीनुद्दीन के अधिकार में दे दिया क्योंकि बन्नेसिंह लोहारू के परगनों की सनद शम्सुद्दीन और उसके परिवार वालों को दे चुका था और इस निर्णय से बन्नेसिंह को अवगत करा दिया गया।[4]

बन्नेसिंह ने अंग्रेज सरकार को फ्रांस की संयुक्त सेना के द्वारा रूस के विरुद्ध स्वस्टपाल पर पश्चिमी शक्तियों को भारी सफलता मिलने पर उनको बधाई पत्र भेजा।[5]

उच्च सरकारी पदों का वितरण—

बन्नेसिंह के उत्तराधिकारी संघर्ष में व्यस्त होने तथा अल्पव्यस्क होने से राज्य प्रबन्ध की ओर पूरा ध्यान नहीं दे सका था इसका परिणाम यह हुआ राज्य प्रबन्ध में अव्यवस्था फैलने लगी और पदाधिकारी पर किसी का नियन्त्रण न रहने से वे

---

1 वही पा० 51।

2 पहली सनद जिसके द्वारा बख्तावरसिंह ने लोहारू के परगने पर अहमदबख्श खाँ को अधिकार दिया था। दूसरी सनद जिसके द्वारा बन्नेसिंह ने अहमदबख्श खाँ को अलवर राज्य की तिजारा प्रान्त की वेश्या से उत्पन्न शम्सुद्दीन को लोहारू के परगने पर अधिकार दिया गया था।

3 राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली फोरिन पोलिटिकल कन्सलटेशन्स 23 11 1835 फा० 15।

4 (अ) रा० अभि० नई दिल्ली फोरिन पोलिटिकल कन्सलटेशन्स 23-11-1835 फा० 15 16 18।
   (ब) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 1590 1591 बस्ता 196 बण्डल 3, 4, पृ० 25, 27

5 राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली फोरिन पोलिटिकल कन्सलटेशन्स 9 5-1856 पा० 143

मनमाने ढग म कार्य करने लग गये थ। इसी समय मल्ला जो कि राज्य कार्य मे वहुत हस्तक्षेप करता था, बन्नेसिह ने उसको पद स हटा दिया।[1] राज्य की सोचनीय स्थिति को ध्यान मे रखत हुए सन् 1838 मे बन्नेसिह ने दिल्ली के कमिश्नर तथा रेजीडेन्ट के द्वारा प्रस्तावित मुन्शी अम्मुगान को दिल्ली से बुलाकर अपने यहाँ दीवान के पद पर नियुक्त किया जिसको 700 रुपया प्रतिमाह वेतन देना स्वीकार कर लिया और इस्फिन्दयार बेग को नायब दीवान के पद पर नियुक्त किया तथा उसको 300 रुपया प्रतिमाह देना स्वीकार कर लिया।[2]

नये दीवान के कार्य

1 राज्य मे फारसी भाषा का प्रचार—

ज्यो ही राज्य म बन्नेसिह ने नये दीवाना को नियुक्त किया उसके पश्चात् राज्य मे हिन्दी के बजाय फारसी भाषा का इतना अधिक प्रयोग किया जाने लगा कि हिन्दुओ की कुप्रथा सती प्रथा के उन्मूलन के लिए जो विज्ञापन निकाला गया था वह भी फारसी मे प्रकाशित किया गया था।[3]

2 हिजरी का प्रयोग करना—

बन्नेसिह के समय मे सरकारी कार्यों म विक्रम सवत् का प्रयोग किया जाता था लेकिन नये दीवान ने विक्रमी सवत् के बजाय हिजरी सन् का प्रयोग करना शुरू कर दिया।[4]

3 न्याय व्यवस्था—

बन्नेसिह द्वारा नय दीवान की नियुक्ति स पहले राज्य क गाँवा के झगडा का निपटारा मुखिया और विलेदार के द्वारा किया जाता था। लिखित दस्तावज का प्रचलन बहुत कम था। स्टाम्प टिकिट की कोई सीमा नही थी। लेकिन नय दीवानो

---

1 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 746, 747 बस्ता 107 बन्डल 4-5 पृ० 1-4 5-8
(ब) गहलोत जगदीशसिह जयपुर व अलवर राज्या का इतिहास भाग 3 पृ० 272

2 (अ) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 746-47 बस्ता 107, बन्डल 4-5, पृ० 1-4, 5-8
(ब) श्यामलदास, वीर विनोद भाग 4 पृ० 1384।

3 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमाक 144, 350 बस्ता 10 51 बन्डल 10, 8 पृ० 32, 7

4 वही, क्रमाक 249 बस्ता 30, बन्डल 19 पृ० 9।

न परगनों मे दीवानी तथा फौजदारी न्यायालय खोल दिये ताकि जनता को पूरा न्याय मिल सके।[1]

4 राजस्व व्यवस्था मे सुधार—

अब तक किसान लोग अपनी उपज का आधा भाग राजस्व करके रूप म राजकोष म जमा कराते थे। नये दीवान अम्मुजान न जितना भी राज्य सरकार का राजस्व कर बकाया था उस भी वसूल किया और जितना ऋण लोगों म दिया हुआ था जो बहुत समय स राज्य कोष मे जमा नही हुआ था वो भी वसूल कर राज्य कोष म जमा करवाया। उसने अपनी तरफ स परगनों मे तहसीलदार नियुक्त कर दिय। 1838 म किसानो को भूमि काश्त करने क लिए निश्चित समय के लिये दी जाती थी और लगान की दर भी निर्धारित कर दी गई जिसका परिणाम यह हुआ कि इन नये सुधारो के फलस्वरूप राज्य की आय मे बहुत वृद्धि हुई।[2]

1842 मे बन्नेसिंह के समय मे अलवर राज्य म पहला आधुनिक स्कूल खोला गया।[3] बन्नेसिंह के नय दीवान अम्मुजान व नायब दीवान इस्फिन्दयार बेग दोनो ने मिलकर काफी अच्छे सुधार किये जिसस राज्य मे शान्ति व्यवस्था कायम हुई और प्रशासन सुदृढ हुआ लेकिन धीरे धीरे दानो के सम्बन्ध बिगडते गये। अम्मुजान ने राज्य के माल मे चोरी करना और रिश्वत लेना प्रारम्भ कर दिया। उसने लगभग 20 लाख रुपया का गबन कर लिया।[4]

इसके लिए नायब दीवान इस्फिन्दयार बेग जो बहुत ईमानदार था उसन अम्मुजान को रिश्वत लेने और चोरी करने के लिए मना कर दिया था और कई तरह स उस समझाने की कोशिश की थी लेकिन अम्मुजान इस्फिन्दयार बेग की बातें सुनकर बहुत नाराज हुआ इसलिए उसके इस्फिन्दयार बेग को उसके पद स हटा दिया उसक स्थान पर फज्जुल्लाह खाँ जो अम्मुजान का भाई था उस उसने नायब दीवान क पद पर नियुक्त कर दिया और सारा राज्य का कार्यभार अपने भाई फज्जुल्लाह खाँ को सौप कर स्वय बन्नेसिंह के पास रहना शुरू कर दिया।[5]

---

1 (अ) गहलोत जगदीशसिंह जयपुर व अलवर राज्यो का इतिहास भाग 3 पृ० 272।
  (ब) अरावली पत्रिका अगस्त—अक्टूबर, 1945 अक पृ० 7
  (स) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 144, 350 बस्ता 19 51 बन्डल 10, 8 पृ० 32-7

2 (अ) श्यामलदास वीर विनोद, भाग 4 पृ० 1384।
  (ब) रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 350 बस्ता 51, बन्डल 8 पृ० 7

3 वही।

4 वही, क्रमाक 746 747 251 बस्ता 107 30 बन्डल 4 5, 21 पृ० 1, 4 5 8, 13।

5 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 746, 47 बस्ता 107 बन्डल 4-5, पृ० 1-4, 5 8।

कुछ दिनो पश्चात् अम्मुजान ने अपने तीसरे भाई अमुल्लाह खाँ को अलवर राज्य मे सिपह सालारी के पद पर नियुक्त किया। यद्यपि यह सत्य है कि ये तीनों भाई राजनीतिक कार्यों तथा प्रशासनिक प्रबन्ध म बहुत कुशल तथा दक्ष थे लेकिन रिश्वतखोर अधिक थे।[1] इस समय कुछ योग्य तथा कुशल पदाधिकारी भी थे जिनम गुलामअली खाँ सलीमुद्दीन मोहम्मद अली सुल्तानसिंह बहादुरसिंह व गोविन्दसिंह आदि के नाम उल्लेखनीय है जिन्होने कि राज्य म अच्छा शासन प्रबन्ध बनाये रखने और राज्य की आय मे वृद्धि की।[2]

इस्फिन्दयार बेग को अम्मुजान न नायब दीवान पद स हटाकर अपन भाई का नायब दीवान बना दिया था इसलिए वह अम्मुजान के साथ ऊपर से मित्रता प्रदर्शित करता था और आन्तरिक रूप स ऐसे अवसर की तलाश मे था जबकि वह अम्मुजान से बदला ले सके। 1851 मे बहरोड[3] के तहसीलदार रामलाल के द्वारा इस्फिन्दयार बेग ने अम्मुजान के रिश्वत लेने तथा गबन करने की बातें बन्नेसिंह के पास पहुँचा दी थी। जब जाँच करने पर बन्नेसिह न अम्मुजान को अपराधी पाया तब उन्होंने उस तथा उसके दो भाईयो को सन् 1851 म कैद कर लिया जब उन्होंने सात लाख रूपया दण्ड के रूप मे दिया। तब उन्ह कैद स रिहा कर दिया गया।[4]

बन्नेसिह ने अम्मुजान को दीवान के पद स हटाकर उसके स्थान पर इस्फिन्दयारबेग को दीवान पद पर नियुक्त किया जिसने लगभग दो वर्ष तक दीवान के पद पर कार्य किया। वह बहुत ईमानदार तो था लेकिन एक अच्छा शासक प्रबन्धक नही था इसलिए वह अपने अधीन पदाधिकारियो पर नियन्त्रण नही रख सका। जब राज्य प्रबन्ध म अव्यवस्था फैलने लगी तब सन् 1856 म बन्नेसिह ने अम्मुजान को पुन दीवान के पद पर नियुक्त कर दिया और बाल मुकुन्द को भी दीवान के पद पद नियुक्त किया। आधे आधे इलाके दोना क अधिकार म रखे गए।[5]

इस समय मम्मन नामक एक चाबुक सवार का प्रभाव बन्नेसिह पर बहुत अधिक था उसने प्रभाव का फायदा उठाने के लिए व्यापरियो और काश्तकारो पर बहुत अत्याचार किए इतना ही नही वह मिर्जा इस्फिन्दयार बेग को अपना कट्टर शत्रु समझता था।[6]

---

1 वही, क्रमाक 350 144 बस्ता 51, 19 बन्डल 8 10 पृ० 32।
2 (अ) वही, क्रमाक 350 148 बस्ता 51, 21 बन्डल 8 1 पृ० 7, 29।
(ब) श्यामलदास वीर विनोद भाग 4 पृ० 1385।
3 बहराड—अलवर के पश्चिमोत्तर म 22 मील की दूरी पर स्थित है।
4 रा० रा० अभि० बीकानेर क्रमाक 746, 47 बस्ता 107 बन्डल 4 5, 5-8।
5 वही, क्रमाक 350 बस्ता 51 बन्डल 8 पृ० 7।
6 वही क्रमाक 144 बस्ता 19 बन्डल 10 पृ० 33।

सन् 1856 तक इसी प्रकार से राज्य का शासन प्रबन्ध चलता रहा। बन्नेसिंह पिछले पांच वर्षों से लकवे की बीमारी से पीडित था इसलिए वह शासन प्रबन्ध की ओर ज्यादा ध्यान नहीं दे पा रहा था। उस समय मिर्जा तथा दीवान लालमुकुन्द राज्य का शासन प्रबन्ध चला रहे थे अम्मुजान एक बहुत बड़े दल का नेता बन चुका था जिसने बन्नेसिंह की बीमारी में अपना प्रभाव बढ़ाना प्रारम्भ किया था और धीरे-धीरे वह राज्य का वास्तविक कर्ता धर्ता बन गया था। सारी शासन शक्ति अपने हाथ में केन्द्रित करने का प्रयास किया।[1]

1857 का विप्लव—और बन्नेसिंह की नीति—

जिस समय सन् 1857 मे भारत वर्ष में अंग्रेजो को भारत से बाहर निकालने के लिए उनके विरुद्ध विद्रोह हुआ था उस समय उत्तरी भारत वर्ष में अंग्रेजो की स्थिति निरन्तर बिगड़ती जा रही थी यद्यपि उस समय बन्नेसिंह सख्त बीमार था फिर भी उसने इस विद्रोह को दबाने में अंग्रेज सरकार को बहुत अच्छी सहायता पहुँचाई थी।[2]

सन् 1857 के विद्रोह के समय बन्नेसिंह ने चिमनसिंह के नेतृत्व में 800 पैदल सैनिक 400 घुड़सवार सैनिक तथा 4 तोपों को आगरा में घिरी हुई अंग्रेज सेना की सहायता के लिए अलवर से रवाना किया। 11 जुलाई 1857 को अछनेरा[3] गाँव मे इस अलवर राज्य की सेना पर नीमच तथा नसीराबाद के विद्रोही सैनिको ने अचानक आक्रमण कर दिया।[4]

चिमनसिंह की अंग्रेजो के प्रति स्वामिभक्ति नही थी और विद्रोही सेना मे बहुत से ऐसे सैनिक थे जो चिम्मनलाल के सम्बन्धी थे। इसका परिणाम यह हुआ कि अलवर राज्य की सेना ने इस युद्ध में अपनी पूरी बहादुरी का परिचय नहीं दिया। इस युद्ध मे अलवर के 55 सैनिक मारे गये।[5] जिसमें से 10 बड़े पदाधिकारी थे। बन्नेसिंह की सेना

1 (अ) श्यामलदास, वीर विनोद भाग 4 पृ० 1385।
(ब) रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 350 बस्ता 51 बन्डल 8 पृ० 7।

2 वही, पृ० 8।

3 अछनेरा गाव भरतपुर और आगरा के बीच वाली सड़क पर है।

4 रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 350, बस्ता 51 बन्डल 6 पृ० 8।

5 (अ) वही।
(ब) गहलोत जगदीशसिंह ने जयपुर व अलवर राज्यों का इतिहास भाग 3 पृ० 273 पर यह लिखा गलत है कि इस युद्ध में अलवर के 55 हजार सैनिक मारे गये थे। जब अलवर महाराजा ने 800 पैदल तथा 400 घुड़सवार ही अंग्रेजों की सहायता के लिए भेजे थे तो 55 हजार सैनिकों के मरने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। इसलिए मैं जगदीशसिंह गहलोत के कथन से सहमत नहीं हूँ।

मैदान छोड़कर भाग गई। बन्नेसिंह को यह सूचना प्राप्त हुई उस समय वह मृत्यु शैय्या पर अन्तिम घड़ियाँ गिन रहा था। तब भी बन्नेसिंह ने यह आदेश जारी किया कि अंग्रेजों को एक लाख रुपये की सहायता अविलम्ब भेज दी जावे।[1]

जब वह बीमारी की हालात में चल रहा था तब मैदा चेला ने मिर्जा इस्फिन्दयार बेग के बहकाने पर सम्मान नायब सवार गणेश चेला तथा बलदेव आदि तीन बेकसूर व्यक्तियों को मौत के घाट उतरवा दिया और उन पर झूँठा आरोप लगा दिया गया था कि महाराव राजा बन्नेसिंह को मारना चाहते थे और बन्नेसिंह के ऊपर कुछ जादू करवा दिया था। इतना ही नहीं मैदा ने मुसलमानों को कष्ट पहुँचाया जिसकी सजा उसे अछनेरा गाँव के युद्ध में मिली और उसको बड़ी बेहरमी से मारा गया। मिर्जा इस्फिन्दयार बेग को भी अपने कर्मों का फल भुगतना पड़ा और कुछ समय पश्चात् उसे अलवर राज्य से बाहर निकाल दिया गया।[2]

बन्नेसिंह की मृत्यु—(11 जुलाई, 1857)—

बन्नेसिंह को लकवे की बीमारी के कारण 11 जुलाई 1857 को मृत्यु हो गई। ब्रिटिश रेजीडेन्ट ने अंग्रेज गवर्नर जनरल को 31 जुलाई 1857 को पत्र के *द्वारा बन्नेसिंह की मृत्यु के बारे में सूचित किया।*[3] *सम्भवतः अंग्रेजों के एक लाख* रुपये की सहायता देने का उसने यह अन्तिम आदेश दिया था यद्यपि बन्नेसिंह ने अंग्रेजों की बहुत सहायता की थी फिर भी उसके अधीन गुजर बाहुल्य गाँवों में विद्रोह निरन्तर आग बढ़ता ही गया और जिसके कारण राज्य सरकार को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।[4]

---

1. *रा० रा० अभि० बीकानेर, क्रमांक 350, बस्ता 5 । बन्डल 6 पृ० 8 ।*
2. (अ) वही ।
   (ब) श्यामलदास, वीर विनोद भाग 4 पृ० 1386 ।
3. (अ) राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली, फोरिन पोलिटिकल कन्सलटेशन्स 25-9-1857 फा० 147-49 ।
   (ब) गहलोत जगदीशसिंह, जयपुर व अलवर राज्यों का इतिहास भाग 3 पृ० 273 ।
   (स) श्यामलदास ने वीर विनोद के भाग 4 पृ० 1386 पर बन्नेसिंह की मृत्यु 15 जुलाई, 1847 एवं मायाराम ने राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर अलवर के पृ० 68 पर बन्नेसिंह की मृत्यु अगस्त, 1857 में होना लिखा है जो सही प्रतीत नहीं होता है क्योंकि ब्रिटिश रेजीडेन्ट फोरिन पोलिटिकल कन्सलटेशन्स 25-9-1857 में बन्नेसिंह की मृत्यु 11 जुलाई, 1857 दी है जो ज्यादा सही प्रतीत होती है ।
4. (अ) श्यामलदास, वीर विनोद भाग 4 पृ० 1386 ।
   (ब) गहलोत जगदीशसिंह, जयपुर व अलवर राज्यों का इतिहास भाग 3 पृ० 273 ।
   (स) खड़गावत नाथूराम, राजस्थान रोल इन द स्टगल ऑफ 1857 पृ० 73 ।

7

उपसंहार

अलवर राज्य का संस्थापक राव राजा प्रतापसिंह 1756 ई० में जब 16 वर्ष की आयु में माचेडी का जागीरदार बना तब उसके अधिकार में केवल ढाई गाँव की जागीर ही थी। उत्तरी भारत की राजनैतिक व्यवस्था में उसका कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं था क्योंकि वह जयपुर का सामान्य जागीरदार मात्र ही था। परन्तु अपने अथक प्रयास और अदम्य कूटनीति के कारण उसने कुछ ही वर्षों में एक नये स्वतन्त्र राज्य (अलवर) की स्थापना की, जिसका 1948 में आधुनिक राजस्थान में विलय हो गया।

प्रतापसिंह में राजनैतिक महत्वाकांक्षा कूट कूटकर भरी हुई थी। उसकी पूर्ति के लिये उसने कूटनीतिज्ञता का पूरा उपयोग किया। प्रतापसिंह ने इस स्थिति का पूर्ण लाभ उठाया। प्रारम्भ में महाराजा को सहयोग दिया और अपनी सेवाएँ पूर्णरूप से अर्पित की। रणथम्भौर पर मराठों के आक्रमण के समय जयपुर राज्य को सैनिक सहायता देकर उसने जयपुर नरेश के हृदय में अपना स्थान बना लिया। इसी प्रकार उनियारे के ठाकुर का विद्रोही होकर मराठा से मिल जाने पर भी उसने चतुराई से ठाकुर को पुनः जयपुर की अधीनता स्वीकार करने को विवश किया। इस प्रकार धीरे-धीरे उसने जयपुर के दरबार में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया। किन्तु दरबारी षड्यन्त्रों के कारण उसको जयपुर छोड़कर जाट राजा जवाहरसिंह के यहाँ शरण लेनी पड़ी और माचेड़ी की जागीर से हाथ धोना पड़ा। यह प्रतापसिंह के लिए असहनीय था। वह निरन्तर एक ऐसे अवसर की तलाश में रहा जब वह महाराजा माधवसिंह को प्रसन्न कर अपनी खोई हुई जागीर पुनः प्राप्त कर सके। यह अवसर उसे 1767 ई० में मावण्डा के युद्ध में प्राप्त हुआ।

1768 ई० में जयपुर के शासक पृथ्वीसिंह की अल्पव्यस्ता का लाभ उठाकर प्रतापसिंह ने अपनी राजनैतिक गतिविधियों में और वृद्धि कर ली। अब वह अपने लिए एक स्वतन्त्र राज्य की कल्पना करने लगा। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने मुगल सेनापति मिर्जा नजफखाँ का सहयोग प्राप्त करने का निश्चय किया। 1770 ई० नजफ खाँ ने जब भरतपुर पर आक्रमण किया तब प्रतापसिंह ने उसे सैनिक सहायता भेजी और नजफ खाँ की मित्रता प्राप्त की। नजफ खाँ से अच्छे

सम्बन्धों का लाभ उठाकर उसने जयपुर एवं भरतपुर की सीमा के कई स्थानों पर अधिकार कर लिया। जयपुर नरेश आन्तरिक कठिनाइयों के कारण उसको दण्ड देने में असमर्थ था अतः उसने प्रतापसिंह को दरबार में पूर्ववत् सम्मान बनाये रखा।

1772 ई. तक पृथ्वीसिंह वयस्क हो चुका था तथा उसने प्रशासन पर पूर्ण अधिकार स्थापित कर लिया था। अब वह प्रतापसिंह को दण्ड देने की स्थिति में था। इसलिए 1772 ई० में जयपुर की सेना ने उसकी जागीर पर आक्रमण किया किन्तु उसे पराजय का सामना करना पड़ा। इससे प्रतापसिंह का राजनैतिक प्रभाव और बढ़ गया। अब उसमें अपने लिए एक स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने की लालसा और भी तीव्र हो गई।

परन्तु प्रतापसिंह यह जानता था कि वह इतना शक्तिशाली नहीं था कि अपनी शक्ति के द्वारा जयपुर नरेश का सामना कर सके। अतः उसने मुगल सेनापति नजफ खाँ की सहायता फिर प्राप्त करने की कोशिश की। इसका अवसर उसे 1774 ई० में मिला जब नजफ खाँ ने आगरा पर आक्रमण किया जिस पर जाटों ने अपना अधिकार कर रखा था। प्रतापसिंह ने इस कार्य में नजफ खाँ की सहायता दी जिससे प्रसन्न होकर मुगल सेनापति ने उसकी सेवाओं के उपलक्ष्य में मुगल बादशाह से राव राजा बहादुर की उपाधि एवं 5 हजार का मनसब दिलवाया। यही नहीं उसने नजफ खाँ के माध्यम से उसकी माचेड़ी की जागीर भी जयपुर से अलग स्वतन्त्र घोषित करवा दी।

मुगल साम्राज्य द्वारा यह सम्मान प्राप्त होने पर प्रतापसिंह का बहुत उत्साह हुआ और उसने अब अपनी जागीर का विस्तार कर उसे एक स्वतन्त्र राज्य में परिवर्तित करने का प्रयत्न किया। सबसे पहले उसका ध्यान अलवर के दुर्ग की ओर गया जो भरतपुर के अधीन था। 25 दिसम्बर 1775 ई० को उसने अलवर दुर्ग पर अपना अधिकार कर लिया और नये राज्य की स्थापना कर अलवर को अपनी राजधानी घोषित किया। शीघ्र ही उसने जयपुर के कई प्रदेशों पर अधिकार कर लिया। परन्तु कूटनीतिज्ञ की नीति पर चलते हुए उसने स्पष्ट रूप से जयपुर का कोई विरोध नहीं किया।

17 अप्रैल 1778 ई० में पृथ्वीसिंह की मृत्यु के पश्चात् उसका भाई प्रतापसिंह गद्दी पर बैठा। वह भी अल्पवयस्क था जिसके कारण प्रशासन में अव्यवस्था फैलने लगी। प्रतापसिंह ने फिर जयपुर की राजनीति में हस्तक्षेप करना आरम्भ कर दिया और वह अपने समर्थक खुशालीराम बोहरा को प्रधानमन्त्री बनाने में सफलता प्राप्त की।

नजफ खाँ प्रतापसिंह के बढ़ते हुए प्रभाव से अब शंकित होने लगा। उसे भय हुआ कि कहीं मुगल इलाकों पर प्रतापसिंह अधिकार करने की चेष्टा न करे। इस कारण उसने प्रतापसिंह की शक्ति का अधिक बढ़ने से रोकने का प्रयत्न किया। शीघ्र ही

तीनों के सम्बन्ध कटु होने लगे और जब नजफ खां ने अलवर के राव राजा से जयपुर के विरुद्ध सहायता माँगी और जब प्रतापसिंह ने जयपुर के विरुद्ध हथियार उठाने से इन्कार कर दिया तो नजफ खाँ ने 1778 ई० में उसे लक्ष्मणगढ के युद्ध में परास्त किया। फिर भी प्रतापसिंह ने खुशालीराम हल्दिया के द्वारा नजफ खाँ से मित्रता करने का प्रयत्न किया परन्तु इसमें वह असफल रहा।

जयपुर नरेश भी प्रतापसिंह के षडयन्त्रों से असन्तुष्ट थे। अवसर पाकर उन्होंने भी राजगढ पर आक्रमण कर दिया। परन्तु प्रतापसिंह ने नव उदित मराठा शक्ति का समर्थन प्राप्त कर लिया था उस समय महादजी सिंधिया मुगल सम्राट मुगल सम्राट का वकील-ए-मुतलक बन चुका था। प्रतापसिंह ने महादजी से मित्रता करली। अतः लालसोट और पाटन के युद्ध में उसने खुले रूप से जयपुर के विरुद्ध महादजी को सहायता दी। मराठाओं की सहायता से मुगल दरबार में उसने अपना अच्छा प्रभाव स्थापित कर लिया। अब उसके द्वारा स्थापित अलवर राज्य को पड़ौस के किसी भी राज्य से संकट का भय नहीं था। 1791 ई० में जब प्रतापसिंह की मृत्यु हुई, तब वह अपने प्रभाव के सर्वोच्च शिखर पर था। निःसन्देह अपनी चतुराई एवं राजनैतिक योग्यता के द्वारा ही ऐसे राजनैतिक संकट के वातावरण में जब राजपूत, मुगल और जाट शक्तियों द्वारा वह तीनों तरफ से घिरा हुआ था तब वह अलवर के स्वतन्त्र राज्य की स्थापना कर सका।

राव राजा प्रतापसिंह की मृत्यु के पश्चात् उसके दत्तक पुत्र बख्तावरसिंह में प्रतापसिंह के समान कूटनीतिज्ञता एवं दूरदर्शिता नहीं थी। प्रतापसिंह यदि एक से शत्रुता करता था तब उससे कहीं अधिक शक्तिशाली मित्र भी पहले से ही बनाकर रखता था, जिससे उसके हितों की रक्षा सदैव होती रहे। प्रतापसिंह ने मराठों की मित्रता को महत्व दिया था किन्तु उसके विपरीत बख्तावरसिंह ने आरम्भ से ही सभी को अपना शत्रु बना लिया। बख्तावरसिंह का असन्तुष्ट दीवान राम सेवक जब मराठों से मिल गया तब बख्तावरसिंह ने उसकी हत्या करदी। जिससे मराठे बख्तावरसिंह से नाराज हो गये। परिणामस्वरूप मराठा सेनापति तुकोजी होल्कर ने 1792 ई० में जयपुर महाराजा को अलवर के कुछ परगने छीनने में मदद की। मराठों की सहायता के अभाव में जयपुर नरेश ने एक दफा बख्तावरसिंह को बन्दी तक बना लिया।

इसी प्रकार भरतपुर से कुछ परगनों पर बख्तावरसिंह का मतभेद हो गया। अलवर नरेश की जाट विरोधी नीति गलत थी क्योंकि वह उनसे मित्रता का उपयोग मराठों एवं जयपुर नरेश के विरुद्ध कर सकता था। परन्तु बख्तावरसिंह इस मित्रता के महत्व को नहीं समझ पाया। इस कारण जयपुर, भरतपुर एवं मराठे उसके विरोधी हो गए। बख्तावरसिंह ने इस स्थिति में सुधार लाने के लिए मराठों से पुन

अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया। परन्तु शीघ्र ही उसने अपनी नीति बदल दी।

1803 मे जब अंग्रेज मराठा युद्ध चल रहा था, तब उसने मराठों के विरुद्ध अंग्रेजो को शक्तिशाली जानकर उन्ह ही अपना सहयोग दिया। लासवाडी के युद्ध मे उसने मराठो की गुप्त सूचनाएँ अंग्रेज जनरल लेक तक पहुँचाई। यही नही उसने सैनिक सहायता एव खाद्य सामग्री भी अंग्रेजो को उपलब्ध करवायी। जिसस युद्ध का परिणाम अंग्रेजो के पक्ष मे रहा। इससे प्रसन्न होकर अंग्रेजो ने राव राजा के साथ 1803 ई० मे एक सन्धि करली जिसके फलस्वरूप रावराजा बख्तावरसिंह को अंग्रेजो की सरक्षता प्राप्त हो गई। अब उस विदेशी शक्तियो स कोई भय नही रहा। परन्तु साथ ही उसकी स्वतन्त्रता भी हमेशा के लिए समाप्त हो गई।

कृष्णा कुमारी के विवाद म बख्तावरसिंह ने मराठो के भय से मुक्त होकर राजस्थान की राजनीति मे भाग लेने का प्रयत्न किया। अंग्रेज सरकार ने कुछ समय तक तो बख्तावरसिंह की गतिविधियो का विरोध नही किया परन्तु फिर उस पर अकुश लगाना शुरू कर दिया, जिसके कारण बख्तावरसिंह एक अर्द्ध स्वतत्र शासक ही रह गया। अब उस प्रत्येक कार्य अँग्रेजो की इच्छानुरूप ही करना पडा।

1811 मे उसने जयपुर राज्य के आन्तरिक मामलो मे हस्तक्षेप करने का प्रयत्न किया तब अंग्रेज सरकार ने उस एसा करन से रोका। इतना ही नही अँग्रेजो न इस दबाकर एक और सन्धि की जिसके तहत अब वह अंग्रेज सरकार की बिना पूर्व स्वीकृत के किसी भी राज्य स समझौता अथवा युद्ध नही कर सकता था। उस पर अंग्रेजो का अकुश और बढ गया। जब उसका पिता प्रतापसिंह अपनी नीति निर्धारित करन म स्वतन्त्र था तब बख्तावरसिंह ने अंग्रेजो के साथ 1811 की सन्धि करके अपनी स्वतन्त्रता खो दी थी।

बख्तावरसिंह स्वय के कोई सन्तान नही थी अत 1815 मे अपनी मृत्यु स पूर्व उसन अपने भतीजे बन्नेसिंह को गोद लेने का विचार किया था किन्तु उसकी अचानक मृत्यु हो जाने से गोद लेने के रीति रिवाजो की रस्म पूरी नही हो सकी। इस कारण गद्दी के लिए बन्नेसिंह एव पासवान के पुत्र बलवन्तसिंह मे सघर्ष आरम्भ हो गया। प्राज्य मे इस समस्या पर दो दल बन गए थे। इस स्थिति का लाभ उठाकर अंग्रेज सरकार ने फूट डालो और राज्य करो" की नीति अपनाई और अलवर राज्य मे अधिकाधिक हस्तक्षेप करना शुरू किया।

कुछ समय तक उत्तराधिकार का यह सघर्ष चलता रहा परन्तु अन्त मे बलवन्तसिंह के पक्ष ने आत्मसमर्पण कर दिया। बलवन्तसिंह भी पकडा गया तथा उसे दो वर्ष तक जेल मे रखा गया। दीवान अहमदबख्श के हस्तक्षेप पर अंग्रेज सरकार ने बन्नेसिंह से समझौते की दृष्टि से बलवन्तसिंह को 15 हजार रुपय की वार्षिक जागीर देने हेतु कहा। लेकिन बन्नेसिंह ने उनकी उक्त सलाह मानने से

इन्कार कर दिया। परन्तु अंग्रेज सरकार अब शक्तिशाली हो गई थी। और उसने स्पष्ट होकर बलवन्तसिंह को आधा राज्य देने पर दबाव डाला। अवज्ञा की स्थिति में राज्य नहीं देने पर सेना भेजने की धमकी भी दी गई। विवश होकर बन्नेसिंह ने तिजारा, टपूकड़ा एवं रताय के परगने बलवन्तसिंह को दे दिए और किशनगढ़ एवं कठुम्बर के परगनों के बदले 16,000 रुपया प्रतिमाह भत्ते के रूप में देना स्वीकार किया। अंग्रेजों की नीति में बन्नेसिंह का रुप उनके प्रति कठोर होता गया। उसने अहमदबख्श खाँ को इस परिस्थिति के लिए उत्तरदायी ठहराया तथा उसकी हत्या की योजना बनाने वालों को अंग्रेजों की इच्छा के विपरीत पकड़ने के बजाय और अधिक पदोन्नतियाँ दीं। यही नहीं वायदे के विपरीत उसने बलवन्तसिंह को किश्तों का रुपया देना भी बन्द कर दिया। बाद में अंग्रेजों के अत्यधिक दबाव पर ही किश्तों का भुगतान किया गया।

अंग्रेजों के इस हस्तक्षेप से परेशान होकर बन्नेसिंह ने उनसे अपने सम्बन्ध विच्छेद करने का प्रयत्न किया तथा एक बार फिर जयपुर महाराजा को अपना स्वामी बनाने का निश्चय किया। परन्तु अब वह अंग्रेजों के शिकन्जे में इतना अधिक कस गया था कि अपनी इस योजना को मूर्त रूप नहीं दे सका।

अंग्रेज सरकार भी अब उसके विरुद्ध कार्यवाही करने का अवसर ढूंढने लगी। ऐसा अवसर उन्हें शीघ्र ही प्राप्त हो गया जबकि जीलालपुर एवं छूमरवाला गावों के प्रश्न को लेकर 1833 ई० में अलवर एवं भरतपुर में सीमा विवाद आरम्भ हुआ। इस झगड़े का लाभ उठाकर अंग्रेज सरकार ने अपने विश्वासपात्र अम्मुजान नामक व्यक्ति को अलवर का नियुक्त करा दिया। अम्मुजान की नियुक्ति के साथ अलवर के आन्तरिक मामलों में अंग्रेज सरकार का हस्तक्षेप पूर्ण रूप से होने लगा। 1857 ई० के विप्लव में बन्नेसिंह ने अंग्रेजों को सैनिक सहायता भेजी थी। जिसके पीछे उसका उद्देश्य अंग्रेजों से पूर्व में बिगड़े हुए सम्बन्धों में सुधार करना था। वास्तव में बन्नेसिंह की नीति सदैव ही अंग्रेजों के प्रति अस्थिर रही कभी वह उनका समर्थन करता था तो कभी विरोध बन्नेसिंह की मृत्यु के पश्चात् शिवदानसिंह अलवर राज्य की गद्दी पर आसीन हुआ।

अलवर के 1775 से 1857 के सम्पूर्ण इतिहास पर एक विहंगम दृष्टि डालने पर यह स्पष्ट होता है कि प्रतापसिंह के अथक परिश्रम से ही अलवर राज्य का निर्माण हुआ था। जिसको बख्तावरसिंह और बन्नेसिंह ने बहुत कठिनाईयों के बावजूद भी सुरक्षित बनाये रखा।

———

परिशिष्ट "ए"

राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर, क्रमांक 1621 बस्ता 285 बण्डल 3 पृ० 122 (अलवर) रेकार्ड

महाराव राजा बख्तावरसिंह और अंग्रेज गवर्नर जनरल वेलेजली के बीच मित्रतापूर्ण सन्धि—

शराईत अहमदनामह् जो हिज एक्सेलेन्सी जनरल जिलरार्ड लेक माहिब सिपहसालार हिन्द फौज अग्रेजो के मुताबिक दिये हुए इख्तियारात हिज एक्सलेन्सी दि मोस्ट नोबल मार्किस वेलेजली गर्वनर जनरल बहादुर और महाराजा सवाई बख्तावरसिंह बहादुर के दर्मियान करार पाई।

शर्त पहली—

हमेशा की दोस्ती जानरेलल अंग्रेजी इस्ट इन्डिया कम्पनी की और महाराव राजा सवाई बख्तावरसिंह बहादुर और उनके वारिसो व जानशीनो के दर्मियान पाई।

शर्त दूसरी—

आनरेबल कम्पनी के दोस्त व दुश्मन महराव राजा के दोस्त व दुश्मन ममझे जायेंगे और महाराव राजा के दोस्त व दुश्मन आनरेबल कम्पनी के दोस्त व दुश्मन समझे जायेंगे।

शर्त तीसरी—

आनरेबल कम्पनी महराव राजा के मुल्क म दख्ल न देगी और खिराज तलव न करेगी।

शर्त चौथी—

उस सूरत मे जबकि कोई दुश्मन हिस्दुस्तान मे आनरेबल कम्पनी या उसके दोस्तो के इलाके पर हमला इरादह करेगा तो महाराव राजा वायदा करते हैं कि वह अपनी तमाम फौज से उनकी मदद देंगे और आप भी कोशिश दुश्मन के निकाल देने मे करेंगे। और किमी तरह की कमी दोस्ती और मुहब्बत मे नही करेंगे।

शर्त पाँचवी—

जो कि इस अहदनामह् की दूसरी शर्त से ऐसी दोस्ती करार पाई है कि उससे आनरेबल कम्पनी और गैर मुल्क वाले दुश्मन के खिलाफ महाराव राजा के

मुल्क की जिम्मेदारी होती है तो महाराव राजा वायदा करते हैं कि अगर दर्मियान उनके और किसी दूसरे रईस को कोई तकरार की सूरत पैदा होगी तो वह अब्वल तकरार की वजह को गवर्नमेन्ट कम्पनी से रूजू करेंगे इस नियत से कि गवर्नमेंट आसानी से उसका फैसला करदे, अगर किसी दूसरे फरीक की जिद्द से फैसले सहूलियत के साथ न हों सके तो महाराव राजा गवर्नमेंट कम्पनी से मदद की दरख्वास्त करेंगे और अगर शर्त के बमुजिब उनको मदद मिले तो वयदा करते हैं कि जिस कद्र फौज खर्च की शरह हिन्दुस्तान के और रईसों से करार पाई है उसी कद्र वह भी देंगे।

ऊपर का अहृदनामह जिसमें पाँच शर्तें है हिज एक्सलेन्सी जनरल जिराडं लेक और महाराव राजा बख्तावरसिंह बहादुर की मुहर और दस्तखत से पहेसर मकाम पर ता० 14 नवम्बर, 1803 ई मुताबिक 26 रजब 1218 हिज्री और 15 माह अगहन सम्वत् 1860 को दोनो फरीक ने लिया दिया और जब ऊपर लिखी शर्तों का अहृदनामह हिज एक्सेलेन्सी दि मोस्ट मार्किस वेलेजली गवर्नर जनरल बहादुर की मोहर और दस्तखत से महाराव राजा को मिलेगा। यह अहृदनामह जिस पर मुहर और दस्तखत हिज एक्सेलेन्सी जनरल लेक के हैं, वापस किया जावेगा।

राजा की मोहर — दस्तख्त—जी० लेक (मुहर)

कम्पनी की मुहर दस्त—वेलेजली।

यह अहृदनामह गवर्नर जनरल इन काउन्सिल ने ता० 19 दिसम्बर, 1803 ई० को तस्दीक किया।

परिशिष्ट "बी"

राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर, क्रमांक 1950 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 72-73 (अलवर) रेकार्ड—

उस सनद का तर्जमह जो जनरल लार्ड लेक साहिब ने राजा सवाई बख्तावरसिंह अलवर वाले को दी—

तमाम मौजूद और आगे को होने वाले मुतसद्दी और आमिल चौधरी कानूनगो जमींदार और काश्तकार परगनो इस्माईलपुर और मुडावर मय तअल्लुका दरबारपुर, रताय, नीमराना, माडन, गुहिलोत, बीजवाड़, सराय, दादरी, लोहारू, बुधवाना, बुदवल नहर इलाके में सुबह शाहजहाँ आबाद के मालुम करे कि अनारबेल अंग्रेज इस्ट इण्डिया कम्पनी और महाराजा राजा सवाई बख्तावरसिंह के दर्मियान दोस्ती पुरानी और पक्की हुई। इस वास्ते इस दोस्ती के साबित और जाहिर करने को जनरल लार्ड हुक्म देते हैं कि ऊपर जिक्र किये हुए जिले बशर्ते मन्जूरी मोस्ट

नोबल गवर्नर जनरल लार्ड वलेजली बहादुर महाराव राजा को उनके खर्च के लिए दिये जाये।

जब मन्जूरी गवर्नर जनरल बहादुर की आयेगी बो दूसरी सनद इस सनद के एवज मे दी जाएगी और यह लौटाई जावेगी।

जब तक दूसरी सनद आये उस वक्त तक के यह सनद महाराव राजा के दखल में।

परगनों की तफसील -

परगनह इसमाइलपुर, मन्डावर, तअल्लुका, रताय, दरबारपुर, नीमराना, बीजवाडा और गुहिलोत और सराय, दादरी, लोहारू, बुधवाना और बुदचल नहर।

तारीख 28 नवम्बर, 1803

मुताबिक 12 शअबार 1218 हिज्री और अगहन सुदी 15

सवत् 1860

दस्तखत
जी० लेक

परिशिष्ट "सो"

राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर, क्रमांक 1590 बस्ता 196 बन्डल 3 पृ० 74-76 (अलवर रेकार्ड)।

उस इकरार नाम का तर्जमह जो राव राजा न 1805 ई० म वकील अहमद बख्श खाँ से किया

मैं अहमद बख्श खाँ उन पूरे इख्तियारात के रु० स जो महाराव राजा सवाई बख्तावरसिंह ने मुझको दिये हैं और अपनी तरफ से इकरार करता है कि एक लाख रुपया सरकार अंग्रेजो को बाबत किले कृष्णगढ मय इलाके और सामान के जो उसमे हो दिया जावगा और परगने तिजारा टपूकडा और कलतूमन जो दादरी बदवनौरा और भावनाकर जबके एवज मे मिले थे। महाराव राजा की मुहर व दस्तख्त से दिये जायेंगे और हमेशा के वास्ते लासवाडी नदी का बन्द जिस कद्र की राजा भरतपुर के मुल्क के फायदा के वास्ते जरूरी होगा खुला रहेगा और महाराव राजा इस इकरारनामा के मुताबिक पूरा अमल करेंगे जब एक इकरारनामा महाराव राजा का तस्दीक किया हुआ आवेगा तो यह कागज वापस होगा।

यह कागज इकरारनामा के तौर आबित समझा जायेगा ता० 21 रजब सन् 1220 हिज्री।

दस्तख्त
अहमद बख्श खाँ की मुहर

तर्जमह सही है—
सी० टी० मुटेकोफ
ऐजेन्ट गवर्नर जनरल (मुहर)

परिशिष्ट "डो"

राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर, क्रमांक 1590 बस्ता 169 बन्डल 3 पृ० 77-78 (अलवर रेकार्ड)।

इकरारनामा महाराव राजा बख्तावरसिंह रईस माचेडी की तरफ से जो ता० 16 जुलाई, 1811 को लिखा गया—

जो कि एकता और दोस्ती पूरी मजबूती के साथ सरकार अँग्रेजो और महाराव राजा सवाई बख्तावरसिंह दरमियान करार पाई है और चूंकि बहुत जरूर है कि इसकी इतला खास व आम को हो इसलिए महाराव राजा अपनी और अपने वारिसो व जानशीनो की तरफ से इकरार करते हैं कि वह हर्गिज किसी और गैर रईस और सरदार से किसी तरह का इकरार या इत्तिफाक अंग्रेजी सरकार की बगैर मर्जी और इतिला के नही करेंगे। इस नियत से यह इकरारनामा महाराव राजा सवाई बख्तावरसिंह की तरफ से तहरीर हुआ।

ता० 16 जुलाई, 1811 ई० मुताबिक 24 जमादिस्सनी सन् 1246 हिज्री और जाहिर हो कि यह अहमदनामह जो दोनो सरकारो के दर्मियान कायम हुआ है किसी तरह उस अहमदनामह को रद्द न करेगा जो पहले जाबित के मुताबिक आपस मे तै हुआ है। बल्कि इससे उसकी और मदद और मजबूती होगी।

दस्तखत—महाराव राजा बख्तावरसिंह

मुहर—महाराव राजा बख्तावरसिंह

परिशिष्ट "ई"

श्यामलदास कृत वीर विनोद भाग 4 पृ० 140।

इकरारनामा महाराजा बन्नेसिंह की तरफ से—

जो कि तिजारा टपूकडा, रताय और मडावर बगैर के जिले परलोकवासी राव राजा बख्तावरसिंह जी को अंग्रेजी सरकार के जनरल लार्ड लेक साहिब की सिफारिश पर इनायत हुए थे। मैं इन जिलो की जमा के मुताबिक अपने भाई राजा बलवन्तसिंह को और उसके वारिशो की हमेशा के लिए आधा नकद और आधा इलाका अंग्रेजी सरकार की हिदायत से मुवाफिक देता हूँ। राजा इलाका और रुपयो का मालिक रहेगा अगर राजा या उसकी औलाद में से केवल लावारिस अन्तकाल करेगा तो इलाका अलवर मे शामिल हो जायेगा और राजा या कोई उसकी औलाद में से किसी गैर को जो उनका सुल्बी ओरस न हो गोद रखेंगे तो ऐसे गोद लिए हुए को मामूली इलाका और रुपया नही दिया जायेगा। जो इलाका राजा को दिया जायेगा वह अंग्रेजी इलाका के पास और मिला हुआ होगा और अंग्रेजी सरकार की हिफाजत मे समझा जायेगा। भाई चारे का बर्ताव व मेरे और राजा मजकूर

दर्मियान कायम और जारी रहेगा और अंग्रेज सरकार मेरी और राजा की तरफ से इस इकरारनामा की तामील की जामीन रहेगी।

ता० माघ सुदी 6 सम्वत् 1882 मुताबिक 14 रज्जब सन् 1241 हिज्री और ता० 11 फरवरी, सन् 1826।

दस्तख्त—सी० टी० मेटकाफ

रेज़ीडेन्ट (मुहर)

गवर्नर जनरल बहादुर ने इसको कौन्सिल के इजलास मे तस्दीक किया। 14 अप्रैल, सन् 1826।

परिशिष्ट "एफ"

अलवर राज्य के शासक

1 राव राजा प्रतापसिंह (1775-1791)
2 राव राजा बख्तावरसिंह (1791-1815)
3 राव राजा बन्नेसिंह (1815-1857)

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

मूल प्रलेख

(अ) भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली—

अंग्रेजी में प्राप्त मूल प्रलेख

फोरिन सीक्रेट कन्सलटेशन : सीक्रेट ब्रान्च

1. फोरिन सीक्रेट कन्सलटेशन	15-6-1778	फाइल न०	1
2. फोरिन सीक्रेट कन्सलटेशन	28-12-1778	फाइल न०	2
3. फोरिन सीक्रेट कन्सलटेशन	119-4-1779	फाइल न०	1
4. फोरिन सीक्रेट कन्सलटेशन	18-4-1787	फाइल न०	1
5. फोरिन सीक्रेट कन्सलटेशन	20-4-1787	फाइल न०	5
6. फोरिन सीक्रेट कन्सलटेशन	11-6-1787	फाइल न०	3
7. फोरिन सीक्रेट कन्सलटेशन	30-6-1787	फाइल न०	22

फोरिन पोलिटिकल कन्सलटेशन

1.	फोरिन पोलिटिकल	कन्शलटेशन	14-4-1826	फाइल न०	33
2.	,,	,,	12-2-1833	,,	12
3.	,,	,,	16-5-1833	,,	12
4.	,,	,,	16-5-1833	,,	13
5.	,,	,,	16-5-1833	,,	14
6.	,,	,,	17-10-1833	,,	16
7.	,,	,,	17-10-1833	,,	18
8.	,,	,,	17-10-1833	,,	19
9.	,,	,,	2-12-1834	,,	43
10.	,,	,,	6-4-1835	,,	30
11.	,,	,,	5-50-1835	,,	49
12.	,,	,,	5-10-1835	,,	50
13.	,,	,,	5-10-1835	,,	51
14.	,,	,,	23-11-1835	,,	14
15.	,,	,,	23-11-1835	,,	15
16.	,,	,,	23-11-1835	,,	16

17.	फोरिन पोलिटिकल कन्सलटेशन	23-11-1835	फाइल न०	18
18.	,, ,	14-3-7836	,,	32
19.	,, ,	14 3-1836	,	33
20	,, ,,	27-6-1836	,,	15
21.	,,	-3-4-1839	,,	40
22	,, ,	3 4-1839	,	41
23	,, ,	3-4-1839	,,	42
24.	,, ,	3-4-1839	,,	43
25	,, ,	3-4-1839	,,	44
26	,, ,	17-8-1840	,,	23
27	,, ,,	17-8-1840	,,	24
28.	,, ,,	9-5-1856	,,	143
29.	,, ,,	25-9-1857	,,	147
30	, ,,	25-9-1857	,,	148
31	,, ,,	25-9-1857	,,	149

(ब) राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर—

हिन्दी और राजस्थानी मे प्राप्त मूल प्रलेख—अलवर शाखा

क्रम सख्या	बीकानेर क्रमांक	बस्ता नं०	बन्डल न०
1	66	9	1
2	70	9	5
3.	71	9	6
4.	72	9	7
5.	73	9	8
6.	132	18	9
7.	133	18	10
8.	134	18	11
9.	137	19	2
10.	139	19	5
11.	144	19	10
12.	148	21	1
13.	157	22	23
14.	157	23	2
15.	168	214	10
16.	180	26	1

क्रम सख्या	वीकानेर क्रमाक	वस्ता न०	वण्डल न०
50	997	136	1
51.	1017	139	1
52	1018	139	2
53.	1058	144	2
54.	1179	162	1
55	1236	172	8
56	1243	172	15
57.	1260	175	1
58.	1478	186	1
59,	1479	187	1
60.	1588	196	1
61	1589	196	2
62	1590	196	3
63.	1591	196	4
64	1592	196	5
65	1599	199	1
66	1621	205	3
67	1648	214	10
68.	1691	219	1
69.	1694	219	4
70.	1695	219	5
71.	1700	219	8
72	1701	219	10
73.	फाइल न० 197 पत्र सख्या 78 अलवर (819-23)		

(स) ख्यातें—

1. जयपुर राज्य की ख्यात—4
2. जोधपुर राज्य की ख्यात भाग 3
3. मारवाड की ख्यात भाग 3, 4
4. राठोडारी ख्यात, भाग 2

(द) 3 रुक्का परवाना तथा बहिया—

1 जोधपुर स्टेटस रेकार्ड खास रुक्का परवाना बही न० 24
2 जोधपुर रेकार्डस हकीकत खाता बही न० 6
3 जोधपुर राज्य की खरीता बही न० 9, 12

4 ड्राफ्ट खरीता बण्डल नं० 12
5 मानसिंह के राज्य की तवारीख
6 हकीकत बही जोधपुर नं० 9
7 हकीकत बही बीकानेर
8 हाथ बही जोधपुर
9 राजस्थान राज्य अभिलेखागार अलवर शाखा
10 अलवर म्यूजियम और अलवर राज्य के अभिलेखागार में प्राप्त मूल साहित्यक कृतियाँ।
11 अलवर राज्य के पुराने जागीरदार घरानों के पास ऐतिहासिक कृतियाँ
12 निजी रेकार्ड
13 साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर
14 सरस्वती लाइब्रेरी गुलाब बाग, उदयपुर

(ग) फारसी रेकार्ड —

1 अन्सारी मुहम्मद अली-खान-तारीख ए मुजफरी
2 कैलेन्डर ऑफ पर्शियन कारेसपोन्डेन्स जिल्द 2-9 तक
3 खैरुउद्दीन—इबरातनामा
4 खानजादा शफउद्दीन अहमद शरफ —मुरक्का ए मेवात
5 ग्रान्ट डफ की तवारीख
6 गुलाम अली—शाह आलमनामा—भाग 3
7. दास हरिचरण—चहार गुलजार ईशुजाई इलियट एण्ड डाउसन जिल्द 8
8 बसावनलाल—अमीरनामा
9 विग्र अनुवादित—फरिश्ता भाग 1
10 मुन्नालाल—तारीख ए शाहआलम
11 मोहनसिंह—बकाया ए होल्कर
12 मुरक्का ए अनवर
13 मेवाती अब्दुल शकुर—तवारीख मवात
14 सरकार यदुनाथ—देहली क्रोनिकल, रघुवीर लाइब्रेरी, सीतामऊ
15 सैय्यद मोहम्मद रिजा—मफतिह उर रियासत

(ख)—फ्रेन्च

1 फादर वेन्डल — एन एकाउन्ट ऑफ दी किंगडम (यदुनाथ सरकार द्वारा अनुवादित अंग्रेजी अनुवाद) रघुवीर लाइब्रेरी, सीतामऊ
2 सरकार यदुनाथ — मैमायर्स आफ रने माद (अंग्रेजी अनुवाद) बंगाल पास्ट एन्ड प्रजेन्ट, अप्रैल-जून 1937 जिल्द 53, भाग 2 क्रम संख्या 106

द्वितीय साधन

(1) हिन्दी—

1	ओझा हीराचन्द गौरीशंकर	जोधपुर राज्य का इतिहास, भाग 2
2	गंगासिंह	यदुवंश का प्रथम भाग 1637-1668
3	गहलोत जगदीशसिंह	राजपूताने का इतिहास, भाग 3
4	गहलोत सुखवीरसिंह	राजस्थान के इतिहास का तिथि क्रम
5	दाधीच रामप्रसाद	महाराजा मानसिंह जोधपुर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
6	नरेन्द्रसिंह	ईश्वरीसिंह का जीवन चरित्र
7	भण्डारी सुखसम्पतिराज	भारत के देशी राज्य जयपुर राज्य खण्ड
8	महता पृथ्वीसिंह	हमारा राजस्थान
9	मिश्रण सूर्यमल्ल	वंश भास्कर जिल्द 7-8
10	रघुवीरसिंह	पूर्व आधुनिक राजस्थान
11	रेऊ विश्वेश्वरनाथ	मारवाड़ का इतिहास भाग 2
12	राणावत मनोहरसिंह	भरतपुर महाराजा जवाहरसिंह जाट
13	वेब कृत	राजपूताना के सिक्के अनुवादक डॉ० मांगीलाल व्यास मयंक
14	श्यामलदास	वीर विनोद जिल्द, 4
15	सरदेसाई	मराठों का नवीन इतिहास भाग 3
16	सरकार यदुनाथ	मुगल साम्राज्य का पतन भाग 1, 2, 3, 4

(2) अंग्रेजी—

1	ओझा	हिस्ट्री ऑफ राजपूताना भाग 4, पार्ट 2
2	एचीसन सी० यू०	ट्रीटीज एंगेजमेन्टस एन्ड सनदस जिल्द 3
3	एस० ओवन	वेलेजली
4	कनिंघम जे० डी०	दि हिस्ट्री ऑफ दी सिक्खस
5	कोल और पोस्टले	आउटलाइन ऑफ ब्रिटिश मिलेटरी हिस्ट्री
6	कानूनगो के० आर०	हिस्ट्री ऑफ जाटस
7	ग्राउज एफ० एस०	ए डिस्ट्रीक्ट मैमोयर्स ऑफ मथुरा द्वितीय संस्करण
8	खड़गावत नाथूराम	राजस्थान रोल इन दि स्टगल ऑफ 1857
9	गुप्ता हरिराम	हिस्ट्री आफ सिक्खस
10	ग्रान्ट डफ	हिस्ट्री ऑफ मराठाज भाग 3
11	गुप्ता पी० सी०	शाह आलम सैकिन्ड एवं हिज कोर्ट
12	टाड कर्नल	एनाल्स एण्ड एन्टीक्यूटीज ऑफ राजस्थान

13 टिक्कीवाल एच० सी० जयपुर एन्ड द लेटर मुगल्स
14 टवीनीज टाम्स ट्रेवल्स इन इण्डिया
15 ठाकुर नरेन्द्रसिंह थर्टी डिसायसिव बेल्टज आॅफ जयपुर
16 डिरोम नरेटिव ऑफ दी कैम्पेन इन इण्डिया 1793 ई० का सस्करण
17 डायरी एन्ड कोरसपोन्डेन्स ऑफ वेलेजली
18 थोरटन गजेटियर आफ टेरीटोरीज अन्डर ईस्ट इण्डिया कम्पनी, जिल्द 1
18 थोम्पसन लाइफ ऑफ चार्ल्स लाड मटकाफ
19 थोन मैंमोयस ऑफ दि बार इन इण्डिया
21 प्रिन्सेप अमीरनामा
22 प्रिन्सेप एच० टी० मैंमोयर्स ऑफ अमीर खाँ
23 परिहार जी० आर० मारवाड एन्ड दी मराठाज 1724-1843
24 पूना रेजीडेन्सी कोरसपोन्डन्स, जिल्द 1, 2, 10, 11 14
25 पेस्टर वार एन्ड स्पोर्ट इन इण्डिया
26 फोर्टेस्क्यू हिस्ट्री आफ दी ब्रिटिश आर्मी भाग 5
27 फ्रेंकलिन मिलेट्री मैंमोयर्स ऑफ जार्ज टामस
28 वेंबरीज तुजुक ए बाबरी
29 वेवरीज कैम्पनमिव हिस्ट्री ऑफ इण्डिया भाग 3
30 बी० एन० बगम सिमरु
31 ब्राउटन टी० डी० लेटर फ्राम मराठा कैम्प
32 वेनर्जी ए० सी० राजपूत स्टेटस एन्ड दी ईस्ट इण्डिया कम्पनी
33 ब्रक पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ दी जयपुर
34 मार्टिन वेलेजली डिस्पेच 1 4
35 महत्ता एम० एन० दि हिन्द राजस्थान
36 मोन्ठ मार्टिन डिस्पेच ऑफ मार्क्विस वेलेजली
37 मेलकम मैंमोयस ऑफ सेन्ट्रल इण्डिया भाग 1
भरतपुर अप टू 1826
38 राम पाण्डे राजपूताना रेजीडेन्सी रेकार्ड लिस्ट
लेटर फ्राम मराठा कैम्प
39 लाला के० एस० टवीन्ट लाइफ आफ दी सल्तनस ।
40 लायल एलफ्रेड राइज ऑफ दी ब्रिटिश डोमिनियमन इन इण्डिया ।

41 शर्मा पद्मजा — महाराजा मानसिंह ऑफ जोधपुर एण्ड हिज टाइम्स।

42 शर्मा एम० एल० — जयपुर राज्य का इतिहास।

43 श्रीवास्तव ए० एल० — अकबर दी ग्रेट भाग 1

44 सरकार जदुनाथ — हिस्ट्री आफ जयपुर स्टेटस (अप्रकाशित रघुवीर लाइब्रेरी, सीताम०)

45 सरकार यदुनाथ — देहली अफेयर्स 1761-1788

46 सरकार यदुनाथ — देहली क्रोनिकल।

47 हबीबुल्लाह ए० बी० एम० — फाउन्डेशन ऑफ मुस्लिम रूल इन इण्डिया।

(3) मराठी—

1 खरे — एतिहासिक लेख सग्रह।

2 ठाकुर वा० वा० होल्कर — शाहीच्या एतिहासची साधने भाग 1, 2।

3 डोंगरे केशवराव बलवन्त — सलेक्शन फार्म चन्द्रचुड रेकार्डस भाग 2।

4 — दिल्ली के मराठा दूतों की डाक।

5 पारसनीस डी० बी० — महेश्वर दरबागचीन बातामि पेट्रर्न भाग 1, 2।

6 पारसनीस डी० बी० — हिल्ली यथिल मराठा यान्ची राजकरणे भाग 1 2।

7 पारसनीस डी० बी० — कलेक्शन आफ अखबरात।

8 पारसनीस डी० बी० — जोधपुर येथील।

9 पारसनीस डी० बी० — एतिहासिक स्फुट लेख।

10 मन्डाल बी० आई० एस० — चन्द्रचूड दफ्तर।

11 राजवाडे कृत — मराठा यान्ची एतिहासिकची साधने।

12 सरदेसाई जी० एस० — सलेक्सन्स फ्राम दी पेशवा दफ्तर।

13 सरदेसाई जी० एस० — एतिहासिक पत्र व्यवहार।

14 सरदेसाई जी० एस० — हिगणें दफ्तर।

15 सरदेसाई जी० एस० — हिस्टोरिकल पेपर्स रिलेटिंग टू महादजी सिन्धिया।

16 सरदेसाई जी० एस० — महादजी सिन्धे यान्ची भाग 2।

17 — हिस्टोरिकल पेपर्स आफ सिन्धियाज आफ ग्वालियर भाग 2।

(4) गजेटियर्स मेगजीन्स और जर्नल्स—

1 आगरा एण्ड कलकत्ता गजटियर भाग 2, (1942 ई० का सस्करण)
2 अरावली पत्रिका अगस्त, अक्टूबर 1945, अक पृ० 7।
3 एटकिन्सदन का नौर्थ वेस्ट फ्रन्टीयर प्रोविन्सेज गजेटियर।
4 कलकत्ता गजट बगाल जैनल इन्डिया गजट।
5 जनल ऑफ राजस्थान हिस्टोरिकल इन्सटीट्यूट।
6 प्रोसिडिंग्स ऑफ इन्डियन हिस्ट्री काग्रेस।
7. दिल्ली डिस्ट्रिक्ट गजेटियर।
8 पाउलेट कृत गजेटियर ऑफ अलवर।
9 मायाराम—राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर अलवर।
10 राजपूताना गजेटियर 1880।
11 स्टेटिकल एब्सट्रेक्ट राजस्थान स्पेशल नवम्बर 1962 (डायरेक्टर ऑफ इकोनोमिक्स एन्ड स्टेटिस्टिकल राजस्थान, जयपुर)।

लेखक परिचय

जन्म— 4 जुलाई, 1949, डूंगला जिला चितोड़गढ़ (राजस्थान)।

शिक्षा— बी० ए० 1972 प्रथम श्रेणी उदयपुर विश्वविद्यालय, एम० ए० (इतिहास) 1974, प्रथम श्रेणी (स्वर्ण पदक विजेता) उदयपुर विश्वविद्यालय, उदयपुर।
पी० एच० डी० 1978 उदयपुर विश्वविद्यालय, उदयपुर।

सम्प्रति—पिछले छ वर्षों से अध्ययन एव अध्यापन कार्य मे रत हैं। वर्तमान मे स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिरोही (राजस्थान) मे इतिहास विभाग के प्राध्यापक के रूप मे कार्य कर रहे हैं। अब लेखक "विश्व का इतिहास" नामक पुस्तक लिख रहा है जो प्रकाशनाधीन है।